स्थापित–2018 शीर्षक पंजीकरण सं.– UPHIN48816

प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट फिरोजाबाद®

द्वारा प्रकाशित जनपद की प्रथम साहित्य की पंजीकृत

कनक काव्य कुसुम वार्षिक पत्रिका

संरक्षक मण्डल–
श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा, डॉ. अशोक चक्रधर
प्रो. सोम ठाकुर, श्रीमती ममता कालिया
डॉ. हरिओम पवार, डॉ. विष्णु सक्सैना
डॉ. ओमपाल सिंह 'निडर', डॉ. प्रभाष्कर राय

मुख्य निर्देशक–
साहित्य भूषण डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा 'यायावर'

परामर्श समिति–
डॉ. सर्वेश अस्थाना, श्री यशपाल 'यश'
श्री गजेन्द्र प्रियांशू, श्री गौरव चौहान
श्री मनवीर 'मधुर', श्री कमलेश शर्मा
श्री अभिषेक मित्तल 'क्रान्ति'

मुख्य सम्पादक–
डॉ. अजिर बिहारी चौबे

सम्पादक–
कृष्ण कुमार 'कनक'

सह–सम्पादक–
श्री पूरनचन्द्र गुप्ता, डॉ. अंजू गोयल
श्री गौरव 'गाफिल', श्री सुनील सुकुमार
श्री प्रियाचरण उपाध्याय,
श्री हर्षवर्धन 'सुधांशु',
श्री प्रवीन कुमार पाण्डेय 'प्रज्ञार्थू'

विशेष सहयोगी–
प्रशान्त वशिष्ठ 'शब्द सज्जा'

सम्पादकीय कार्यालय–
'कनक–निकुंज', ग्राम व पो.– गुंदाऊ,
ठार मुरली नगर, थाना– लाइनपार,
फिरोजाबाद–283 203 (उ.प्र.)
मो.– +91–7017646795
e-mail : kanakkavya@gmail.com

समस्त पद अवैतनिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी भाव तथा विचार लेखकों के स्वयं के हैं जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र फिरोजाबाद ही होगा। © सर्वाधिकार सुरक्षित, सम्पादक की बिना अनुमति के किसी भी रचना को अन्यत्र प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

अनुक्रमणिका

1.	मुख्य सम्पादक की कलम से	3
2.	सम्पादकीय, सह–सम्पादकीय	4
3.	पत्रों में कनक काव्य कुसुम– कनक	5–7
4.	आमने–सामने (भेंट वार्ता)	8–10
5.	फिरोजाबादी बोधा–तथ्यों के आलोक में	10–14
6.	श्री गुरुदत्त अग्रवाल (संस्मरण)	14–15
7.	विस्मृतियों में डूबा एक नाम	16–17
8.	काव्य खण्ड शिवराम सिंह 'शान्ति', कृष्णकुमार 'कनक', डॉ. अशोक चक्रधर, डा. विष्णु सक्सैना, डॉ. अंजू गोयल, डॉ. शिवओम अम्बर, डॉ. राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर', डॉ. कुमार विश्वास, डॉ. रुचि चतुर्वेदी, प्रवीन 'प्रज्ञार्थू', सर्वेश अस्थाना, शारदा प्रसाद तिवारी 'पारस', अशोक चारण, डॉ. कुअर बेचैन, विजय राठौर, ऋतेश मुकेश 'समुन', उमा निर्झर दीक्षित, अशोक बाजपेयी, रविपाल 'खामोश', कन्हैया साहू 'अमित', अवनीश त्रिवेदी 'अभय', डॉ. अजय 'अतुल', पूरनचन्द्र गुप्ता, डॉ. निधि गुप्ता, सूबेदार पाण्डेय, डॉ. बीना सिंह, सोनी 'सुगन्धा', गोविन्द अनुज, अनुराधा रावत, पूजा बंसल, देवेन्द्र कुमार मिश्रा, डॉ. अजिर बिहारी चौबे, कमल राजपूत 'कमल', चाँद शेरी, राकेश पाण्डेय, डॉ. अनिल गहलौत, भगवानदास जैन, गीता विश्वकर्मा, संतोषकुमार सिंह, सरिता 'कोहिनूर', शैलेन्द्र 'असीम', सुशील 'सरित', जगदीश रघुवंशी, दिनकर पाठक, सरोज बघेल, कु. अपराजिता, अर्चित वशिष्ठ	18–44
9.	गद्य खण्ड डॉ. शिवशंकर यजुर्वेदी, कनक, प्रवल प्रताप सिंह, सीताराम गुप्ता, डॉ. अजिर बिहारी चौबे, सचिन बघेल, डॉ. अजीब अंजुम, डा. महेश 'आलोक', डॉ. चन्द्रवीर जैन, डॉ. श्री प्रकाश यादव	45–66
10.	सम्मान विवरण	67–68
11.	राष्ट्रस्तरीय सम्मान विज्ञप्ति	68
14.	मुक्तामणि	69
12.	शुभकामना संदेश	70
13.	आय–व्यय विवरण	71–72

प्रकाशक– प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट, फिरोजाबाद
मुद्रक– निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 37, 'शिवराम कृपा', विष्णु कॉलौनी, शाहगंज, आगरा, मो.– 9458009531–38

पत्रिका का शुल्क	–	50/– रु. प्रति अंक
पत्रिका हेतु सहयोग	–	1100/– रु. आजीवन
ट्रस्ट संरक्षक शुल्क	–	11000/– रु.
ट्रस्ट आजीवन सदस्य शुल्क	–	5100/– रु.
ट्रस्ट सामान्य सदस्य शुल्क	–	2100/– रु.
ट्रस्ट में ट्रस्टी शुल्क	–	51000/– रु.

निर्देश– अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें– 7017646795

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

स्मृतियाँ

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

तुम्हें याद हो के ना याद हो

मुख्य सम्पादक की कलम से

मुझे याद है– आज से लगभग 25–30 वर्ष पूर्व बहुत सी बड़ी मासिक, पाक्षिक और साप्ताहिक पत्रिकायें घरों की शोभा और शान हुआ करती थी– कादम्बिनी, सारिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्म युग, सरिता, जाह्नवी, रीडर्स डाइजेस्ट, माधुरी, फिल्म फेयर, दिनमान और ब्लिट्ज, नई जमीन, पाञ्चजन्य जैसे पत्र आधुनिकता, बाजारवाद और सूचना क्रान्ति के दौर में या तो धीरे–धीरे दम तोड़ गए या दम तोड़ते नजर आ रहे हैं। पत्र–पत्रिकाओं का स्थान मोबाइल ने तथा 'ज्ञान का बघारा' देने वाले मैसेजेज ने ले लिया, पर पत्रिका पढ़ने और सहेजकर रखने का आनंद तो वही महसूस कर सकता है जिसने इसे सहेजा हो। उनकी कटिंग किसी फाइल में सुरक्षित रखी हो। उस पसंदीदा रचना को बार–बार रामायण की सिद्ध चौपाई सा बांचा हो। मेरे पिताश्री पढ़ने–पढ़ाने के बड़े शौकीन थे। घर पर कई पत्रिकायें आती, बच्चों के लिए 'पराग', नंदन, चंपक, चन्दा मामा और बडे सम्राट जैसी पत्रिकायें आती थी। पत्रिकायें जब पढ़ ली जाती तो नई पत्रिका का इंतजार प्रारम्भ हो जाता। हम साईकिल लेकर 'तिलक भाई साहब' के पास पहुँच जाते। पूछते कि 'पराग' और नंदन कहाँ है? कितनी उत्कण्ठा कितना आनन्द था उस इंतजार में ... और जब खिड़की से पत्रिकाओं के गिरने की मधुरिम झंकार कानों में गूँजती तो हम सब दौड़कर बैठक में पहुँच जाते...पत्रिका पलटने लगते ... कितना अद्भुत, आनंदपूर्ण और अविस्मरणीय था वो दौर ...

मुझे याद है कि छोटे–छोटे शहरों, कस्बों और गाँवों के कवि/लेखक (तब पत्रकार शब्द इतना ग्लैमरस नहीं था) अपनी छोटी–छोटी पत्रिकाओं को छपवाते थे और वे हाट/बाजारों में फड़ पर बिका करती और जन–जन तक पहुँचती। लोग आख्यान आल्हा, ढोला जैसी रचनायें गाते ...। इन छोटे स्थानों से स्थानीय समाचार–पत्र भी निकलते थे जो जन आकांक्षाओं और भावनाओं, नवोदित कवियों/लेखकों का सच्चा प्रतिनिधित्व करते थे। जब बड़े–बड़े समाचार पत्रों ने स्थानीय संस्करण निकालना प्रारम्भ किये तो ऐसे सैकड़ों–हजारों छोटे समाचार पत्र समाप्त प्राय (विलुप्त कहूँ तो अतिशयोक्ति न होगी) हो गए।

मुझे याद है जब पिछले साल कनक जी मेरे पास आए... और बोले.... गुरु एक पत्रिका छापना है... एक व्यंग्य खण्ड का संपादन आपको करना है .. . तो लगा कि इस दौर में 'पत्रिका'!! . ...पर लगातार कार्य करना...। सतत् साधना में लगे रहना... यही तो 'कनक' है। पत्रिका निकालने का दुरूह और दुष्कर कार्य इस गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा और बाजारवाद के दौर में और अधिक जटिल है... पर' जिसका टीचर जुनून हो उसे किसी? स्कूल में जाने की जरूरत नहीं होती।' अब 'कनक काव्य कुसुम' का द्वितीय पुष्प सौंपते हुए मुझे बड़े गर्व, संतोष और आनन्द का अनुभव हो रहा है... ऐसे सैकड़ों पुष्प हम आपके हाथों में सौंपे ... यही कामना है ... आप अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें ... कुछ कमियाँ रह गई होंगी ... पर हम लगातार इन्हें ठीक करते रहेंगे... पत्रिका श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम होती जायेगी...। हम विश्वास दिलाते हैं ..। और अंत में ... बेगम अख्तर की गजल– 'वो जो हम में तुम में करार था, तुम्हें याद होके ना याद हो, वो ही यानि वादा निबाह का तुम्हें याद हो के ना याद हो' से अपनी बात पूरी करता हूँ... मुझे विश्वास है कि आप हमें याद रखेंगे ... सादर, साभार ...

आपका अपना ...

डा. अजिर बिहारी चौबे
एसोसिएट प्रोफेसर– मनोविज्ञान
एस.आर.के. महाविद्यालय
फिरोजाबाद, मो.– 9412426341

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

सम्पादकीय

आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि 'कनक काव्य कुसुम' का द्वितीय अंक अपने हाथों में पाकर आप हर्षित तो हुए ही होंगे क्योंकि आपकी रचना को पत्रिका में स्थान देने में मैं सफल हुआ हूँ और वे लोग गालियाँ भी अपनी मुख मुद्रिका के नगीने में जड़ने लगे होंगे जिनकी रचना को स्थान नहीं मिला या जान बूझकर स्थान नहीं दिया गया है तो एक बात तो स्पष्ट रूप से समझ ली जाय कि पत्रिका साहित्य को समर्पित है कचरे को नहीं। तब इसका अर्थ यह बिल्कुल न लगाया जाय कि जो कुछ नहीं छपा वह सब कचरा है। पत्रिका में स्थानाभाव के कारण कुछेक रचनाओं को अग्रिम अंक हेतु सुरक्षित कर लिया गया है। अतः जिन रचनाकारों की रचना पत्रिका में नहीं छप सकी। वे अपनी गालियों को अग्रिम अंक तक रोककर रखें। न छपे तो जी भरके गालियाँ उछालें क्योंकि रचना चाहे जैसी भी रही हो रचनाकार ने भेजने में जो श्रम तथा धन व्यय किया उसके लिए उसका इतना अधिकार तो बनात ही है कि मुझे गालियाँ सुनाए।

मैं सभी सहयोगियों, विज्ञापन-दाताओं, शुभचिन्तकों आदि का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। उन्हीं के बल पर साहित्य का यह अनुष्ठान संचालित कर पा रहा हूँ। विशेष आभार उन सभी का जिन्होंने पत्रिका पढ़कर अपनी प्रतिक्रियायें भेजी। यूँ तो मैं हर उस व्यक्ति का आभार हूँ जो किसी न किसी रूप में मेरा सहयोग दे रहा है किन्तु पूरनचन्द्र गुप्ता का विशेष आभार प्रकट करना चाहता हूँ क्योंकि वे ही हैं जोकि इस पत्रिका को आपके हाथों तक पहुँचाने का दुरूह कार्य रात-रात भर जागकर करते हैं।

आपका स्नेहाकांक्षी-

कृष्ण कुमार 'कनक'

मो.- 7017646795

सह-सम्पादकीय

बन्धुओं ! 'कनक काव्य कुसुम' पत्रिका का द्वितीय अंक आपके कर कमलों में पहुँचता देखकर मन को बड़ा आनन्द का अनुभव हो रहा है। पत्रिका के बारे में सोचना और करना हमारे कृष्ण कुमार 'कनक' की एक दीवानगी है जुनून है, जो यह साबित करता है कि यदि इन्सान चाहे और मन में ठान ले तो क्या नहीं हो सकता और इसी दीवानगी का परिणाम है जो यह सब हो सका है।

प्रथम अंक बहुत ही शानदार रहा। इसकी पुष्टि अनेक पाठकों के पत्रों के द्वारा होती है जो इस अंक में छापे गये हैं। 'गीत प्रिया' के सम्पादक भाई यजुर्वेदी जी ने तो पत्रिका की पूरी समीक्षा ही कर दी जो इस अंक में छपी है। भाई शिवशंकर यजुर्वेदी जी को हार्दिक धन्यवाद।

जो लेखक होता है वह अपनी रचना का स्वयं ही सम्पादक भी होता है। इस लिहाज से बाकी तो केवल पढ़ना भर ही होता है। अंक में विद्वान निर्णायकों द्वारा सभी समीक्षायें पठनीय हैं। संस्मरणात्मक रेखा चित्र द्वारा डा. अजीव अंजुम, जीवन में विजेता होने के लिए मेडल अधिक जरूरी नहीं - सीताराम गुप्ता, फिरोजाबादी बोधा तथ्यों के आलोक में- साहित्य भूषण डा. राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी के लेखों के अतिरिक्त अन्य भी रोचक सामिग्री है। पत्रिका में नये कवियों एवं लेखकों को अवसर दिया गया है और यही इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' ने पद्मभूषण दादा बनारसी दास चतुर्वेदी को अपने छुटभैय्ये साहित्यकारों को आगे लाने के प्रयास पर एक कविता लिखकर भेंट की थी जो यह है- चाहे कोई फसल उगा ले, तू जलधार बहाता चल, जिसका भी घर चमक उठे, तू मुक्त प्रकाश लुटाता चल।

हमारी पत्रिका 'कनक काव्य कुसुम' का हिन्दी की सेवा के साथ-साथ यह भी एक उद्देश्य है।

आपका स्नेहाकांक्षी-

- पूरनचन्द्र गुप्ता

सह सम्पादक

मो.- 9997181967

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पत्रों में कनक काव्य कुसुम

पं. केसरी नाथ त्रिपाठी
राज्यपाल पश्चिम बंगाल
सम्पर्क–03322001641

मान्यवर,
श्री कृष्ण कुमार 'कनक'
प्रबन्धक–प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट, फिरोजाबाद

आपका आमंत्रण पत्र मिला, कार्यक्रम का विवरण एवं योजना पढ़कर हर्ष हुआ। आपके द्वारा साहित्य जगत में नया कीर्तिमान स्थापित करने वाली संस्था का संचालन किया जा रहा है। मेरा बहुत मन था कि मैं सुहाग नगरी फिरोजाबाद आता किन्तु 2 जुलाई 2019 को मैं पहले से ही कलकत्ता विश्व विद्यालय के कार्यक्रम में स्वीकृति दे चुका हूँ।

फिरोजाबाद न आ पाने के कष्ट को ह्रदय में रखकर मैं खुले मन से आपके हिन्दी सेवी ट्रस्ट को अनन्त शुभकामनायें देता हूँ, साथ ही फिरोजाबाद के साहित्यिक गौरव को देशव्यापी बनाने के उद्देश्य से प्रकाशित की जा रही प्रथम पूर्ण साहित्यिक पत्रिका 'कनक काव्य कुसुम' की सफलता एवं यशस्वी भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ. सूरज मृदुल
क्यू–9, मॉडल टाउन–1,
दिल्ली–110009

आदरणीय,
श्री कृष्णकुमार कनक जी

आशा है आप कुशल पूर्वक होंगे। मैं आपके 'प्रज्ञा हिन्दी संस्थान ट्रस्ट' का नाम बहुत सुना है। यह ट्रस्ट लेखक को हमेशा प्रोत्साहित करती है, जिससे लेखन को आत्मबल और आगे लिखने की क्षमता बढ़ती है इसलिए मैं अपनी कुछ पुस्तक आपके पास भेज रहा हूँ। मेरा परिचय यह है कि मैं एक लेखक हूँ। मैंने हिन्दी भाषा की लगभग हर विद्या में रचना लिखी है। मेरी अब तक ढ़ाई दर्जन से भी ज्यादा पुस्तक प्रकाशित हो चुकी हैं। यह सब मेरे सह्रदय पाठक के कारण ही सम्भव हो सका है। मेरी हर पुस्तक पर मेरे पाठक की अपनी क्रिया–प्रतिक्रिया लिखी है तभी तो मुझे लिखने–पढ़ने का प्रोत्साहन और बल मिलता है जिससे मैं लिख सकने में सक्षम हुआ हूँ।

इन्हीं कारणों से आज देश–विदेश के एक सौ से भी ज्यादा विश्व विद्यालय के लाइब्रेरी में मेरी पुस्तक संग्रहित है जहाँ पाठक पुस्तक पढ़कर अपना मनोरंजन, पी.एच.डी. एवं एम फिल. को तैयारी कर डॉक्टरेट से सम्मानित होते हैं। यह हमारे लिए एक गर्व की बात है।

आपकी संस्था काफी प्रसिद्ध है इसलिए मैं आपके संस्था के लाइब्रेरी हेतु अपनी पुस्तक 'डोनेट' कर रहा हूँ ताकि पाठक इससे लाभान्वित हो सके।

कुँवर बी.एस. विद्रोही
पेंटर, कवि, स्वतंत्र पत्रकार
ग्वालियर

आदरणीय,
श्री कृष्णकुमार कनक जी
सादर वंदे मातरम्, नमस्कार!

वार्षिक पत्रिका 'कनक काव्य कुसुम' का प्रथम अंक प्राप्त हुआ, पाकर अच्छा लगा। सचमुच साहित्य जगत में पत्रिका नित नये सोपान तय करेगी, ऐसी हार्दिक इच्छा है।

आकर्षक कवर पृष्ठ सहित नवोदित नामचीन साहित्य जगत के स्वर्ण स्तम्भ साहित्यकारों के सृजन को शामिल किया यह सराहनीय है। हम सब उनके साथ कुछ नया सीखेंगे। कुल मिलाकर पत्रिका संग्रहणीय है। हाँ एक कॉलम पाठक प्रतिक्रिया का अवश्य आरम्भ होना चाहिए, ताकि सुधि पाठकों की प्रतिक्रिया आपको मिलती रहे।

आपकी श्रेष्ठ संपादन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं, शेष आगामी अंक में ...
धन्यवाद!

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
संपादक– सहकार पत्रिका
साहित्य मण्डप, चन्द्रलोक कॉलौनी
शहजादपुर, अकबरपुर,
अम्बेडकर नगर (उ.प्र.)

प्रतिष्ठा में,
श्री कृष्ण कुमार 'कनक'

आपके यशस्वी संपादन में प्रकाशित

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

'कनक काव्य कुसुम' का प्रथम अंक आया था, जिस पर अपना 'अभिमत' और अगले अंक के लिए रचना भेज दी थी, मिली होगी।

आपके समग्र साहित्यिक अनुष्ठान के लिए मेरी हार्दिक सद्भावनाएं सदैव आपके साथ हैं। इति, नमस्कार ...

....

मंगत रवीन्द्र

शा.उ.मा.शा. कापन

अकलतरा, जि. जांजगीर, चाम्पा, छत्तीसगढ़– 495 552

आदरणीय,

सम्पादक महोदय,

कुशलता की अभिकामना में .....!

आज ही प्रेषित 'कनक काव्य कुसुम' अंक–1, बड़ी प्रफुल्लता में हस्तगत हुआ स्मरण के लिए कोटिशः बधाईयाँ ....। सम्पादक मण्डल के सभी सम्माननीय सदस्यों/ साहित्यकारों/ मनीषियों को सादर नमन ! आद्योपात पठनोपरान्त शब्दों/भावों के प्रवाह में मन गद्‌गद् हो गया। पत्रिका से सम्बद्ध सभी मनीषियों के विचार अनुकरणीय एवं सराहनीय है। गद्य एवं पद्य के साथ बीच–बीच में सूक्तियों की चाँदनी बड़ी सुहानी है। कविता के सरस शब्दों का गूंथन मानो इन्द्र धनुष की छटा सा प्रतीत हुआ। सभी विद्वानों की वाणी, शब्द गूंथन में सरस है। मैं उन वरेण्य, उद्‌भट्ट विद्वानों की विद्‌वता का नमन करता हूँ।

पत्रिका को वार्षिक के बजाय यदि मासिक द्विमासिक रखा जाये तो और बेहतर होगा चूंकि 1 साल की प्रतीक्षा असहनीय होती है। खैर संस्था की व्यवस्था श्रेष्ठ मानी जाती है। समय मिलते ही सदस्यता राशि एवं कुछ रचनाएं सादर प्रेषित करने की कोशिश करूँगा, शेष परम उत्तम ....

....

डॉ. प्रमोद कुमार श्रोत्रिय

निकट सरस्वती सदन,

टकाना रोड, पिथौरागढ़–262501

(उत्तराखण्ड)

महोदय,

सादर अभिवादन !

शिष्टाचारोपरान्त समाचार सूच्य है कि आपकी सम्मानित वार्षिक पत्रिका 'कनक काव्य कुसुम' वर्ष–1, अंक–1, वि.सं. 2076 के पृ.सं. 69 पर प्रकाशित विज्ञप्ति– स्व. श्री गंगाशरण मित्तल स्मृति राष्ट्र–स्तरीय सम्मान समारोह 2020 के क्र.सं. 8 स्व. संग्राम सेनानी दादा भूदान श्री श्याम बिहारी चौबे स्मृति 'शोधश्री सम्मान' (शोध हेतु) के संदर्भ में सम्मान हेतु अपने शोध ग्रन्थ (अप्रकाशित) 'विदुरनीति और भीष्मगीता का तुलनात्मक अध्ययन' की छाया प्रति (फोटो स्टेट) प्रेषित कर रहा हूँ।

विगत् वर्ष मैंने खण्डकाव्य'नावा कन्या', गन्धर्व कन्या, सम्मान हेतु (2019) प्रेषित किये थे।

कृपया प्राप्ति स्वीकार कर हमें सूचित करने की कृपा करें। एतदर्थ आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद ....

सुरेश चन्द्र सर्वहारा

3–एफ–22, विज्ञान नगर

कोटा– 324 005 (राजस्थान)

परम आदरणीय 'कनक' साहब

सादर अभिवादन !

'कनक काव्य कुसुम' पत्रिका का प्रथम वर्ष का प्रथम अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक आभार। आपका यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। इससे हिन्दी के प्रचार–प्रसार के साथ ही फिरोजाबाद की गौरवशाली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत को संजोने में सहयोग मिलेगा।

पत्रिका का स्तर अच्छा है। समय के साथ–साथ इसमें और निखार आता जाएगा। इस अंक में गद्य और पद्य दोनों की रचनाएं अच्छी लगी। व्यंग्य रचनाएं भी मन को मोहती हैं।

विभिन्न सम्मानों को प्रदान करने में निर्णायकों के औचित्य प्रतिपादन को भी प्रकाशित किया गया है, इससे पारदर्शिता और निष्पक्षता का पता चलता है और पुरुस्कारों की गुणवत्ता बनी रहती है। सम्मानित होने वाले रचनाकारों का सचित्र विवरण निश्चित रूप से उनको गौरव की अनुभूति कराएगा।

महोदय, विकलांगता के कारण बाहर आने–जाने में असमर्थता रहती है। अतः मैं किसी साहित्यिक सम्मान के लिए विज्ञप्ति नहीं भेजता हूँ।

नवीन प्रकाशित काव्य कृति 'धुन्ध धुआँ और धूप' अवलोकनार्थ प्रेषित है। आशा है पसन्द आएगी। एक कविता भी सादर संलग्न है। अच्छी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

लगे तो प्रकाशन का अवसर प्रदान कीजिए। सभी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ ...

प्रो. भगवानदास जैन
एम.ए. साहित्य रत्न
पूर्व अध्यापक, हिन्दी विभाग
सरदार बल्लभ भाई आर्ट्स कॉलेज
अहमदाबाद

आदरणीय बन्धुवर,
सादर नमस्कार !

अत्र कुशलं तत्रास्तु ! आपकी वार्षिक पत्रिका 'कनक काव्य कुसुम' यथा समय प्राप्त। अंकस्थ तीन खण्डों के माध्यम से आपने गद्य, काव्य एवं व्यंग्य सम्बन्धी उत्कृष्ट सामग्री प्रस्तुत की है। प्रतिष्ठित एवं नवोदित दोनों प्रकार के रचनाकारों की रचनाएं पढ़कर मन प्राण आनंद विभोर हो गए।

यह जानकर अतिशय हर्ष व संतोष हुआ कि फिरोजाबाद की भूमि कलमकारों की दृष्टि से भी पर्याप्त उर्वर है। यद्यपि पत्रिका अभी शैशवावस्था में ही है किन्तु यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि 'होनहार विरवान के होत चीकने पात'। पुनश्च, जिस पत्रिका के निर्देशक अखिल भारतीय स्तर के शीर्षस्थ साहित्यकार एवं मूर्द्धन्य कवि श्रद्धेय डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' हों, उसका भविष्य तो निर्विवादतः उज्ज्वल ही होगा। काश पत्रिका त्रैमासिक होती! खैर, आपके संपादकत्व में 'कनक काव्य कुसुम' चिरंजीवी एवं निरंतर यशस्वी हो, यही मंगलकामना एवं ईश्वर से प्रार्थना ! इत्यलम् ! शुभमस्तु !

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'
ब्रजलोक साहित्य–कला–संस्कृति अकादमी एवं ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय, ग्राम– रिहावली, डाक– तारौली गूजर, फतेहाबाद (आगरा)

आदरणीय,
सम्पादक महोदय
(कनक काव्य कुसुम)
सादर प्रणाम ....

पुस्तकालय पते पर पत्रिका का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। यह प्रथम अंक ही इतना सुन्दर है कि बड़ी–बड़ी पत्रिकाएं भी सरमा जाये, आपकी टीम ने कड़ी मेहनत से उक्त अंक तैयार किया है। श्रेष्ठ सामग्री से लबालब भरा है प्रथम अंक .... हम अन्दाजा लगा सकते हैं कि पत्रिका भविष्य में फिरोजाबाद जनपद को एक नई, एक लगत पहचान दिलाने में अवश्य कामयाब होगी। आपका प्रयास बहुत ही काबिले तारीफ है। हमारी तरफ से कोटिशः हार्दिक बधाई स्वीकारें ... सधन्यवाद !

आर. एस. यादव भाई
28, प्रधान मंत्री सचिवालय
अपार्टमेण्ट, विकासपुरी,
नई दिल्ली–110018

आदरणीय,
कवि श्री यादव जी,

समस्त परिवार सदस्य एवं मित्र मण्डली को रंगों का त्यौहार होली पर्व शुभ व मंगलमय हो।

मेरी आयु तो अब 4/6 को 90 को होने जा रही है, ईश्वर कृपा से। पर मैं स्मार्टफोन नहीं चला पाता हूँ और नाही एसएमएस भेज पाता और नाही उसमें नया नाम फीड या गलती सुधार पाता हूँ। इस उम्र में यह सब कुछ सीख पाना बहुत कठिन सा लगता है। आपने एसएमएस द्वारा अपना पता दिया था पर मेरी समझ में मैं उसे ठीककर अच्छी तरह नहीं नोट कर पाया हूँ। यदि आप कृपा करके हिन्दी व अंग्रेजी में एक बार पूरा पता पत्र में लिख देने का कष्ट कर सकेंगे तो बड़ी कृपा होगी। मोबाइल फोन के आ जाने से अब लोगबाग पत्र लिखना भूल ही गये हैं और हमारी सरकार भी बुक पोस्ट और साधारण डाक चिट्ठियों की भी कोई सावधानी से डिलीवरी नहीं करता है। वह आजकल केवल स्पीड पोस्ट और रजिस्टर्ड डाक की जिम्मेदारी संभालती है बस। मैंने आपको 'मित्र संगम' मासिक पत्रिका की नवीनतम अंक की एक प्रति डाक द्वारा भेजी थी। शायद मिल गई होगी।

सभी पाठकों से आग्रह है
कि इसी प्रकार अपनी
प्रतिक्रिया प्रदान कर हमें
अनुग्रहीत करते रहे ...
– सम्पादक

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

आमने-सामने भेटवार्ता

प्रस्तुत भेंट वार्ता 12 फरवरी 2020 बुधवार को फिरोजाबाद जनपद की मुख्य विकास अधिकारी आई.ए.एस. श्रीमती नेहा जैन के साथ उनके कार्यालय में मेरे द्वारा लिए गए साक्षात्कार के रूप में प्रस्तुत है।

कनक– नमस्कार दीदी, मैं हमारी पत्रिका 'कनक काव्य कुसुम' हेतु आपका साक्षात्कार लेना चाहता हूँ क्या आपकी अनुमति है?

नेहा जी– मेरा नाम नेहा जैन है जीवन के प्रारम्भिक 20 वर्ष कानपुर में बीते। कानपुर मेरा पैत्रक आवास है।12वीं तक की शिक्षा भी वहीं हुई।

कनक– आपका पारिवारिक परिवेश कैसा था?

नेहा जी– हम संयुक्त परिवार में रहते थे। दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई, हम सब साथ ही रहते थे। भाई बहन भी। अब सब अलग–अलग है, पढ़ाई के सिलसिले में, और भी कई कारण हैं।

कनक– परिवार में आप सबसे अधिक प्रभावित किससे थे?

नेहाजी– मेरे ताऊजी ने आई.आई.टी. कानपुर से कैमिकल इंजीनियरिंग किया, मास्टर यू.एस.ए. में किया। वे अब वही बस गये है। वहाँ उनका खुद का व्यवसाय है। 40 से अधिक कैमिकल के क्षेत्र में उनके नाम पर यू.एस.ए. के उत्पादों के पेटेन्ट हैं। वे मेरे आदर्श थे। मैं सदैव उनके अंकों से अपने अंकों की तुलना करती थी। मैं सबसे बड़ी हूँ। बहिन 5 साल और भाई 10 साल छोटा है। सबके आदर्श ताऊजी ही रहे।

कनक– आपकी प्रारम्भिक आकांक्षा किस क्षेत्र में कैरियर बनाने की रही।

नेहा जी– जब कक्षा 4 में कम्प्यूटर पढ़ाया गया तो लगा कि ये तो कुछ नया है फिर बुआ की बेटी से भी प्रेरणा मिली तो निश्चय किया कि कम्प्यूटर के क्षेत्र में ही कैरियर सैट करना है। मैं बचपन में ही जटिल से जटिल कम्प्यूटर प्रोग्राम सीख गई थी। कम्प्यूटर इंजीनियरिंग करके एक प्राईवेट कम्पनी में 4 साल तक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के तौर पर नौकरी की।

कनक– विद्यार्थी जीवन की कोई ऐसी घटना जो आपके लिए अविस्मरणीय रही हो?

नेहा जी– घटनायें तो बहुत है... परन्तु एक बार की बात है मेरे मैकेनिकल के शिक्षक शैलेश जी को पैर में काफी चोट थी फिर भी वे पढ़ाने आये। एक साथी शिक्षक ने कहा आप रहने दो, मैं पढ़ाऊँगा, तो उनसे मना कर दिया कि मैं ही पढ़ाऊँगा, तो मुझे लगा कि अपने काम के प्रति इस प्रकार का समर्पण होना चाहिए। कठिनाई हमारी है, उससे हमारा काम प्रभावित नहीं होना चाहिए।

कनक– प्रशासनिक सेवा में आने का विचार मन में कब और कैसे आया?

नेहा जी– जब मैं बैंगलोर में जॉब कर रही थी। तब बाकी सब तो ठीक था, पर मैं आम जन जीवन से दूर हो गई थी। मुझे एक ही जगह ठहरे रहने से ऊब हो जाती है तो लगा कि प्रशासनिक सेवा ही ऐसा माध्यम है जिससे सीधे जनता की सेवा में रहा जा सकता है।

कनक– आपने अपनी परीक्षा की तैयारी कैसे की?

नेहा जी– प्राथमिक परीक्षा की तैयारी तो जॉब के साथ ही की। सप्ताह के समापन और रविवार के अवकाश में चलने वाली कक्षाओं के साथ–साथ अपना अध्ययन घर पर ही किया। प्राथमिक परीक्षा में लगा कि सब कुछ ठीक–ठाक है तो मुख्य परीक्षा की तैयारी के लिए जॉब छोड़ दी और दिल्ली में कोचिंग की। मैंने पहली बार में ही मुख्य परीक्षा भी पास कर ली और साक्षात्कार भी वर्ष 2014 में जॉब भी पा ली। मेरी प्रारम्भिक ट्रेनिंग पूर्व जिलाधिकारी श्रीमती नेहा शर्मा जी के साथ ही हुई। हम दोनों एक ही बैच के आई.ए.एस. हैं।

कनक– मेरे विचार में सफलता पहले प्रयास में अधिक लोग पाते हैं। क्या राय है आपकी?

नेहा जी– ऐसा नहीं है ....हाँ ये जरूर है कि पहले सीरियस अटैम्प्ट में ....।

कनक– महिला होने के कारण

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अधिकारी के रूप में कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है क्या?

नेहा जी– महिला होने के कारण तो कोई कठिनाई नहीं होती किन्तु एक विडम्बना तो है ही कि उतनी आसानी से स्वीकार नहीं किया जाता जितनी आसाननी से एक पुरुष अधिकारी को स्वीकार कर यिला जाता है। कुछ लोग तो सोचते ही हैं कि एक महिला ये सब कैसे करेगी? किन्तु मेरे लिए महिलाओं वाला घर–परिवार के काम उतना आसान नही, जितना कि विकास अधिकारी का काम है।

कनक– प्रशासनिक क्षेत्र में निम्न पदों पर महिलाकर्मियों को पुरुष अधिकारियों द्वारा मानसिक रूप से शोषण का शिकार होना पड़ता है। इस बात से आप कहाँ तक सहमत है?

नेहा जी– इस बात को पूरी तरह नकारा तो नहीं जा सकता। यदि महिला अधिकारी है तो उसके अधीनस्थ पुरुषों के विचार पूरी तरह से सकारात्मक तो नहीं होते और यदि अधिकारी पुरुष है तो वह अपनी वरिष्ठता का प्रभाव बनाए रखना चाहते ही हैं। ऐसे में कुछेक घटनाक्रम हो ही जाते होंगे। मैं इसे अस्वीकार नहीं करती, लेकिन ये बात तो है ही कि पुरुष महिला यदि दो ऐसे पदों पर है जो एक दूसरे के पूरक हैं तो भी विपरीत लिंग का प्रभाव ये होता है कि वे अपना प्रशासनिक दायरा ही रखेंगे किन्तु दोनों समान लिंग का प्रभाव ये होता है कि वे अपना प्रशासनिक दायरा ही रखेंगे किन्तु दोनों समान लिंग के अधिकारी हैं तो वे कार्य के अतिरिक्त भी बैठकर गपशप कर सकते हैं।

कनक– राजनीति आपके कार्य को प्रभावित करती है क्या?

नेहा जी– ऐसा तो नहीं है, राजनेता जनता के प्रतिनिधि हैं। जनता अपनी बात उन तक पहुँचाती है और वे हम तक। हमारा काम है जनता की सुनना, राजनेता जनता के प्रतिनिधि हैं और हम जनता के सेवक, किन्तु किसी अनैतिक कार्य का दबाब हमें कभी मना तो नहीं करते, किन्तु कार्य करना और न करना हमारे स्वविवेक पर निर्भर होता है। व्यक्तिगत मेरे संदर्भ में कोई भी नाखुश नहीं होता और यदि होता भी है तो इसका अर्थ ये है कि उसने मुझसे बात ही नहीं की होगी।

कनक– तुलसी ने कहा 'ऐसा को जनमा जग माहीं, प्रभुता पाय जाय मद नाही' किन्तु आपके जीवन में मद शब्द का कहीं स्थान नहीं है। आप दुर्घटना पीड़ित महिला को अपनी गाड़ी से अस्पताल पहुँचाती हैं। हर माह दस बीस बच्चों की फीस माफ करा देती हैं। खुले दिल से अपने पैसे से गरीबों की सहायता करती हैं। इतनी सहजता आपके जीवन में कैसे समाहित हुई?

नेहा जी– पापा कहते थे अगर गुड़ न दे पाओ तो गुड़ जैसे बातें तो करो। सबसे मीठा क्या है वाणी की मिठास, मधुर वचन हैं औषधि, कटुक वचन है तीर। यही सब मेरा जीवन बन गया है। जिओ और जीने दो की परम्परा में जन्मी हूँ। मानव की सेवा करना उन पर अहसान करना नहीं है। ये तो मेरा कर्तव्य है। इसी काम का पैसा देती है सरकार मुझे। यह सब मेरे जीवन का अंग हो गया है। ईश्वर ने नौकरी के बहाने सेवा का अवसर दिया है।

कनक– मेरा अंतिम प्रश्न...... जो प्रतियोगी विद्यार्थी इन दिनों प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयार कर रहे हैं उन्हें आप क्या सुझाव देना चाहेंगी?

नेहा जी– तैयारी कैसी भी हो, अपने जीवन की या फिर कैरियर की, मेरे विचार में विद्यार्थी को सतही तौर पर ये कभी नहीं सोचना चाहिए कि हो जाएगा। आप जो भी करना चाहते हैं सबसे पहले उसके लिए गम्भीर होने की आवश्यकता होती है। आप जो भी पढ़ें जैसे इतिहास, भूगोल, साहित्य या कोई और विषय आपको उस विषय का गहन अध्ययन करना चाहिए अर्थात् आपको इस प्रकार पढ़ना चाहिए कि आप विचार करें कि ऐसा ही क्यों? कुछ और क्यों नहीं? जब आप इन प्रश्नों का उत्तर खोज लेते हैं तो सम्पूर्ण विषय वस्तु दीर्घकालिक स्मृति में संचित हो जाती है। जैसे मान लो आप महादेवी की कविता पढ़ रहे हैं और उसके भाव को ठीक से समझ लिया है तो प्रश्न का कोई भी हो आप उसका उत्तर दे पायेंगे। यानि जो भी पढ़ो उसे समझकर पढ़ो, रटना नहीं है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

दूसरी महत्वपूर्ण बात ये भी ध्यान रखनी चाहिए कि ऐसा कभी मत सोचो कि आप जिस जॉब की तैयारी कर रहे हो। आपका जीवन इसी में बनेगा, अपने पास विकल्प रखने चाहिए, यदि ऐसा नहीं हुआ तो फिर ऐसा तो हो ही जाएगा। विशेष रूप से यदि प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हो तो विकल्प अवश्य तैयार रखो। अर्जुन की तरह मछली की ऑख दिखाई देनी चाहिए। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो लगे वह कर देना चाहिए, शत् प्रतिशत कोई पूछे कि कितने घण्टे पढ़ रहे हो...? जब पढ़ रहे हैं तो पढ़ रहे हैं, फिर घण्टे क्या गिनना। किसी दिन चार, किसी दिन ग्यारह, किसी दिन सोलह और किसी दिन एक भी नहीं इससे क्या फर्क पड़ता है क्योंकि जब पढ़ते हैं तो फिर पढ़ते हैं फिर कुछ और नहीं। ये तो स्थिति पर निर्भर है कि कितनी देर पढ़ाई की, परन्तु त्याग तो करना ही पड़ता है। सुविधाओं की चाह से दूर रहना ही होता है। तभी सफलता कदम चूमती है।

कनक– बहुत–बहुत आभार और धन्यवाद, आपने हमें इतना समय दिया। नमस्कार !

नेहा जी– आभार तो आपका है जो आपने मेरा साक्षात्कार अपनी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु चुना। नमस्कार !

– सम्पादक

फिरोजाबादी बोधा– तथ्यों के आलोक में

उत्तर मध्य काल के स्वच्छन्द धारा के कवियों में बोधा का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये प्रेम की परी के रसोन्मत्त और सरस कवि हैं। 'यह प्रेम को पंथ कराल महा, तरबारि की धार पै धावनो है, 'जान मिलै तो जहान मिलै नहि जान मिलै तो जहान कहा को', सहते ही बनै कहते न बनै, मन ही मन पीर पिरैबौ करै' जैसे मर्मस्पर्शी उक्तियाँ कहकर उन्होंने प्रेममार्ग की व्यंजना की है। चलती हुई मुहावरेदार और जीवन्त भाषा के प्रयोग में बोधा अपना प्रतिद्वन्दी नहीं रखते। शिवसिंह सरोज के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन्हें बाँदा जिले के राजापुर ग्राम का सरयूपारीण ब्राह्मण माना है, जो अपने सम्बन्धियों के कारण पन्ना दरबार में पहुँच गये थे। इनका नाम बुद्धसेन था। महाराज इन्हें प्यार से 'बोधा' कहने लगे थे। शिवसिंह सरोज की सूचना के आधार पर शुक्ल जी ने इनका जन्म संवत् 1804 वि. और कविता काल 1830–1860 तक माना है। शुक्ल जी ने बोधा के सम्बन्ध में पन्ना–दरबार की वेश्या सुभान सम्बन्धी किम्वदन्ती को भी स्वीकार किया है। बोधा सुभान से प्रेम करते थे। महाराज ने उन्हें 6 महीने का निर्वासन दे दिया, जिसमें उन्होंने 'विरह वारीश' की रचना की। जब उनसे कुछ माँगने को कहा गया तो उन्होंने (सुभान अल्लाह) कह कर सुभान को ही माँग लिया। इस घटना को बोधा के जानकार सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है। उनके छन्दों में जगह–जगह आया हुआ 'सुभान' का नाम इस घटना को तथ्य मानने के लिए बाध्य करता है। (एक सुभान के आनन पै कुर्बान, जहाँ लगि रूप जहाँ कौ, बोधा सुभान कौ आनन छोड़ि न आनन मो मन आन अरुझै– बोधा ग्रन्थावली छन्द–संख्या 31 व 55) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने केवल एक बोधा का अस्तित्व स्वीकार किया है और 'विरह वारीश' एवं 'इश्कनामा' उनकी दो कृतियाँ बताई हैं। यह भी माना है कि उनके कुछ फुटकल कवित्त और सवैये इधर–उधर भी पाए जाते हैं। मिश्र बन्धुओं ने अपने मिश्र बन्धु विनोद में पन्ना नरेश के आश्रित बोधा एवं फिरोजाबादी बोधा दोनों को एक ही कवि स्वीकार किया है। उन्होंने शिवसिंह जी द्वारा दिए हुए संवतों को प्रामाणिक माना है। फिरोजाबादी बोधा के विषय में उन्होंने लिखा है– 'पं. सुशीलचन्द्र चतुर्वेदी ने फिरोजाबाद बोधा कवि के विषय में एक नोट लिख भेजा है कि बोधा कवि बुन्देलखण्डी से बोधा कवि फिरोजाबादी इतर समझ पड़ते हैं। फिरोजाबादी बोधा कवि सनाढ्य ब्राह्मण थे तथा इनकी कुछ पैतृक भूमि 'रहना' नामक ग्राम में, जो फिरोजाबाद के पास है, थी इनकी

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कविता कुछ अप्राप्य–सी हो रही है। इन्होंने 'वाग विलास' नामक एक ग्रन्थ रचा था। यह संवत् 1887 में वर्तमान थे। समय के विचार से तथा कविता–शैली की दृष्टि से हमें दोनों एक ही कवि समझ पड़ते हैं।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद रीतिकाल के जीवित विश्वकोष थे। जैसे कविवर जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर ने ब्रजभाषा भाषी न होते हुए भी 'उद्धवशतक' जैसी ब्रज भाषा की उत्कृष्ट कृति का सृजन किया है, उसी प्रकार समीक्षा के क्षेत्र में आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है। बिहारी की वाग्विभूति रसखान, घनानन्द ग्रन्थावली, घनानन्द कवित्त, पद्‌माकर ग्रन्थावली, भूषण ग्रन्थावली, भिखारीदास ग्रन्थावली और जगद्विनोद जैसे रीतिकालीन ग्रन्थों का सम्पादन करके उन्होंने टीकाएँ लिखी हैं। इन ग्रन्थों की भूमिका में भी उन्होंने रीतिकालीन कवियों और उनकी कृतियों पर गम्भीर और तात्विक चिन्तन प्रस्तुत किया है। मिश्र जी परम्परा और प्रगतिशीलता का अद्‌भुत समन्वय थे। बोधा ग्रन्थावली की भूमिका में उन्होंने भी पन्ना नरेश के दरबारी बोधा और फिरोजाबादी बोधा को अलग–अलग माना है। बोधा के नाम पर उन्होंने इन ग्रन्थों का अस्तित्व स्वीकार किया है– 1. विरह वारीश, 2. इश्कनामा, 3. फूलमाला, 4. पक्षी मंजरी, 5. बारहमासी, 6. वाग–विलास। उन्होंने माना है कि आरम्भिक दो ग्रन्थ बुन्देलखण्डी बोधा के हैं और बाद के दो ग्रन्थ फिरोजाबादी बोधा के। बोधा के एक सवैया का उदाहरण देते हुए (जिसकी अन्तिम पंक्ति है– 'परम फिरोजाबाद बाग महासिंह जू को लेहु मन प्राणा सो बताइ देहुं गति को' वागविलास के रचयिता बोधा के आश्रयदाता महासिंह कौन हो सकते हैं, वहाँ लिखा गया है– 'टू टैंपुल्स डेडीकेटेड टु महादेव एण्ड श्यामसुन्दर एरेक्टेड बाइ महासिंह ए ब्राह्मण हू गेव हिज नेम टु वन ऑफ द मुहल्लाज।'

मिश्र जी महासिंह को ब्राह्मण अस्वीकार करते हुए कहते हैं– 'गजेटियर' ने महासिंह को ब्राह्मण लिखा है। बिजनौर की ओर कुछ तगा ब्राह्मण होते हैं, जिनके नामों में सिंह लगता है। पर महासिंह ऐसे ही कोई ब्राह्मण थे। भूमिहार ब्राह्मण थे या सिख–धर्म स्वीकार कर सिंह हो गए थे, इसका कोई पता 'गजेटियर' में नहीं देता है।'

आचार्य विश्नाथप्रसाद मिश्र की यह टिप्पणी तथ्यपरक नहीं है। वस्तुतः बोधा के आश्रयदाता महासिंह न तो कोई क्षत्रिय थे, न कोई सिख। वस्तुतः वे श्रोत्रिय ब्राह्मण थे। ब्रज प्रदेश में अनेक ब्राह्मणों के नाम आज भी सिंहपरक होते हैं। फिरोजाबाद में आज भी एक धनी और प्रतिष्ठित ब्राह्मण सज्जन का नाम 'अजब सिंह' था और इन पंक्तियों के लेखक के गाँव में अंग्रेजी राज्यकाल में गाँव की 1/4 जमींदारी के हकदार ब्राह्मण–परिवार का वंशवृक्ष यों है– उमराव सिंह, सम्मरसिंह, कोमलसिंह एवं चरण सिंह इसलिए महासिंह के सिख या तगा ब्राह्मण होने का कोई आधार नहीं। मिश्रजी का यह कथन भी सार्थक नहीं है कि 'बोधा नाम बोधसेन बुद्धिसेन या बुद्धसेन से ही बना है और छाप के लिए रखा गया है।' वस्तुतः फिरोजाबादी बोधा का नाम बुद्धसेन या बोधराज था। बोधा इनका पारिवारिक विशेषण है, उपाधि नहीं। वस्तुतः बोधा का परिवार मूलतः फिरोजाबाद का निवासी नहीं था। बोधा के पुत्र बलदेव ने फिरोजाबाद के स्वतन्त्रता–संग्राम सेनानी श्री जगन्नाथ लहरी को अपने परिवार का वृत्तान्त लिखकर दिया था। उसके अनुसार उनके पूर्वज चित्तौड़गढ़ के निकल सिकरौली गाँव में निवास करते थे। अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़–आक्रमण में यह परिवार पूर्णतः विनष्ट हो गया केवल दो स्त्रियाँ बचीं, जिनमें से एक गर्भवती थी। इसी से बोधा का वंश चला। 'महाकवि बोधा के पिता का नाम धमाजी बोधा बताया गया है। यह परिवार पूर्वकाल में इधर–उधर भटकते हुए फतेहाबाद तहसील में यमुना के तट पर स्थित धाकन गढ़ी में आकर बस गया। उन दिनों चन्दवार–नरेश की एक पुत्री फतेहाबाद में शासन करती थी। उसी

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

रानी ने चन्दवार नरेश से इस परिवार की सिफारिश की तो चन्दवार नरेश ने उनको एक गाँव 'बरतरा' भेंट कर दिया।

बोधा संस्कृत, ब्रज भाषा और फारसी के विद्वान थे। इसी से उनकी पहुँच दरबार में भी हो गई। वे बड़े स्वाभिमानी और उग्र स्वभाव के थे। ऐसा लगता है कि निम्नलिखित छन्द फिरोजाबाद बोधा का ही रचित होना चाहिए–

हिलि मिलि जानै,
तासों हिलि मिलि लीजै आप,
हित को न जानै,
ताकों हितू न बिसाहिए।
होय मगरूर तासो,
दूनी मगरूरी कीजै,
लघु ह्वै चलै जो,
तासौं, लघुता निबाहिए।
बोधा कवि नीति को,
निबेरो यही भाँति करौ,
आपको सराहै,
ताको आपहू सराहिए।
दाता कहा सूर कहा,
सुन्दर सुजान कहा,
आपको न चाहै,
ताके बाप को न चाहिए।

यद्यपि यह बिरही सुभान दम्पत्ति विलास में संकलित है परन्तु सम्भव है कि नामों के फेरफार के एकाध छन्द इधर–उधर हो गया हो। बोधा की उग्रता और स्वाभिमानी प्रवृत्ति के सम्बन्ध में अन्य अनेक घटनाएँ भी प्रचलित हैं। महासिंह श्रोत्रिय को हुण्डावाला कहा जाता था क्योंकि वे दानशील प्रवृत्ति के थे परन्तु नकद दान न देकर हुण्डी लिख दिया करते थे। उनकी प्रतिष्ठा इतनी अधिक थी कि यह हुण्डी किसी भी गद्दी से भुनाई जा सकती थी। इसलिए उस हुण्डी को हुण्डा कहा जाने लगा। महासिंह जी के हुण्डा वाला नाम के आधार पर आज भी फिरोजाबाद में हुण्डावाला बाग और हुण्डा वाला मोहल्ला है। हुण्डा वाला मोहल्ला में महासिंह जी ने शिव का एक विशाल मन्दिर बनवाया। इस मन्दिर पर महासिंह जी के समय में रखे गए पुजारी के वंशजों ने अधिकार कर लिया है, जिसे कुछ समाजसेवी मुक्त कराने के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय में गए थे। वहाँ पुजारी के वंशज केसहार गए और मन्दिर सार्वजनिक हो गया। इससे 'गजेटियर' के महासिंह जी द्वारा अपने नाम पर मोहल्ला बनवाने की बात प्रमाणित हो जाती है। महासिंह जी के हुण्डा वाला बाग को देखकर ही बोधा ने 'वागविलास' की रचना की थी। वाग विलास की हस्तलिखित प्रति बोधा के वंशज श्री मिट्ठू लाल शर्मा सिकरौलिया मोहल्ला, नीम चौराहा फिरोजाबाद के पास पैतृक धरोहर के रूप में उपलब्ध थी। मिट्ठूलाल शर्मा से यह जीर्ण–शीर्ण प्रति स्वर्गीय श्री जगन्नाथ लहरी को प्राप्त हुई और उनसे फिरोजाबाद के पुराने सम्पन्न वकील श्री प्रकाशचन्द्र चतुर्वेदी को मिली। श्री चतुर्वेदी जी ने यह प्रति इन पंक्तियों के लेखक को दी। वागविलास की इस प्रति के आधार पर लहरी जी ने वाग विलास को पुस्तिका रूप में विजयादशमी, 1976 को फिरोजाबाद सन्देश प्रेस से प्रकाशित किया। प्रति के अंत में 'इति श्री बोधा कृत वाग विलास संवत् 1832' लिखा हुआ है।

वाग विलास के छन्दों में 12 स्थानों पर महासिंह जी और फिरोजाबाद का नाम आया है। वे पंक्तियाँ यों है–

1. गणेश सों बोधा महासिंह बाग बनाऊं।' छन्द सं. 3
2. जुगनि उचारि चारु महासिंह बोधा कहि, पाननि की बीरी सो बिसाखा करि लाई जू। छन्द सं. 4
3. परम फिरोजाबाद बाग महासिंह जू को, लेउ मन पेड़ सो बताइ देउं गति को। छन्द सं. 7
4. वाग विलास बनों महासिंह को झौरा लगैरी बादाम की डारन। छन्द सं. 8
5. बोधा कहे महासिंह आम सिरदार हैं। छन्द सं. 12
6. महासिंह बाग बीच उपमा सरस सोहे, सीस धरे मुकुट कान्ह गावत रसान में। छन्द सं. 21
7. महासिंह बाग बीच सरों सी लगत है। छन्द सं. 22
8. विवेकी महासिंह बोधा सदा शुभ मंगल गाऊं। छन्द सं. 24
9. बोधा कहि महासिंह बानक बनराज कैसी, पायो ककरोंधा जै बोलो कृष्ण राधे की। छन्द सं. 36
10. बोधा मनत सुनो महासिंह हुंडावाल, अब के पलासनि पंसारी

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

रंग धारो है। छन्द सं. 31

11. बोधा कहि महासिंह सुजस बढ़ायो कान्ह। छन्द सं. 35

12. पंचमुख गौरीसुत अष्टभुजी फीरोजाबाद बोधा कहि महासिंह सुधी सुघराइ के। छन्द सं. 37

वागविलास में इतने स्थानों पर आये हुए फिरोजाबाद, महासिंह और हुण्डावाल नाम तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं। वस्तुतः बोधा फिरोजाबाद के पास के गाँव 'रहना' में रहते थे। वहाँ उनकी पैतृक भूमि थी। वागविलास की रचना से प्रसन्न होकर महासिंह जी ने उन्हें पाँच सौ रुपये की हुण्डी प्रदान की थी। बोधा यह हुण्डा सकारने के लिए लाला छिंगामल की गद्दी पर गए। छिंगामल जी अग्रवाल वैश्य थे। इनके नाम से भी फिरोजाबाद का एक मोहल्ला 'छिंगामल का बाग' है। लालाजी ने अपनी वणिक बुद्धि का परिचय देते हुए एक आना रुपया कमीशन के स्थान पर दो आना रुपया कमीशन काट लिया। स्वाभिमानी और उग्र बोधा ने वहीं खड़े-खड़े एक स्वरचित कटु दोहा पढ़ा।

वस्तुतः बोधा ने लालाजी को बड़ी तीखी बात कही थी। कहा जाता है कि अपकीर्ति के भय से लालाजी ने बोधा से कहा कि वे पूरा रुपया ले लें परन्तु दोहे को प्रचारित न करें परन्तु बोधा ने इसे स्वीकार नहीं किया।

बोधा को मराठा-राज्य से भी कुछ भूमि दान में मिली थी। मराठों ने फिरोजाबाद में कई मन्दिरों का निर्माण करवाया था। उनमें हनुमान जी का विशाल मन्दिर आज भी उनकी धर्मप्रियता और आस्तिक रुचि का प्रचार कर रहा है। इसी मन्दिर के बगल में बोधा को 52 बीघा भूमि दान में मिली थी। इस स्थल पर अब पी.डी. जैन इण्टर कॉलेज अवस्थित है। बोधा के स्वभाव की उग्रता को प्रमाणित करने वाला एक छन्द और प्रचलित है-

बारी और खंगार, नाऊ धीमर कमार काछी, खटिक दसौधी सहजूर को सुहात है। कोल, गोंड, गूजर, अहीर, तेली नीच सबै, पास के रहे से कहा ऊँचे भये जात है। बुद्धसेन राजन के निकट हमेस बसै, कूकर बिलार कहा गुन अधिकात है। ऊर ही गयंद बांधे, दूरि गुवान ठाडे, गज औ गुनी के कहा मोल घटि जात है।।

इस छंद को पढ़कर ज्ञात होता है कि बोधा ने इसमें किसी राजा या जागीरदार की निन्दा की होगी।

वागविलास की हस्तलिखित प्रति के अंत में संवत् 1832 दिया हुआ है। इससे विद्वानों की यह धारणा प्रमाणित हो जाती है कि बोधा का रचनाकाल 1830 से 1860 के मध्य रहा होगा। बोधा सम्बन्धी तमाम सामिग्री विनष्ट हो गई है। जिन्होंने इस विषय में रुचि लेकर शोध-कार्य किए, उनमें से भी श्री जगन्नाथ लहरी और श्री रतनलाल बंसल स्वर्गवासी हो गए हैं, फिर भी जितनी सामिग्री उपलब्ध है, उससे बोधा सम्बन्धी तथ्यों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। बोधा के परिवारीजनों ने लगभग सारी लिखित सामिग्री विनष्ट कर दी थी, फिर भी बोधा के नाम लिखा हुआ एक पत्र मिलता है। यह पत्र किन्हीं भवानीदास नथाराम डालचन्द अन्तराम और रामप्रसाद जी की ओर से लिखा गया है इस परिवार में बोधा के परिवार की कोई लड़की ब्याही गई थी। उसी लड़की की विदा के लिए उक्त पत्र लिखा गया है। पत्र से बोधा के फिरोजाबादी होने का प्रमाण मिल जाता है। बोधा के छोटे भाई सौजीराम जी भी अच्छे लेखक थे और उनके पुत्र बलदेव बहुत अच्छे कवि थे। बोधा के अनेक छन्द और बलदेव लिखित कई कवित्त तथा सवैया फिरोजाबाद के पुराने काव्य प्रेमीजनों में मौखिक- परम्परा से जीवित हैं। बलदेव का एक कवित्त इस प्रकार है-

नवल हवेली सां नवेली द्वार जैयो नहिं, रीझैगो मयंक तेरी मंद मुस्कान में। भनै बलदेव जैसे तीक्षण कटाच्छ तेरे, तेरे सरसखी हैं मनोज की कमान में। अनुज अनूप अंग उरज उतंग तेरे, रीझि कै पतंग विधि जैसे काम बान में। सारथी समेत भानु भूतल गिरैगो आनि, घूमत फिरैगो रथ खाली आसमान में। इन तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि-

1. फिरोजाबादी और बुन्देलखण्डी बोधा दो अलग-अलग कवि हैं। बुन्देलखण्डी बोधा का 'बोधा'

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उपनाम है और फिरोजाबाद बोधा का 'बोधा' पारिवारिक विशेषण।

2. दोनों बोधा समकालीन कवि हैं।

3. दोनों की रचनाएं एक दूसरे में मिल गई हैं। उन्हें प्रामाणिक तौर पर अलगाना बहुत कठिन है।

4. यह कहना कठिन है कि वागविलास की जो जीर्ण–शीर्ण प्रति उपलब्ध है, वह बोधा के ही हस्तलेख में है या उनके भाई सौजीराम के या किसी तीसरे व्यक्ति ने वह प्रति तैयार की है फिर भी यह बोधा के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त है।

–डॉ. राम सनेही लाल शर्मा
'यायावर' मो.– 9917796897

श्री गुरुद्त्त अग्रवाल (संस्मरण)

संकट सबके साथ होते हैं, मेरे साथ भी हैं। बनारसी दास चतुर्वेदी, श्रीधर पाठक, श्री राम शर्मा जैसे बड़े रचनाकारों की धरा फिरोजाबाद का सांक्षात्कार पूरे देश को हो यह प्रण लेना मेरे जीवन का बड़ा क्षण था जिसके लिए मैं अपनी अन्तिम साँस तक प्रयासरत रहूँगा। प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट की स्थापना के समय जो साथी साथ जुड़े वे अपना निजी हित खोजने लगे तो मैं पुनः अकेला दृढ़ नही कि मैं आश्वस्त हो सकूँ, किन्तु आत्मबल है कि झुकता नहीं। चाहे मीडिया के लोगों का असहयोग हो या किसी का निजी स्वार्थ, मैं बन्दरों की शक्ति से पुल तैयार करने को चला हूँ बाकि सब बिहारी जानें।

सोचा कि कनक काव्य कुसुम के द्वितीय अंक में संस्मरण में क्या दूँ तो दो बातें सामने आयी उनमें पहली ये है कि मैंने इन दिनों मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'गुनाह–बेगुनाह' पढ़ा, जिसमें महिला पुलिसकर्मियों की समस्याओं तथा कठिनाइयों का काल्पनिक चित्र देखा। मैं इसकी सच्चाई जानने हेतु विकल हो उठा। एक दिन एक चौराहे पर एक महिला दरोगा दिखाई दी। सोचा कि इन्हीं से अपनी जिज्ञासा शान्त कर लूँ, किन्तु उनके सामने जाकर बात करने की हिम्मत न जुटा पाया और बेरंग घर लौट आया। फिर अपनी कुछ महिला सम्बन्धियों से किसी पुलिसकर्मी महिला से अपने प्रश्नों को जानने की इच्छा प्रकट की। इस श्रृंखला में कुछ महिला पुलिसकर्मियों से सम्पर्क भी हुआ किन्तु जब मैंने ये बताया कि मैं अपने प्रश्नों के प्रति उत्तर में प्राप्त आपके विचारों को पत्रिका में प्रकाशित करूँगा तो वे सभी कोई न कोई बहाना बनाकर कन्नी काटती नजर आईं। अन्ततः एक महिला पुलिस कर्मी ऐसी मिली ही गई जिसने अपने नाम का उल्लेख न करने की शर्त पर मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर देने की स्वीकृति दे दी। फिर नियत समय पर मेरी बात हुई तो ज्ञात हुआ कि वह पहले तो शिक्षिका के रूप में अपना जीवन तय करना चाहती थी किन्तु इसी बीच पुलिस की भर्ती निकली और उसने अपनी बड़ी बहिन जो पहले से ही पुलिस में है की प्रेरणा से आवेदन किया और नौकरी पाली। वह मेरे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर बड़ी बेबाकी से दे रही थी यद्यापि मुझे पुलिस के नाम से भी भय लगता है किन्तु बात फोन पर हो रही थी। अतः मैं निर्भय होकर प्रश्न पूछ रहा था। तभी जब मैंने अपने मूल प्रश्न की ओर जैसे ही कदम बढ़ाया तो मुझे लगा कि शायद वह मेरे प्रश्न पर ठिठकेगी किन्तु ऐसा न हुआ। मेरा प्रश्न था कि एक महिला सिपाही को अपने साथी पुरुष सिपाहियों या अधिकारियों के दुर्व्यवहार का सामना भी करना पड़ता है क्या? तो उसका स्पष्ट उत्तर था कि जब तक महिला लचीलापन प्रदर्शित न करे तो किसी को हिम्मत नहीं होती, ऐसा 95 प्रतिशत केसों में होता है। 5 प्रतिशत पुरुष की प्रकृति का शिकार होना पड़ता है। साथ ही उसने यह भी स्पष्ट रूप से बताया कि जब एक महिला बिना मेहनत किए अपने दायित्व से बचकर सुविधाओं की आकांक्षी हो या पदोन्नति चाहे तो वह स्वयं ही

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उत्पीड़न को आमंत्रित करती है, तब वह स्वयं दोषी है। मैंने उसका आभार व्यक्त किया और बात पूर्ण हुई। इस प्रकार आप समझ ही गये होंगे कि क्षेत्र कोई हो, कठिनाई 5 प्रतिशत ही होती है। 95 प्रतिशत कठिनाइयाँ मनुष्य के स्वयं के कारण उत्पन्न होती है।

अब मैं आता हूँ अपनी दूसरी बात पर जोकि गुरुदत्त अग्रवाल के संस्मरण का अंग है। यह नाम कई बार डॉ. यायावर जी से सुना था। गुरुदत्त यायावर जी के सहपाठी थे। मेरी पहली भेंट शरद पूर्णिमा के दिन वर्ष 2011 में सतेन्द्र सत्यम जी के आवास जैन नगर पर हुई। काव्य गोष्ठी का संचालन हरीश चतुर्वेदी कर रहे थे। उन्होंने जब गुरुदत्त जी का नाम लिया तो एक अदना सा अत्यधिक तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति, उठकर खड़ा हुआ, जब गीत पढ़ा तो अद्‌भुत रस का ऐसा प्रभाव बहा कि तन–मन बह गया। वर्ष 2014 में अमरदीप स्कूल में मैं पढ़ाने पहुँचा तो पता चला कि गुरुदत्त वहाँ कई विषय पढ़ाते हैं। अब मेरा अधिकतर समय उन्हीं के साथ बीतता था। वे सदैव मुझे शिक्षण के गुण सिखाते रहते थे। गुरुदत्त जी से हिन्दी की असीम बारीकियाँ सीखीं। हम दोनों परम मित्र हो गये थे। इतना स्नेह था कि मैं उन्हें सदैव डोकरा कहता और वे हँसकर सीने से चिपका लेते थे। मेरी और गुरुदत्त जी की ड्यूटी सुबह और सायं दोनों समय गेट पर होती थी। मैं हर क्षण उनसे मस्ती करता रहता था। अन्य शिक्षक कहते थे कि दत्ता सर आप कनक सर को कुछ बोलते क्यों नहीं? तो वे कहते कि वह बच्चा है उसके मन में कोई दुर्भावना नहीं है। वो मुझे प्यार करता है।

एक दिन की बात है। किसी कार्यक्रम को लेकर शिक्षकों की बैठक होनी थी। सभी शिक्षक बैठे थे। कोई बैठक लेने वाल नहीं आया था। हम सभी मस्ती के मूड में थे। मैंने दो–तीन बार कहा दत्ता सर, परन्तु उन्होंने नहीं सुना। मैंने जोर से कहा डोकरा.... इतना सुनते ही एक टीचर भड़क गया...... ये बदतमीज है हमारे सीनियर के साथ..... इतनी देर में दो–चार शिक्षक और समर्थन में चिल्ला उठे मेरी पिंडलियाँ काँप गई। मैं। भय से काँप उठा। सहसा दत्ता सर बोले क्यों चिल्ला रहे हो? मुझे बुरा नहीं लगा तो तुम इतना हंगामा क्यों कर रहे हो सबको पता है कि कनक मजाकिया है फिर इतना उपद्रव कैसा? तब कहीं जाकर लोग शान्त हुए। मेरी आँखें झलक आई। एक बार फिर दत्ता सर ने मुझे छाती से चिपका लिया। मैंने कान पकड़कर माफी माँगी और कहा सर अब कभी मैं आपसे ऐसा नहीं कहूँगा तो बोले कनक तू ही तो है जो प्यार से कहता है बाकी सब भी यही कहते पर वे प्यार से नहीं नफरत से कहते हैं।

गुरुदत्त जी नवगीत तथा नई कविता के सिद्धहस्त रचनाकार थे। प्रो. सोम ठाकुर और गुरुदत्त के मुकाबले का कोई कवि उत्तर भारत में नहीं था। डॉ. यायावर तक अपनी कविताओं में सुधार कराने उनके पास जाते थे। 2 अक्टूबर 2014 को मैंने अमरदीप छोड़ दिया और एस. आर. के. महाविद्यालय में आ गया फिर भी मैं उनसे मिलने जाता रहता था। एक दिन जब मैं विद्यालय पहुँचा तो किसी शिक्षक ने बताया कि आज विद्यालय बंद है क्या आपको पता नहीं आज दत्ता सर नहीं रहे। मैं सहसा स्तब्ध रह गया। उनके घर पहुँचा तो उन्हें कफन उढ़ाया जा रहा था। मैंने एक युग जी लिया था। नशा की लत के चलते गुरुदत्त जी अपना जीवन ध्वस्त कर चुके थे, किन्तु कविता के क्षेत्र में वे सदैव सक्रिय रहे। मेरे सामने उनकी अन्तिम यात्रा प्रारम्भ हुई तब प्रतिज्ञा की कि मैं उनका अप्रकाशित साहित्य प्रकाशित कराने का हर सम्भव प्रयास करूँगा।

– सम्पादक

> शब्द उस वक्त हृदय पर घात करते हैं जब बड़े लोग छोटी बात करते हैं .....
>
> **– कनक**

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

विस्मृतियों के गर्त में डूबा एक नाम– आर.पी. भाष्कर

काल की गति कब अवरुद्ध हुई है। वह तो निरन्तर अपनी गति से सतत् चलायमान रहता है। अवाध अप्रतिहत नियति के नियमों का अनुसरण करता हुआ निरविवाद और मानव उसी गति के प्रवाह में बहता हुआ अपनी यात्रा पूर्ण कर संसार से विदा हो जाता है। शेष रह जाती है सिर्फ स्मृतियाँ। यदि कोई उन स्मृतियों को पन्नों में समेटने का साहस जुटा ले तो स्मृतियाँ अमरत्व पा जाती हैं और यदि ऐसा न हुआ तो विस्मृतियों का गर्त सदैव मुस्कराकर सबका स्वागत बड़े ही आदर भाव से करता रहता है।

जब–जब मैं इस विस्मृति के गर्त में झाँकता हूँ तो गणित में बहुतायत मात्रा में प्रयोग होने वाला चिन्ह अनन्त की अवधारणा को चरितार्थ करते नाम एक के ऊपर एक पड़े दिखाई देते हैं। क्षेत्र कोई भी हो स्थितियाँ सर्वत्र एक समान ही हैं। इसी गर्त में पड़ा एक नाम आर.बी. भाष्कर मुझे तब मिला जब मैं अपनी वार्षिक पत्रिका कनक काव्य कुसुम के द्वितीय अंक के प्रकाशन के संदर्भ में अपने गुरुदेव डॉ. रामसनेही लाल 'यायावर' जी से परिचर्चा कर रहा था। यायावर जी ने बताया कि वे भाष्कर जी को विस्मृति के इस गर्त से निकालने के संदर्भ में कई लोगों से चर्चा कर चुके हैं किन्तु कोई भी ध्यान देने को तैयार नहीं। बस उसी क्षण से मैं यायावर जी के साथ उस गर्त को खंगालने में लग गया। इस कार्य हेतु हमारी मुलाकात भाष्कर जी के पुत्र श्री नेत्रपाल सिंह जी से हुई। तीन चार बार की मुलाकात के पश्चात् हम उनके हृदय में यह विश्वास जगा पाये कि हम उनके पिताजी पर वास्तविकता में काम करना चाहते हैं तब कहीं जाकर एक दिन लगभग 30 मिनट की वार्ता में यायावर जी जो जानकारियाँ जुटा सके वे सब मैं आपके समझ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

श्री राम प्रसाद भाष्कर जी का जन्म दलित परिवार में हुआ। वे जाति से जाटव (चमार) थे। बचपन से ही अप्रतिम प्रतिभा के धनी भाष्कर जी पढ़ने में असामान्य प्रतिभा के धनी थे। भाष्कर जी के पिता श्री जवाहरलाल जी हाथवंत के समीप गाँव अकबरपुर में अपने पुत्रों को उचित शिक्षा दिलाने हेतु मुहल्ला दुली में फिरोजाबाद आ गये। बाद में नगला मिर्जा पर भी रहे अन्ततः नगला करन सिंह पर सदा के लिए बस गये। भाष्कर जी के बड़े भाई बाबूराम और छोटे भाई किशोरीलाल तथा ओमप्रकाश जी थे। वर्तमान में वे चारों भाई दिवंगत हो चुके हैं। भाष्कर जी ने मिडिल करने के पश्चात्, एच. टी.सी. आयुर्वेद रत्न तथा साहित्य रत्न की उपाधियाँ प्राप्त की। ज्योतिष का ज्ञान भाष्कर जी ने स्वाध्याय से प्राप्त किया। वे अपने समय के ज्योतिषों के सूर्य थे। दिन भर ज्योतिष सम्बन्धी समस्याओं के निस्तारण हेतु लोगों का तॉता लगा रहता था।

भाष्कर जी ने अध्यापन का प्रारम्भ डी.ए.वी. इण्टर कॉलेज फिरोजाबाद से किया, बाद में वे जिला परिषद के प्राथमिक विद्यालय के हैड मास्टर पद से सेवानिवृत हुए। यद्यपि भाष्कर जी बचपन से ही साहित्य प्रेमी थे किन्तु सेवानिवृति के पश्चात् वे पूर्णतः साहित्य सेवा में रत् हो गये। उन्होंने पिंगल शास्त्र पर चौदह पुस्तकों का सृजन किया। पिंगल प्रवेशिका, भाष्कर पिंगल चंद्रिका, रविदास रामायण, अम्बेडकर रामायण आदि भाष्कर जी की प्रमुख कृतियाँ हैं। भाष्कर जी भयंकर पढ़ाकू थे। इस बात की पुष्टिकर्ता उनके छोटे से कमरे में स्थापित विशालकाय पुस्तकालय है।

भाष्कर जी भजनों के शौकीन थे तत्कालीन समय में भजन दो प्रकार के होते थे। रसियाये भजन और कवि भजन/रसियायें भजनों में कुछ टीमें होती थीं। उन टीमों का। नायक होता था। टीमें कोई भजन (किसी का भी लिखा हुआ) सुनाती थी और दूसरी टीम के लोग उस भजन से सम्बन्धित दो प्रश्न पूछते थे। प्रश्न का नियम यह था कि प्रश्न का आरम्भ किसी ऐसे शब्द से हो जो सुनाये गये भजन में अनिवार्य रूप से आया हो और टीम

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

का नायक उन प्रश्नों के उत्तर देता था। वहीं दूसरी ओर कवि भजनों में टीम में कोई एक कवि होता था और नायक उसके द्वारा लिखे गये भजन को गाता था। कवि के लिए भी शर्त यह होती थी कि वह दी गई समस्या पर भजन लिखता था। दूसरी टीमें उस भजन से दो प्रश्न पूछती थी और दो काव्य दोष निकालती थीं। उदाहरणार्थ डॉ यायावर जी के पिता श्री गयाप्रसाद शर्मा जी एक कार्यक्रम के अध्यक्ष थे। यह आयोजन पानी गाँव नगरिया के प्रधान लायक सिंह यादव ने कराया था। वहाँ शर्मा जी ने समस्या रखी 'कसकै मोहि जाति अहीरा'। इतना सुनत ही लायक सिंह जी भड़क गये किन्तु इस समस्या पर जो भजन लिखे गये उन्हें सुनकर पूरे गाँव के लोग आनन्द में उछल–उछल गये।

भाष्कर जी आरम्भ में तो इस प्रकार के भजनों में कवि के रूप में प्रतिभागिता करते थे। बाद में उन्हें अध्यक्ष बनाया जाने लगा। प्रत्येक जाति वर्ग के लोग भाष्कर जी के पाण्डित्य का समुचित सम्मान करते थे। भाष्कर जी ने सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, वैदिक साहित्य आदि का गहन अध्ययन किया था। अन्तिम दिनों में वे बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गये, तथापि हिन्दू समाज के प्रति उनके हृदय में कभी भी विद्वेश का भाव न था। यही कारण था कि भाष्कर जी को सभी वर्गों में समान आदर भाव प्राप्त होता था। भाष्कर जी के पुत्र के कथनानुसार उनकी जाति को लेकर कभी भी किसी के द्वारा कोई ऐसी टिप्पणी न की गई जो उन्हें आहत करती।

5 सितम्बर 1934 में जन्मा साहित्य का ध्रुव तारा 16 नवम्बर 2007 को अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर अनन्त व्योम में स्थापित हो गया। ये मेरा सौभाग्य है कि मैं डॉ. यायावर जी की प्रेरणा से भाष्कर जी के जीवन वृत्तान्त को आपके समक्ष ला सका और साथ ही विशेष बात यह भी है कि भाष्कर जी के जीवन को जानने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि किसी भी युग में विद्वता के आड़े जातियाँ न आयीं हैं और न आयेंगी।

– सम्पादक

'कनक काव्य कुसुम'

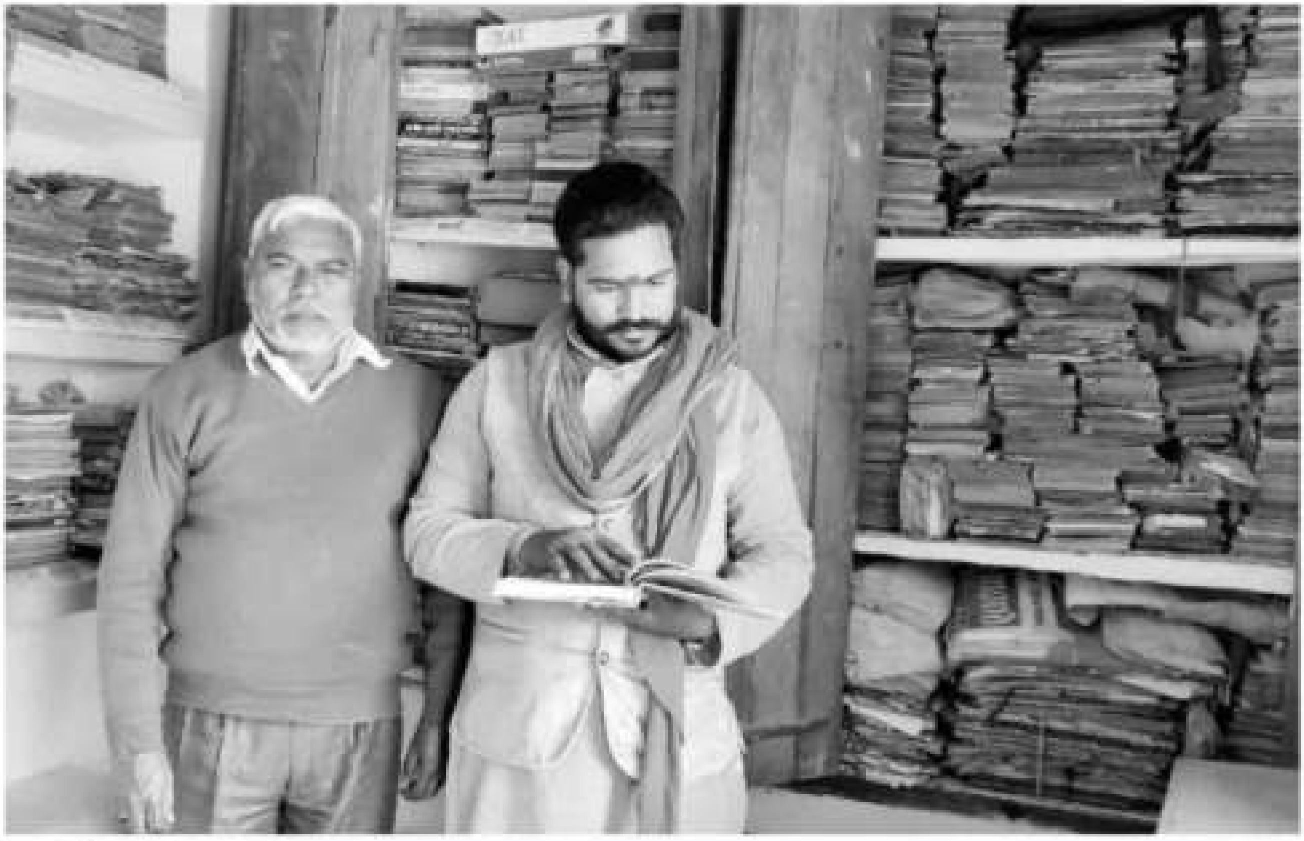

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

सृजन श्री सम्मान 2020 से सम्मानित गीतकार की पाँच गीत

– शिवराम सिंह 'शान्ति'
टीचर्स कॉलौनी, बाह,
आगरा, मो.– 9719408729

(1)

दिल से दिल के बीच दूरियाँ, खोया–खोया प्यार है।
भाई का भाई है वैरी, आपस में तकरार है।
बचपन जिसके साथ बिताया, खेल खिलौने साथ में।
अगला पिछला याद नहीं था, हाथ सदा थे हाथ में।
बचपन जितना भोला था, अब हुई जवानी खार है।
भाई का भाई है वैरी, आपस में तकरार है।
क्या हो गया न समझ सका जग, ऐसी भी क्या बात हुई।
एक उजाले की छाया में, कैसे इतनी रात हुई।
जो था अमृत कलश कभी अब, द्वेष भरा अंगार है।
भाई का भाई है वैरी, आपस में तकरार है।
सब कुछ ज्ञात भले ही था पर, फिर भी तो कुछ कर न सके।
इतने घाव लिए फिरते हैं, जिन्हें आज तक भर न सके।
दोषी कौन कमी है किसकी, प्रश्नों का बाजार है।
भाई का भाई है वैरी, आपस में तकरार है।

(2)

शोषण चक्र नहीं रुक पाया मेरे प्यारे देश में।
राजनीति की चक्की चलती जन पीड़ित परिवेश में।
संविधान से खेल रहे हैं जनता तो बेचारी है।
जातिवाद पर ही लड़वाते इनकी ये बीमारी है।
विष को अमृत बता पिलाते अपने हर संदेश में।
राजनीति की चक्की चलती जन पीड़ित परिवेश में।
कैसा वक्त बुरा आया है पनघट के घट रीते हैं।
आशाएँ बन धूल उड़ गई कितने सावन बीते हैं।
पता नहीं क्या हो आने वाले अगले आदेश में।
रानीति की चक्की चलती जन पीड़ित परिवेश में।
रीत प्रीत की भुला चले हैं देखो इनकी चाल को।
अंधकार बिखरा ऑगन में क्या हो गया मशाल को।
जाने क्या से क्या कर डाले ये अपने आवेश में।
राजनीति की चक्की चलती जन पीड़ित परिवेश में।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(3)

सारे जग से न्यारा प्यारा भारत देश हमारा है
अवतरों की पुण्य धरा यह दिव्य ज्योति उजियारा है
मुकुट हिमालय लट है गंगा वक्ष विकट विकराल है।
ऋषि–मुनियों वीरों से जिसका रहा समुन्नत भल है।
नित्य वंदना जिसकी करता उत्तर में ध्रुव तारा है।
अवतारों की पुण्य धरा यह दिव्य ज्योति उजियारा है।
जग साक्षी है आताताई मुँह की खाकर चले गये।
स्वाभिमान के हाथों वे सब सदा मूँग से दले गए।
अन्धी ऑंखों ने जालिम का सारा भूत उतारा है।
अवतारों की पुण्य धरा यह दिव्य ज्योति उजियारा है।
रहे भान हम सबको इतना आन बान है शान यही।
सपनों की साकार सृष्टि है जन–गण–मन का मान यही।
रहे अखण्ड खण्ड आर्यों का यही हमारा नारा है।
अवतारों की पुण्य धरा यह दिव्य ज्योति उजियारा है।

(4)

पुण्य धरा से मिटने लगता और पाप बढ़ जाते हैं।
गीता कहती तब तब ईश्वर इस धरती पर आते हैं।
साधु जनों पर दुष्ट जनों का जब जब अत्याचार हुआ।
करने नाश दुराचारी का तब प्रभु का अवतार हुआ।
नाश अधर्मों का प्रभु करके धर्म ध्वजा फहराते हैं।
गीता कहती तब तब ईश्वर इस धरती पर आते हैं।
मोहन मूरत श्यामल सूरत सबका ही मन भरमाये।
मधुर बाँसुरी की धुन सुनकर बृजमण्डल नाचे गाये।
कंस पूतना और बकासुर जब आतंक मचाते हैं।
गीता कहती तब तब ईश्वर इस धरती पर आते हैं।
मान बढ़ाते संत जनों का सब संकट हर लेते हैं।
मान बढ़ाने को मीरा का विष अमृत कर देते हैं।
दुर्योधन के षट् रस तजकर साग विदुर घर खाते हैं।
गीता कहती तब तब ईश्वर इस धरती पर आते हैं।

(5)

रहे प्रेम का भाव हृदय में श्रद्धा, सिद्धि समान रहे।
रहे परस्पर प्रीति दिलों में ऐसा हिन्दुस्तान रहे।
धर्म नीति का ध्यान करें सब और सत्य स्वीकार करें।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

दया भावना रहे ह्रदय में पावन स्वच्छ विचार करें।
मान न जाये कभी किसी का सबका ही सम्मान रहे।
रहे परस्पर प्रीति दिलों में ऐसा हिन्दुस्तान रहे।
क्षण भंगुर यह जीवन ज्वाला कब बुझ जाए ज्ञात नहीं।
कालचक्र के न्यायाधीश को कोई पल अज्ञात नहीं।
जब तक साँस रहे इस तन में तब तक तना वितान रहे।
रहे परस्पर प्रीति दिलों में ऐसा हिन्दुस्तान रहे।
अहम भाव का लेश न हो बस सबकी हो सच्ची बोली।
मन में ईद दिवाली महके तन में नित चहके होली।
मातृभूमि के हेतु समर्पण का सबको संज्ञान रहे।
रहे परस्पर प्रीति दिलों में ऐसा हिन्दुस्तान रहे।

तेरा ये उपकार

– कृष्ण कुमार 'कनक'
'कनक निकुंज', ग्राम व पोस्ट– गुँदाऊ,
ठार मुरली नगर, थाना लाइन पार, फिरोजाबाद

अधरों की मुस्कान छीनकर अपना महल बसाने वाले,
तेरा ये उपकार कि मेरा जीवन और निखार दिया है।
यदि मैं तुझको पा जाता तो शायद वहीं उलझ रह जाता।
वादे करता उन्हें निभाता यादों का अस्तित्व न पाता।
झुँझलाहट में कभी काँपकर तुझसे कुछ कह भी जाता पर,
इन सारे झंझावातों से तूने मुझे उबार दिया है।
अधरों की मुस्कान छीनकर अपना महल बसाने वाले,
तेरा ये उपकार कि मेरा जीवन और निखार दिया है।
जब दिनकर की विभा जागकर अन्तर्मन को सहलाती है।
सद्यस्नात् बाला जल लेकर देवाराधन को जाती है।
तब–तब तेरा रूप नयन के सागर में प्रतिबिंबित होता,
मानो ज्यों तूने मुस्काकर सारा कर्ज उतार दिया है।
अधरों की मुस्कान छीनकर अपना महल बसाने वाले,
तेरा ये उपकार कि मेरा जीवन और निखार दिया है।
कोयल सी बोली में सहसा कड़वाहट की गंध घोलकर।
अरमानों की मृदुल तुला पर आशाओं का भाव तोलकर।
जाने किस मनहूस घड़ी में मैंने प्रिय प्रस्ताव रखा था,
कल तूने मुझको ठुकरा कर मेरा सुधार दिया है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अधरों की मुस्कान छीनकर अपना महल बसाने वाले,
तेरा ये उपकार कि मेरा जीवन और निखार दिया है।
जब दिनकर की विभा जागकर अन्तर्मन को सहलाती है।
सद्यस्नात् बाला जल लेकर देवाराधन को जाती है।
तब तब तेरा रूप नयन के सागर में प्रतिबिम्बित होता,
मानो ज्यों तूने मुस्कराकर सारा कर्ज उतार दिया है।
अधरों की मुस्कान छीनकर अपना महल बसाने वाले,
तेरा ये उपकार कि मेरा जीवन और निखार दिया है।

ये शक्ल कहीं देखी है

– डॉ. अशोक चक्रधर
दिल्ली, मो. – 9811013621

ये शक्ल कहीं और देखी है। (कई बार दर्शक भूल जाते हैं कि कहाँ मिले थे)
टेलीविजन पर आना कोई शेखी है। लोग राह चलते कहते हैं–
ये शक्ल कहीं और देखी है। प्यार उमड़ता है ऐसे बंदों पर,
मैं उन्हें कैसे समझाऊ, शक्ल कहीं और कैसे दिख सकती है।
ये तो शुरु से टिकी है इन्हीं दो कंधों पर। लोग हाथ मिलाते हुए चहककर मिलते हैं,
गले लगते हुए महक कर मिलते हैं, मिलते हैं तो खुशी से फूल जाते हैं।
पर कहाँ मिले थे ये भूल जाते हैं। याद नहीं आता तो अनुमान लगाते हैं–
आपकी जीके में साड़ियों की दुकान है न? आपके स्टोर से तो हम बुक्स लाते हैं।
आपके यहीं तो हम कुर्ते सिलवाते हैं। आप हमारे साले के रिश्ते में भाई हैं,
आप वकील हैं न, आपके साढू साब नागपुर में हलवाई हैं। आप तीस हजारी में टाईपिस्ट हैं न,
आप मराठी के जर्नलिस्ट हैं न। अजी आपके यहाँ हमने कार्ड छपवाए हैं।
आप तो बंकरडूमा में हमारे घर आए हैं। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि मुझे नहीं मालुम कहाँ है बंकरडूमा,
उसके आसपास की गलियों में भी मैं कभी नही घूमा। माफ कीजिएगा सिर्फ इतना बताता हूँ, टीवी की छोटी सी
खिड़की से बिना पूछे आपके घर में घुस जाता हैं। घबराइए मत, आदमी सीधा सच्चा हूँ,
दो हफ्ते पहले पूरे इकसठ साल का हो गया पर आपका बच्चा हूँ।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गीत

– डॉ विष्णु सक्सैना
सिकन्दरराराऊ (उ.प्र.)
मो.– 9412277268

कानों में सीसा घोला है, होठों पर डाले ताले हैं।
मेरे घर के ही चिराग ने मेरे हाथ जला डाले हैं।
खुशियों के पतझर ने मेरे, गम के मधुवन हरे किये थे,
सच कहता हूँ एक जनम में हमने सौ–सौ जन्म जिए थे,
उन रस्तों पर भटक गए हम जो रस्ते देखे भाले हैं ...
शशि ने शीतलता दी मुझको, सदा ऊर्जा दी है रवि ने,
समय चक्र के इस दर्पण से,
कभी शिकायत करी न छवि ने,
सपनों के इस ताजमहल में, अब तो जाले ही जाले हैं ...
मैंने सदा फूल बाँटे हैं, शूल बिछे क्यों मेरे पथ में,
प्रेम पताका लिए हाथ में, सदा चला कर्मों के रथ में,
शायद पूरे हो जाएं जो आँखों ने सपने पाले हैं ...

गीत–नयनों में घिर रही घटनायें कम्पन

– डॉ अंजू गोयल
मो.– 9152886691

नयनों में घिर रही घटनायें, कम्पन भी बेजोड़ रहा है।
जाने क्यों ये बेसुध सा मन, स्मृतियों को जोड़ रहा है।
साँसें हैं मालिक चोरों की, तन की चमक चुराने वाली।
फिजा न कम यारों इस जग में, हँसी समूल भुलाने वाली।
मुरझाए फूलों से सहसा दर्पण भी मुख मोड़ रहा है।
मेरा जीवन है बंजारा आँसू–आँसू आवारा है।
नफरत की है आग यहाँ बस नेह तरसता बेचारा है।
काया का साथी है साया फिर क्यों दामन छोड़ रहा है।
रहे भीड़ में सदा अकेले, सैज सजाकर सपनों की।
हर सपने की टूटन में थी परछाई बस अपनों की
मेरा मन है मोम सरीखा जग पत्थर सम तोड़ रहा है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ग़ज़ल

– डॉ. शिव ओम अम्बर
फर्रुखाबाद, मो.– 9415333059

(1)

मानस का स्वाध्याय रही माँ, श्रद्धा का पर्याय रही माँ।
संध्या तुलसी पे सँझवाती, प्रातः नमः शिवाय रही माँ।
विघ्नों को प्रशमित करने के, सौ–सौ सिद्ध उपाय रही माँ।
आशीषों, मंगल–वचनों का, सम्मूर्तित समुदाय रही माँ ।।

(2)

अग्नि के गर्भ में पला होगा, शब्द जो लोक में ढला होगा।
दृग मिले कालिदास के उसको, अश्रु उसका शकुन्तला होगा।
है सियासत विराट–नगरी–सी, पार्थ इसमें बृहन्नला होगा।
दर्प ही दर्प हो गया है वो, दर्पनों ने उसे छला होगा।
भाल कर्पूरगौर हो बेशक, गीत का कंठ साँवला होगा।

गीत

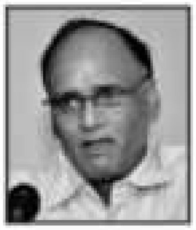

– राम सनेहीलाल शर्मा 'यायावर'
86, तिलक नगर, फिरोजाबाद
मो.– 9917796897

केसर, चन्दन, पानी के दिन, लौटे चूनर धानी के दिन
झाँझें झंकृत हो जाती थीं, जब मधुर मृदंग ठनकते थे
जब प्रणय–राग की तालों पर, नपुर अनमोल खनकते थे
साँसें सुरभित हो जाती थी, मोहिनी मलय की छाया में
कुंजों पर मद उतराता था, फागुन के मद की माया में
उस महारास की मुद्रा में, कान्हा राधा रानी के दिन....
कटु नीम तले की छाया जब, मीठे अहसास जगाती थी
मेहनत की धूप तपेतन में, रस की गंगा लहराती थी
वे बैन, सैन, वे चतुर नैन, जो भरे मौन बतराते थे
अधरों के महके जवाकुसुम, बिन खिले बात कह जाते थे
मंजरी, कोकिला, अमलतास, ऋतुपति की अगवानी के दिन....
फैली फसलों पर भोर–किरन, जब कंचन बिखरा जाती थी
नटखट पुरवा आरक्त कपोलों का घूँघट सरकाती थी
रोली, रंगोली, सतिये थे, अल्पना द्वार पर हँसता था
होली, बोली, ठिठोलियाँ थीं, प्राणों में फागुन बसता था
फिर गाँव गली चौबारों में, खुशियों की मेहमानी के दिन....

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गीत

– डॉ. कुमार विश्वास
गाजियाबाद, मो.– 8130988211

इतनी रंग बिरंगी दुनियाँ, दो ऑंखों में कैसे आये।
हमसे पूछो इतने अनुभव, एक कण्ठ से कैसे गाये।
ऐसे उजले लोग मिले जो, अंदर से बेहद काले थे
ऐसे चतुर मिले जो मन से, सरल सहज भोले भाले थे
ऐसे धनी मिले जो कंगालों से भी ज्यादा रीते थे
ऐसे मिले फकीर जो सोने के घट में पानी पीते थे
मिले परायेपन से अपने अपनेपन से मिले पराये
हमसे पूछो ....
जिनको जगत विजेता समझा, मन के द्वारे द्वारे निकले
जो हारे–हारे लगते थे, अंदर से ध्रुव तारे निकले
जिनको पतवारें सौंपी थी, वे भँवरों के सूदखोर थे
जिनको भँवर सोच डरता था, आखिर वही किनारे निकले
वे मंजिल तक क्या पहुँचेंगे, जिनको खुद रस्ता भटकाये

गीत

– डा. रुचि चतुर्वेदी
1049, सेक्टर 4 आर, आवास विकास कॉलौनी,
बोदला, आगरा, मो.– 9219615487

नहीं सार समझा है जब वेदना का, लो संवेदना के ये स्वर किसलिए है।
हलाहल ही जब पी लिया ऑंसुओं का, तो ऑंखें ये भावों से तर किसलिए है।
लिखा पूर्व में उद्धरण इस कथा का, हमें पात्र इसका बनाया ही क्यों था।
स्वयं खण्डहर अपने घर को बनाया, रंगोली से ऑंगन सजाया ही क्यों था।
कथा दर्द की लिख रहे हो अगर तो, कलम के ये करतब प्रखर किसलिए है।
हमें हो सिखाते इधर जाईये मत, स्वयं क्यों उधर जा रहे हो बताओ।
हमें छंद गाने से रोका मगर अब, स्वयं गीत क्यों गा रहे हो बताओ।
सुनाते रहे जाने क्या–क्या सभी को, मगर मौन धारे अधर किसलिए है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गीत

– प्रवीन कुमार पाण्डेय 'प्रज्ञार्थू'
45, बापू कुटी, इटौरा,
मटसैना, मो.– 9808486844

इक जोगी खड़ताल उठाकर अपने स्वर में गाये, अपनी माँटी के वंदन में गीत अनोखा गाये।
गाये बस गाता जाये फिर फिर मुड़कर यह गाये, मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
समर्पण है परवाने का भ्रमर की प्रीत निराली है, हार है जहाँ बहुत प्यारी, हार की जीत निराली है।
दूसरे के दुःख में रोना, जहाँ की रीत निराली है। स्वर्ग की उपमा या जीवित उपमान कहूँ।
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
फसल खुशहाली की बो कर, सहेजे हैं अपनापन गाँव।
घनी शीतल प्यारी प्यारी, पुराने पीपल वाली छाँव।
कहीं प्रियजन के आने का, शकुन कह देने वाली काँव।
किसी का अल्हड़पन या फिर मुस्कान कहूँ, मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
बहन के ठाठ बड़े न्यारे, बड़े भाई का दुलराना, बहू के प्रथम आगमन पर, सास का जी भर इतराना ।
पिता की देख चढ़ी भौंहें, सभी बेटों का कतराना, बुआ का समझाना भाभी का मान कहूँ।
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
माँ की ममता के आँचल से, सुनो सीखा है प्रेम यहाँ।
नारियों ने खुद ही लड़कर, बचाया है अस्तित्व जहाँ।
देश की खातिर जो अपना, लुटा दे बचपन और कहाँ।
लाड़ यशुदा का पन्ना का बलिदान कहूँ,
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
यहाँ तारों के साये में, सुनी इक राम कहानी है।
उर्मिला का कोमल उत्सर्ग, लखन की भक्ति सुहानी है।
प्रतीक्षा शबरी मैया की, निषाद की प्रीत रुहानी है।
सिया का धीरज या रघुवर की आन कहूँ।
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
वायु से बात करें जिसके, अश्व देखो जीतें संग्राम।
शिवाजी हाडारानी के, सभी को याद अभी तक नाम।
शेर के दाँत अभय होकर, गिने बालक हर दिन हर शाम।
भगत की माता या बिस्मिल की जान कहूँ।
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
अत्रि भृगु और दधीचि महान, ध्यान करते रहते अविराम।
गार्गी और घोषा जैसी, जहाँ जन्मीं विदुषी अभिराम।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

सती सावित्री अनुसुइया, कहूँ मैं शत् शत् बार प्रणाम।
योगियों की धरती रसिकों की खान कहूँ
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
दिव्य ऋषि सुश्रुत का संज्ञान, जिन्हें था शल्य चिकित्सा ज्ञान।
चरक और धन्वन्तरि पर भी, सुनो हम क्यों न करें अभिमान।
आर्य भट्ट के जैसे पूर्वज, जिन्होंने लिया शून्य को जान।
दशमलव की जननी अग्नि की उड़ान कहूँ।
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
पंत ने प्रकृति चित्र खींचा, ओज दिनकर ने भर डाला।
निराला और महादेवी, मदिर बच्चन की मधुशाला।
सोम का हिन्दी वंदन और सरस नीरज की कृतिमाला।
सूर तुलसी मीरा कबिरा रसखान कहूँ
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।
जहाँ खोलीं मैंने आँखें, जहाँ रहकर जीना आया।
बोलने का ढँग भी मुझको, जहाँ चिड़ियों ने सिखलाया।
जहाँ की मिट्टी से देखो, बाहुबल है मैंने पाया।
अर्थ प्रज्ञा का या माँ का वरदान कहूँ।
मैं तुझे हिन्दुस्तान कहूँ या कि अपनी पहचान कहूँ।

गीत

– सर्वेश अस्थाना
3/30, विपुल खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ
मो.– 9415303060

तुमने यूँ मुस्कान बिखेरी तन मन महक गया
आँखें बंद पलक पर, आहट देकर तुम आये, शायद स्वप्न सत्य करने को अंक सिमट आये।
और तुम्हारी एक छुवन से, तन मन लहक गया, तुमने यूँ मुस्कान बिखेरी उपवन महक गया।
धवल चाँदनी की शीतलता मन झकझोर गयी, सपनों के सागर में सुधि की गागर बोर गई।
एक पपीहा स्वाति बूँद पा फिर से चहक गया, तुमने यूँ मुस्कान बिखेरी उपवन महक गया।
तट ने जी भर खूब सुना, लहरों की बातों को, तारों ने लुक छिपकर देखा पिघली रातों को।
दूर पहाड़ों से बादल का आँचल बहक गया, तुमने यूँ मुस्कान बिखेरी उपवन महक गया।
प्यास अमा की दूर हो चली पूनम सी आई, और लालिमा की आहट भी भरती अँगड़ाई।
डाल डाल पर ज्यों प्रभात का सूरज दहक गया, तुमने यूँ मुस्कान बिखेरी उपवन महक गया।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

माँ की नजर में

– शारदा प्रसाद तिवारी 'पारस'
शुभ ट्रेवल्स मिशन चौक, कटनी
मो.– 7440884998

कल फोन आया था घर से, सारा दर्द छुपाकर। मैंने माँ की नजर से,
बस इतना ही कहा कि अच्छा हूँ। वो पल में जान गई, कि अब भी बच्चा हूँ।
तपाक से बोली तू अच्छा नहीं है, तब मैंने कहा अब बच्चा बच्चा नहीं है।
खुशियों की अहमियत, समझने लगा है, दु:खों को छिपाकर के अब हँसने लगा है।
खुद रोकर हँसाने का, अब मुझमें जुनून है, तेरी खुशी देखकर ही, मुझको भी सुकून है।
कैसे कह दूँ तुझसे, दिन रात पिस रहा हूँ, चक्की के दो पाटों में, किस कदर घिस रहा हूँ।
क्या करेगी आखिर तू, कहीकत को जानकर, तू भी रह खुद वहाँ, मुझे खुश मानकर।
वास्तव में तेरा बच्चा, अब भी बच्चा ही है, तेरी ही तरह वो भी, सच्चा ही है।
याद है मुझे आज भी, वो झूठ के नजारे, दूध पिला के मुझको, तूने पानी में दिन गुजारे।
इस दर्द को सहना, तूने ही सिखाया है, किसी से कुछ न कहना, तूने ही सिखाया है।
तूने मेरी परवरिश में, जिस कदर दिन निकाले, बस वैसे ही हूँ आज, मैं कर्तव्य को संभाले।
बस वैसे ही हूँ आज, मैं कर्तव्य को संभाले।

गीत

– अशोक चारण
225, हरीओम कॉलोनी, अजमेर रोड, केकड़ी,
अजमेर, मो.– 9928490303

बस्तियाँ खड़ी हुई अंधेर के लिए, कोई आँख ना बची मुंडेर के लिए।
आँसू पसीना बन के बह गया बहाव में, राम ना बैठे दिखे निर्धन की नाव में।
मुट्ठियों के वास्ते जलती है उँगलियाँ, फूलों की पाँखुरी को भी खलती है तितलियाँ।
चूड़ी की तरह फूटती रही है जिन्दगी, जिन्दगी को लूटती रही है जिन्दगी।
बिकता हुआ सिन्दूर है ये प्यास के लिए, मकरंद की नीलामियाँ मधुमास के लिए।
मन के गुलाम हो गए सन्यास के लिए, कामना छली गई संत्रास के लिए।
ख्वाबों के सौदे हो रहे, विश्वास के लिए, हर बार ही धरा बँटी आकाश के लिए।
माला के जैसे टूटती रही है जिन्दगी, जिन्दगी को लूटती रही है जिन्दगी।
निभा रहे हैं पर कोई उमंग नहीं है, धागे में है उड़ान पर पतंग नहीं है।
कदम का है मगर मनों का संग नहीं है, तस्वीर बन रही है मगर रंग नहीं है।
दिलों की आग पानी पा के बन गई धुँआ, कुछ भी नहीं दिखता बताइए ये क्या हुआ।
कैदी की तरह छूटती रही है जिन्दगी, जिन्दगी को लूटती रही है जिन्दगी।
तपन का बादलों पे अब असर नहीं रहा, पंछियों के वास्ते शजर नहीं रहा।
जिस्म में है दिल मगर वो धड़कनें कहाँ, इश्क के शहर में अब वो तड़पनें कहाँ।
अल्फाज की दुनियाँ में कोई जोश अब कहाँ, तकरीर और मजलिसों में होश अब कहाँ।
आपस में देखो रूठती रही है जिन्दगी, जिन्दगी को लूटती रही है जिन्दगी।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गज़ल

– डॉ कुअर बेचैन
गाजियाबाद, मो.– 9818379422

(1)

दो चार बार हम जो कभी हँस–हँसा लिए, सारे जहाँ ने हाथ में पत्थर उठा लिए।
रहते हमारे पास तो ये टूटते जरूर, अच्छा किया जो आपने सपने चुरा लिए।
चाहा था एक फूल ने तड़पे उसी के पास, हमने खुशी के पाँवों में काँटे चुभा लिए।
सुख, जैसे बादलों में नहाती हों बिजलियाँ, दुःख, बिजलियों की आग में बादल नहा लिए।
जब हो सकी न बात तो हमने यही किया, अपनी गजल के शेर कहीं गुनगुना लिए।
अब भी किसी दराज में मिल जायेंगे तुम्हें, वो खत जो तुम्हें दे न सके लिख लिखा लिए।।

(2)

प्यासे होंठों से जब कोई झील न बोली बाबू जी, हमने अपने ही आँसू से आँख भिगो ली बाबूजी।
भोर नहीं काला सपना था पलकों के दरवाजे पर, हमने यों ही डर के मारे आँख न खोली बाबूजी।
दिल के अंदर जख्म बहुत हैं इनका भी उपचार करो, जिसने हम पर तीर चलाए मारो गोली बाबूजी।
हम पर कोई वार न करना है कहार हम शब्द नहीं, अपने ही कंधों पर है कविता की डोली बाबूजी।
यह मत पूछो हमको क्या–क्या दुनिया ने त्यौहार दिए, मिली हमें अंधी दीवाली गूँगी होली बाबूजी।।
सुबह सवेरे जिन हाथों को मेहनत के घर भेजा था, वही शाम को लेकर लौटे खाली झोली बाबूजी।

सजल

– विजय राठौर
जांजगीर, चाम्पा (छत्तीसगढ़)
मो.– 9826115660

हमें देखकर क्यों पुकार नहीं कि व्यवहार अच्छा तुम्हारा नहीं ।
गए हो भले तुम हमें छोड़कर, ह्रदय से तुम्हें पर बिसारा नहीं।
न जाने किसे तुमने आवाज दी, हमारे तरफ तो इशारा नहीं।
जहाँ हमने झेला तिरस्कार है, गए उस गली में दुबारा नहीं।
कभी तो तुम्हें याद आएंगे हम, अभी प्रीति का दाँव हारा नहीं।

गज़ल

– ऋतेश मुकेश सुमन
नलकूप कॉलौनी के पास, आसफाबाद
मो.– 7500734002

पानी में तैरती ये मेरे खतों की लाशें, हाथ से गिरे होंगे, तूने बहाये थोड़े ही हैं।
जरूर फूलों के साथ ही आये होंगे ये, काटें मेरे हाथों में, तूने चुभाए थोड़े ही हैं।
पढ़े मैंने कोरे पन्ने तहरीर–ए–इश्क में, अक्षर नहीं, आँसुओं की गुस्ताखी होगी, तूने मिटाये थोड़े ही हैं।
मकानों से उठता धुआँ मुहब्बतों की साजिश है, खुदकुशी की होगी इन्होंने, तूने जलाये थोड़े ही हैं।
मरहम क्यों लगाता है तू अब मेरे जख्मों पर, तेरे दिए हुए ही हैं, खुद हमने बनाये थोड़े ही हैं।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गीत

– उमा निर्झर दीक्षित
457, एस.डी. फील्ड, इटावा– 206001
मो.– 9412408459

चाँद भी रैन भर मुस्कराता रहा, वो निशा संग प्रणय गीत गाता रहा।
चाँदनी रात भर खूब सजती रही, वो निशा के गले हँस के लगती रही।
चांद भी खूब सौहरत लुटाता रहा, कुमुदिनी रैनभर खूब खिलाती रही
चाँद से खूब बातें वो करती रही, चाँद भी खूब नजरें मिलाता रहा।
रातरानी चमेली भी खिलती रही, और शबनम वहाँ पर महकती रही,
पुष्प हर एक खुशबू बहाता रहा, घास मखमल पे शबनम बिखरती रही।
रात भर चाँदनी सी चमकती रही, चाँद दीदार अपना कराता रहा।

सड़क पर एक आदमी

– अशोक बाजपेयी
मो.– 9811525653

वह जा रहा है, सड़क पर एक आदमी, अपनी जेब से निकालकर, बीड़ी सुलगाता हुआ धूप में–
इतिहास के अंधेरे, चिड़ियों के शोर, पेड़ों में बिखरे हरेपन से बेखबर, वह आदमी ....
बिजली के तारों पर बैठे पक्षी, उसे देखते हैं या नहीं– कहना मुश्किल है,
हालांकि हवा उसकी बीड़ी के धुएं को, उड़ाकर ले जा रही है जहाँ भी वह ले जा सकती है ...
वह आदमी, सड़क पर जा रहा है, अपनी जिन्दगी का दुख–सुख लिए, और ऐसे जैसे कि उसके ऐसे जाने पर,
किसी को फर्क नहीं पड़ता, और कोई नहीं देखता उसे, न देवता, न आकाश और न ही,
संसार की चिंता करने वाले लोग, वह आदमी जा रहा है, जैसे शब्दकोष से,
एक शब्द जा रहा है, लोप की ओर ...
और यह कविता न ही उसका जाना रोक सकती है, और न ही उसका इस तरह नामहीन ओझल होना ...
कल जब शब्द नहीं होगा, और न ही यह आदमी, तब थोड़ी–सी जगह होगी,
खाली–सी, पर अनदेखी, और एक और आदमी, उसे रौंदता हुआ चला जाएगा।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गज़ल

– रवि पाल 'खामोश'
80, विनीत बिहार कॉलोनी,
महेरा चुंगी, इटावा, मो.– 8630111264

याद नस्तर चलाती रही रात भर, किस्त में जान जाती रही रात भर।
चाँद भी बादलों की हिफाजत में था, चाँदनी छटपटाती रही रात भर।
गीले बिस्तर पे करवट बदलती रही, माँ मुझे यूँ सुलाती रही रात भर।
झूठा वादा तेरा आज साबित हुआ, आह आँसू बहाती रही रात भर।
इश्क में हम तेरे मुबतिला यूँ रहे, जान जोखिम उठाती रही रात भर।
रात महफिल में जब सामना हो गया, आँख हमसे मिलाती रही रात भर।
जान खामोश की इश्क के दाँव पर, इश्कबाजी घुमाती रही रात भर।

गीत बसंती

– कन्हैया साहू 'अमित'
शिक्षक सुभाष वार्ड, भाटापार,
बलौदा बाजार (छ.ग.), मो.– 9200252055

बाँध बोरिया बिस्तर अपना, दुबक चला जड़काला।
अब बसंत आया अलबेला, दिखता नया निराला।
बाग बगीचे कान झुरमुटे, बरबस ही बौराए।
यौवन व्यापक यत्र–तत्र तब, राग बसंती गाए।
कामदेव युवराज स्वागतम्, स्वीकारो वरमाला।
अब वसंत आया अलबेला, दिखता नया निराला।
नई कोपलें नवल यौवना, खिलखिल खिलती कलियाँ।
भाँति–भाँति मकरंद फूल पर, झूमें भ्रमर तितलियाँ।
रस पीकर बहके फिरते हैं, जैसे मय का प्याला।
अब वसंत आया अलबेला, दिखता नया निराला।
आम्रमंजरी अरहर अलसी, अलि अरण्य अगुवाई।
सरसों सेंमल टेसू गेहूँ, सबमें नव तरुणाई।
महक–महक मद महुआ महके, मादकता मतवाला।
अब वसंत आया अलबेला, दिखता नया निराला।
बाँध बोरिया बिस्तर अपना, दुबक चला जड़काला।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गज़ल

– अवनीश त्रिवेदी 'अभय'
मोहरनिया, जहाँसापुर, सीतापुर
मो.– 7518768506

मिल के आपसे मेरी ये जिन्दगी सँवरती है, कर के गुफ्तगूँ तुमसे साँस ये महकती है।
वो खन–खन सभी सुनकर अब मदहोश हो जाते, हाथों में तिरे जब–जब ये चूड़ी खनकती है।
हर चमन खिल उठते हैं अब साथ तुमको पाकर, मेरे जिगर आँगन में जब भी तू टहलती है।
कब से दूर हो मुझसे मिलना अब मुनासिब हो, इक दीदार को मेरी आरजुयें मचलती है।
है क्या अदब लहजे में जिसके सब दिवाने हैं, अब उनके कहे लब्जों से खुशबुऐं बिखरती है।
दिल के तार बज उठते जब भी देखता उनको, बढ़ती भीड़ सड़कों पर जब भी वो निकलती है।
इक दीदार उस रुख का हर कोई सदा चाहे, दुखों को शकूँ देकर वो सूरत झलकती है।
जाता भूल मैं सब कुछ उनके पास आ कर के, जब भी 'अभय' नजरों से वो नजरें उलझती है।

गीत

– डॉ अजय अटल
कासगंज, मो.– 9027953540

हम हैं फूल कमल के, हम पर वैभव निर्मल जल के।
बोझ हमें मत कहना, हम इंसान हवा से हल्के।
हम अभाव के राजा, हम पर भाव ना राके जाएं।
पल भर में रो जाएं तो हम, पल भर में हँस जाएं।
चोट जरा सी लगे नयन की, गगरी छल छल छलके।
हम हैं फूल कमल के, हम पर वैभव निर्मल जल के...
कविताएं ये नहीं असल, अनुभव की वेद ऋचाएं।
इनको रखना याद किसी, दिन काम तुम्हारे आएं।
इन्हें रचा है हमने जीवन, के साँचे में ढल के।
हम हैं फूल कमल के, हम पर वैभव निर्मल जल के।
वात्सल्य का सागर अंधे, सूरदास ने भेंटा।
रामचरित रचकर तुलसी ने, सारा जगत समेटा।
सबको सुमन कबीरा बांटे, खुद काँटो पर चलके।
हम हैं फूल कमल के, हम पर वैभव निर्मल चल के।
कलाकार मरते दुनिया में, कला न मरती देखी।
इस झरने में सदा अमरता, झर–झर झरती देखी।
अटल मरेगा, नहीं मरेंगे, लेकिन गीत अटल के।
हम हैं फूल कमल के, हम पर वैभव निर्मल जल के।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गज़ल

– पूरन चन्द्र गुप्ता
इन्द्रा नगर, जलेसर रोड,
फिरोजाबाद, मो.– 9997181967

जिन्दगी है सुहाना सफर आइये, मुस्करायें चलो अब इधर आइये।
जो ये पल जी रहे हैं यही सच हैं पल, इन पलों में चहकते न जर आइये।
दर्दों गम तो लगे ही रहेंगे सदा, गुनगुनायें कोई इक बहर आइये।
सादगी से रहो जैसे रहते हो तुम, हो हो जायेगा इक दिन असर आइये।
अब कहाँ जायेंगे छोड़कर हम इसे, है भला हमको अपना शहर आइये।

सच्चा सा प्यार का घर है

– डॉ. निधि गुप्ता
लेबर कॉलौनी, फिरोजाबाद
मो.– 9259149537

सच्चा सा प्यार का घर है।
डर है नफरत न खड़ी हो जाय
लोग प्रपंच के फंदे में,
कहीं मेरे अपने जकड़ न जाय।
विश्वास की बुनियाद पर,
शक की दीम न लग जाय।
बुरी नजर पड़ौसी की,
कहीं मेरे अपनों को न लग जाय।
खून पसीने से सींचे दरख्तों को,
फिर कोई सुनामी न बहा ले जाय।
इनसानी रंजिशों की बू,
कहीं मेरे अपनों को न लग जाय।
खुशियाँ है इनके हिस्से में,
प्यार व्यापार न हो जाय।
आदमी–आदमी से जलता है,
यह जलन कहीं अपनों को न लग जाय।
निधि प्रेम की मेरे घर में।
लूट न कोई सौदागर ले जाय,
गिरगिट जैसे बदलते रंग।
ये रंग कहीं मेरे अपनों पर न चढ़ जाय।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

संकल्प से सिद्धि

– सूबेदार पाण्डेय कवि आत्मानन्द
ग्राम– जमसार, पोस्ट– सिनधोरा बाजार,
वाराणसी, मो.– 6387407266

बया एक पक्षी, इस सृष्टि का अनोखा इंजीनियर, जिसकी रचना शीलता की नकल अभी तक मानव करने में असमर्थ है, वह मात्र प्रकृति का एक अदना सा जीव ही नहीं एक संवेदनशील प्राणी भी है। जिसके हृदय की पीड़ा की अनुभूति ए.सी. रूम में बैठ नहीं प्रकृति के सानिध्य में बैठ कर ही की जा सकती है ऐसी रचनाएं हिन्दी साहित्य को समृद्ध ही नहीं करती। बल्कि पाठकों को संवेदना की अनुभूति के उच्च शिखर पर स्थापित कर देती है। रचनाकार की रचनाशीलता का आप भी रसपान करें।

नील गगन की छांव में, सघन वृक्ष की ठांव में।
वो तिनका तिनका चुनती थी, सुन्दर नीड़ बनाने का वह, ताना बाना बुनती थी ।।1।।
दिन भर कठिन परिश्रम करते, हार नहीं मानी थी वह।
अपना परिवार बसाने का, निश्चय मन में ठानी थी वह।
जाड़े वर्षा में भीगी थी वह, गर्मी तन मन झुलसाती थी।
पर उसकी राह डिगा न सकी, सुन्दर घोषला बनाती थी।
सपनों से प्यारा नीड़ देख, वह मन ही मन मुस्काई थी।
बैठ घोषलों में अपनी, वो राग–बिहाग सुनाई थी ।।2।।
उस नीड़ के भीतर अण्डों से, दो सुन्दर बच्चे जाये थे।
उन्मुक्त गगन में उड़ने की, ले चाह पंख फैलाये थे।
पर हाय विधाता क्या लिखा भाग्य में,
ये दिन कैसा है आया। नीड़ उजाड़ा बच्चे मारा,
बिल्ले ने तांडव दिखलाया। पंख नोच खा गया उन्हें, फिर खोंखों करता चिल्लाया ।।3।।
घर बार उजड़ने की पीड़ा, उसके मन में समाई थी।
वह कमजोर निरीह प्राणी, कुछ भी न कर पाई थी।
बच्चों की अल्पायु मौत पर, उसकी ममता रोइ थी।
कुछ करना उसके बस में न था, वह अपनी सुध–बुध खोइ थी।
बस दुख के पलों की साक्षी बन, रो–रो के सांझ बिहान किया।
टूटे नीड़ से ममता छूटी, टूटा दिल ले प्रस्थान किया।
दुःख आता है दुःख जाता है, पर हिम्मत अपनी मत हारो।
उम्मीद का दामन मत छोड़ो, फिर उड़ो गगन में पंख पसारो।
जाते–जाते संदेश दे ई, उम्मीद का दामन थाम लिया।
विपरीत परिस्थितियों से लड़ने का, उसने नव संकल्प लिया।
उस निरीह प्राणी को देखो, उसका एक ही नारा है।
संकल्प से सिद्धि मिलती है, सबका यही सहारा है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गॉंव

– डॉ. बीना सिंह
दुर्ग, छत्तीसगढ़, मो.– 9425280673

एहसास आज भी जिंदा है, गॉंव को छोड़ आने पर।
अब तो यह परिंदे नहीं दिखते, हमारे गॉंव वापस जाने पर।
ओ नदी पोखर कुवा पनघट, शाम सवेरे जहाँ होता जमघट।
सब कुछ सुना सुना लगता है, यहाँ शहर आ जाने पर।
अमवा इमली बरगद पीपल, नीम की छैया की ठंडक।
ख्वाब भी बेगाने हुए हमसे, एसी कूलर में सो जाने पर
झूठी शान शौकत के संग है, होठों पर बनावटी मुस्कुराहट
कफन सा ओढ़ लिया जिन्दगी को, हमने हमारे बेगैरत हो जाने पर।
यह क्या हो गया है हमारे सोच और हमारे दिमाग को।
जुबां पर ताले पड़ गए है, हमें जाहिल गवार कहे जाने पर

डर रहा है आदमी

– सोनी सुगन्धा
रोड नं 1, 15/59, एग्रिको,
जमशेदपुर
मो.– 9507808912

जाने कैसा खौफ है क्यों डर रहा है आदमी, जो नहीं करना था वो सब कर रहा है आदमी।
फूल जैसी ख्वाहिशों को जिंदा रखने के लिए, उम्र भर कॉंटों भरा बिस्तर रहा है आदमी।
एक पल रुक कर कहीं पर भी वो दम लेता नहीं, जिंदा रहने के लिए भी मर रहा है आदमी।
आदमी ही रास्ता था आदमी मंजिल भी था, कल तलक तो मील का पत्थर रहा है आदमी।
आदमियत के उसूलों पर गुजारी जिन्दगी, आज के इंसानों से बेहतर रहा है आदमी।
नफरतों से दूर का रिश्ता नहीं रखता था ये, सब के दु:ख में प्रेम का आखर रहा है आदमी।
वक्त के फुटपाथ पर सोया है चादर तानकर, एक मुद्दत तक यहाँ बेघर रहा है आदमी।
मानवी संवेदनायें सब के हित में थी यहाँ, यानी हर इक प्रश्न का उत्तर रहा है आदमी।
प्रेम दर्पन की सुरक्षा 'सोनी' हो हर हाल में, हालांकि पाषाण था पत्थर रहा है आदमी।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ग़ज़ल

– अनुराधा रावत
शिवपुरी कॉलोनी, गली नं. 1, एटा रोड,
टूण्डला चौराहा, फिरोजाबाद, मो.– 7500687121

किताबों की जगह बस्ते में मासूमों के नस्तर देखकर
हैरान हूँ मैं फूल से हाथों में पत्थर देखकर
है कौन वो जो पाठ नफरत का पढ़ाते हैं
डर लग रहा है ऐसे हथियार घर–घर देखकर
क्यूं कभी बेटे की आँखें नम नहीं होती
माता–पिता की खुश्क आँखों में समंदर देखकर
बददुआएं दुश्मनों ने दी बहुत लेकिन
हैरा हैं बुजुर्गों की दुआओं का असर देखकर
ऐ खुदा मुझको इन्हीं हालात में रखना
वो अगर खुश है मेरे हालात बदतर देखकर
उसको देना फूल 'राधा' बेसबब निकला
सोचती हूँ आज उसके हाथ खंजर देखकर।।

दो छन्द

– पूजा बंसल
7, मोनापुरम, गणेश नगर,
फिरोजाबाद– 283 203
मो.– 9927083142

(1)

देश करे मनुहार जनता से बार–बार, भोग रहे सुविधा तो फर्ज भी निभाइए।
देश में जहर घोल देशद्रोही शब्द बोल, आगजनी लूटपाट रार न मचाइए।
तिल का बना के ताड़ कर रहे खिलवाड़, अस्मिता से देश की जो उनको भगाइए।
उगलें जो आग छुपे जहरीले नाग आज, उनसे समाज और देश को बचाइए।

(2)

डालियों पे खिले पात पुलकित हुए गात, ऋतुओं का राजा देखो आ गया बसंत है।
मादक पलाश लाल बौरा रहे हैं रसाल, छटा सरसों की फैली भा गया बसंत है।
टेसू का पहन हार धरा ने किया श्रृंगार, गली गली द्वार–द्वार छा गया बसंत है।
प्रेम की बहे तरंग सिहर उठे अंग–अंग, रसिकों के हिय को रिझा गया बसंत है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

सात फेरों का चक्कर

– देवेन्द्र कुमार मिश्रा
बाबू लाईन,परासिया रोड,
छिन्दवाड़ा, मो.– 9425405022

हल्का सा अमृत देकर जिसने
जिन्दगी भर जहर पिलाया है
वो घरवाली और उसका बाप कहलाया है
सात फेरों के चक्कर में जिसने खुद को उलझाया है
उसने फिर जीवन भर चक्कर ही खाया है
दफ्तर में साहब से ठनती
घर में मेमसाहब से ठनती
घर में मेमसाहब से
एक दिन हमने कह दिया– 'मुक्ति दो'
वे बोली– 'हम कोई अंग्रेज नहीं जो मुक्ति दे जायें और फेरों के चक्कर तो ऐसे लगा रहे थे जैसे किसी की बीबी भगा रहे थे क्या गाड़ी छूट रही थी?'
हमने कहा– 'छूट जाती तो अच्छा था इस तरह गृहस्थी के सागर में तो न खोता
बस अब आप इस झंझट से निकालिये'
वे बोली– 'अब तो आप तभी निकलेंगे जब आपका दम निकलेगा और यदि शास्त्रों में लिखा सच है तो मैं और मेरी गृहस्थी का शेर सात जन्म तक निगलेगा।'
सात जन्म की बात सुनकर चक्कर आ गया। अरे ये सात फेरे तो सात जन्म खा गया।

तुम इतिहास नहीं हो

– डा. अजिर बिहारी चौबे
प्रमुख सम्पादक, एसो. प्रोफेसर मनो.
लेबर कॉलौनी, फिरोजाबाद
मो.– 9412426341

मैं
अभी भी खड़ा हूँ
उसी चौरास्ते पर
जहाँ से तुमने अग पथ
चयनित किया था
भविष्य हेतु।

यहाँ पर खड़ा
वह वट वृक्ष
जिसके ठण्डे साये में
हमने गर्मी की
उष्णता को
सहज होकर झेला था
बरसते सावन में
बारिश की बूँदों और
ठण्डी फुहारों से
यहीं
अध–भीगे
घन्टों बतियाये थे हम।

और कभी–कभी
गुम–सुम निहारा था
दूर जाते उस रास्ते को
जिस पर चले गए तुम!
पर मैं तब से
लगातार खड़ा हूँ यहाँ
एक आस लिए/कि
एक दिन तुम भी लौट आओगे
उसी बस की तरह जो यहाँ से रोज
सुबह जाती है
और शाम को
लौट आती है।

सोचता हूँ
तुम पुनः अवतरित होगे
उस पखेरू की तरह
जो हर बार
सर्दियाँ यहीं बिताता है।

काश!
तुम इतिहास ही होते
सुना है
इतिहास भी
स्वयं को
दोहराता है!!

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ग़ज़ल

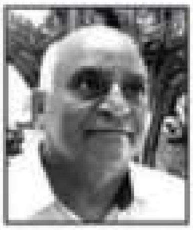

– कमल किशोर राजपूत 'कमल'
सन्हिता कास्टले, सर सी.वी. रमन नगर,
बैंगलोर– 560 093
मो.– 9845173442

अमीरी में गरीबी की महक, गर याद आ जाए ।
किसी का दिल कहीं तड़पे सिसक, गर याद आ जाए ।
अना की शाख़ जब काटी कभी मुड़कर नहीं देखा।
किसी ने याद दिलवाया तनक, गर याद आ जाए।
कभी झूठी सदाकत का, तमाशा तुम नहीं करना।
फकीरी हो अगर सच्ची झलक, गर याद जा जाए।
कबीरा ने कहा हमको वही हम भूल जाते हैं।
हकीकी में हबीबी की कसक, गर याद आ जाए।
वही सरगम वही बंदिश गजल ही याद रहती है।
अकेले खिलखिलाने की खनक, गर याद आ जाए।
लहू क्यों लाल है सबका, करिश्मा है ये लाफानी।
किसी नजदीक रिश्ते की भनक, गर याद आ जाए।
खिले तुम गर्दिशों में, फिर बताओ उसको क्यों भूले,
कमल को फिर सुबह शब की ललक, गर याद आ जाए।

ग़ज़ल

– चाँद शेरी
के–30, आई.पी.आई.ए. रोड–1
कोटा– 324005, मो.– 9829098530

राही बैठे लुट कर कितने, रहज़न निकले रहबर कितने ।
पूछे उस कातिल से कोई, जालिम काटेगा सर कितने ।
ये फिकरे – बाज़ी रहने दो, मारोगे अब कंकर कितने ।
उछले – कूदे फिर नाचे जो, संसद में थे बंदर कितने ।
हैरां हैं मन्दिर – मस्जिद भी, उनकी ख़ातिर ख़न्जर कितने ।
सोने–चाँदी की दुनिया में, असली निकले ज़ेवर कितने ।
'शेरी' इन जख़्मों से पूछो, हम पर बरसे पत्थर कितने ।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

सारी मानवता की जननी

– राकेश कुमार पाण्डेय
भारत बुक स्टोर के पास
एलवल पुलिस चौकी, आजमगढ़
मो.– 9984430385

नारी है पूजनीय जग में, विश्वास पंथ पद सेवी है,
सारी मानवता की जननी, सर्वज्ञ ज्ञान की देवी है।।
मिट्टी का कण कण गंधित हो, कोना कोना मुस्काता है।
जब फूल खिले कोई अँगना, मन भ्रमर गीत कुछ गाता है।
बेटी बनकर किलकारी जब घुटनों के बल डोल होगी।
पापा की सुनते ही आवाज सबसे पहले बोली होगी।
पर एक पिता का चित नित्य, नव नूतन सपने बुनता है।
जब विवश निगाहें करुणा की, गलियों में दौड़ लगाती हैं।
तब दान रूप दहेज तिमिर, अपने आँचल में पाती है।।
क्या यही कथानक अब तक है, जो चला आ रहा वर्षों से।
हम जितने सभ्य बने दिखते, बदलाव नहीं है अरसों से।
नारी की पीड़ा का प्रतिफल, नर–तनधारी सह लोगे क्या?
नारी यदि जग से रूठ गई, तब एकाकी रह लोगे क्या?
इस स्वार्थ भरे मन से जब तक धनलोभ नहीं जा पाएगा।
तब तक नारी के प्रति नर का सद्भाव नहीं आ पाएगा।

गज़ल

– डॉ. अनिल गहलौत
मथुरा, मो.– 9412336036

बहुमत का लड्डू मिले, सबकी थी यह चाह ।
खेल नहीं था, था रुपा, कुर्सी का शुभ ब्याह ।
था विपक्ष का मूड पर, दिखा समर्थन श्रेय ।
तब जल्दी से दौड़कर, किया जा रहा जो प्रेय।।
किन्तु खेल से पूर्व ही दे गच्चा भरपूर ।
उतर मंच से कूदकर, भाग गया लंगूर ।।
ऐसा भी हो जायेगा, था न उन्हें अनुमान ।
थू–थू होगी इस तरह, थे इससे अनजान ।।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कुर्सियाँ

– भगवान दास जैन
बी–105, मंगलतीर्थ पार्क, कैनाल के पास,
जशोदा नगर रोड, मणिनगर (पूर्व), अहमदाबाद (गुजरात)

क्या–क्या न आज रंग दिखाती हैं कुर्सियाँ, रंगत को गुदगुदा के रुलाती हैं कुर्सियाँ।
'परसा' था कल जो आज 'परसरामजी' हुआ, जर्रे को आफ़ताब बनाती हैं कुर्सियाँ।
जम्हूरियत को मिस्ले तनायफ में आजकल, दरबारे आम तक में नचाती हैं कुर्सियाँ।
इनमें फँसा जो दीन औ, दुनिया से वो गया, इस दर्जा आदमी को गिराती है कुर्सियाँ।
वादे बफ़ायें क़समें, भुलाकर ये बद् दिमाग, हर आमजन पे रौब जमाती हैं कुर्सियाँ।
पहले आवाम को ये हसीं ख़्वाब और फिर, भर दोपहर में तारे दिखाती हैं कुर्सियाँ।
सारे उसूल तोड़ के जो वक्त आ पड़े, कमज़र्फ को भी सर पे बिठाती हैं कुर्सियाँ।
ग़ैरत न कोई शर्मो हया इनमें ढूँढ़िए, जलता हो मुल्क जश्न मनाती हैं कुर्सियाँ।
मज्बूर खुदकुशी पे ये पहले करें जिसे, मैयत को फिर उसी की सजाती हैं कुर्सियाँ।
खुद ही सफ़ेद चोर हैं पर बनके नाजदार, गुल चोर–चोर का, ये मचाती है कुर्सियाँ।
नीलामी–ए–वतन की है, साज़िश–सी होशियार, बोली ये चुपके–चुपके लगाती हैं कुर्सियाँ।
माँ भारती के लाड़लो, जागो कि अब यहाँ, दामन में दाग़ माँ के लगाती हैं कुर्सियाँ।

गीत

– गीता विश्वकर्मा 'नेह'
क्वाटर नं. 184–बी टाइप, सेक्टर 1,
बालको नगर, जिला–कोरबा (छ.ग.), मो.– 9926623854

ज्ञानी ध्यानी तर्कवादियों के सँग नहीं पटी। यार फकीरी अपनी फितरत थोड़ी हटी–हटी।।
हम अनुकूल हवाओं में साँसे भरकर झूमें, अपनी चाहत की दुनिया में ही अनंत घूमें।
झगड़े टंटे निंदा रस विद्वेष त्याग कर हम, नैसर्गिक चीजों को मन की आँखों से चूमें।
दकियानूसी बातों से मति रहती कटी–कटी । यार फकीरी अपनी फितरत थोड़ी हटी–हटी।।
भूतकाल की गिरहा में जकड़े जो, क्या जाने, वर्तमान के मीठेपन से है वो अंजाने,
उर सलिला में तैर रहे हैं अपनी मस्ती में, गीतों की मदमस्त लहर के पागल दीवाने,
सुधियाँ मन की कश्ती में बैठी हैं सटी–सटी। यार फकीरी अपनी फितरत थोड़ी हटी–हटी।।
अनुरागी छंदों से बाँधे तो बँध पायेंगे, हाला गीतों गज़लों की पी–पीकर गायेंगे,
राग रागिनी सुर साधेंगे अधरों पर जब भी, मेरे जैसे प्रेमी ही सुन–सुनकर जायेंगे,
संवेदना बढ़ेगी कौन कहेगा घटी–घटी। यार फकीरी अपनी फितरत थोड़ी हटी–हटी।।
हम रस के आधीन नहीं रस खुद है मुट्ठी में, जीवन के सब पाठ पढ़े अनुभव की घुट्टी में,
जिनको जो कहना है कहते अपनी तो बीते, अच्छे लोगों से यारी दुष्टों से कुट्टी में,
अहं–वहम वालों की नज़रें देखें फटी–फटी। यार फकीरी अपनी फितरत थोड़ी हटी–हटी।।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गीत

– संतोष कुमार सिंह
'चित्रनिकेतन', बी–45, मोतीकुंज एक्सटेंशन,
मथुरा– 281001, मो.– 9456882131

मौसम ने करवट बदली है, शरद विदा भी हो ली।
क्यारी–क्यारी, उपवन–उपवन, सजी हुई रंगोली ।।
डाली पर कलियाँ मुस्काई, भँवरों का भी गुंजन ।
जिनके सुप्त पड़े थे उनके, विहँस उठे हैं तन–मन ।।
देख प्रकृति ने भी खेली है, रंगबिरंगी होली।....
मफलर, स्वेटर, कोट मुक्त अब, घर संदूक रजाई।
दिक्–दिगंत में नव उमंग है, उल्लासित तरुणाई ।।
पवन सुगंधें चला बाँटने, भर–भर अपनी झोली। ....
जो तरु बना दिगंबर कल तक, नव परिधान धरे अब।
सूरज ने भी अपने तेवर, थोड़े किए कड़े अब।।
कैसी झूम रही है सरसों, पहन बसंती चोली। ....
ओढ़ चुनरिया रंगबिरंगी, धरती माँ मुस्काए ।
मधु मक्खी मधुरस चुनती हैं, कोयल गीत सुनाए।।
प्रेम–अग्नि भड़काए रतिपति, करता फिरे ठिठोली। ....

बाल गीत

– सरिता रविन्द्र सिंघई 'कोहिनूर'
पूर्व पार्षद नगर पालिका परिषद
वार्ड नं. 14, मेन रोड,
वारासिवनी, बालाघाट (म.प्र.)
मो.– 9425822665

बोझ बन गया बस्ता मेरा
बोझ उतारो बाबू जी
हम बालक नन्हे से ज्ञानी
भविष्य सँवारो बाबू जी
बस्ते के जो वजन से मेरा
कांधा जब दुख जाता है
स्कूल न जाना पड़े मुझे
और घर ही बहुत सुहाता है
पापा कहते शाला जाओ
पढ़कर नाम कमाओगे
मम्मी कहती शिक्षा पाकर
वीर पुरुष बन जाओगे
हमने गुरुकुल में देखा था
बोझ नहीं रखवाते थे
वेद ऋचा उच्चारण करके
बच्चों को याद कराते थे
उच्च गहनतम शिक्षा मिलती थी
गुरुकुल के आँगन में
शरीर सौष्ठव तीरंदाजी,
अश्व सवारी सावन में
हर बालक अपनी क्षमता का
श्रेष्ठ प्रदर्शन करता था
मात–पिता अरु गुरु का अपने
दंभ सदा ही भरता था
कुल की संस्कृति मान मर्यादा
मन से पालन करते थे
मन इन्द्र को बस में रखकर
नहीं किसी से डरते थे
बनते थे पौरुष अरु ज्ञानी
जीवन उच्च बनाते थे
देश काल अरु प्रकृति भाषा
सब शिक्षा में पाते थे
कॉन्वेंट की शिक्षा प्रणाली
हमको रास न आती है
जो संस्कृति के मूल भुलाकर
आपस में लड़वाती है
प्रेम प्यार से हमको जीना
धर्म सदा सिखलाता है
क्या थी गंगा जमुनी पद्धति
देश हमें बतलाता है
मैकाले की शिक्षा पद्धति
हम पे न थोपो बाबू जी
हमें निकालो दलदल से अब
गुरुकुल दे दो बाबू जी
हम में साहस वीर पुरुष का
सही दिशा दिखलाओ जी
भारत के फिर स्वर्णिम युग को
फिर से लाओ बाबू जी
फिर से लाओ बाबू जी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

वसन्त गीत

– शैलेन्द्र 'असीम'
रोहुला मछरगावां, कुशीनगर
मो.– 7007947309

महकने लगे दिग–दिगन्त, शायद वसन्त आ गया
भाव उठे मन में अनन्त, शायद वसन्त आ गया
चुपके से बादल का घूँघट उठा कर,
अधखिली कली जैसी चाँदनी को पा कर
छेड़ रहा चाँद शीलवन्त, शायद वसन्त आ गया
महकने लगे ....
मानस के द्वार खुले मादक मधु–चोट से
कविता के आँगन में छन्दों की ओट से
झाँकते निराला और पन्त, शायद वसन्त आ गया
महकने लगे....
हल्दी और चन्दन के रंग खूब साजे
शहनाई गूँजी, वेदी पर विराजे
घर–घर गौरी व एकदन्त, शायद वसन्त आ गया
महकने लगे....
सौंपा है विधि ने किस भाग्यवान लेखे
बार–बार कनखी से रूप–कलश देखे
हार रहा मन का यह सन्त, शायद वसन्त आ गया
महकने लगे....
सरसों के फलों की चादर बिछाये
धरती ने गगन संग सपने सजाये
विरह–दु:ख 'असीम' हुए अन्त, शायद वसन्त आ गया
महकने लगे....

काम सारे इस कदर करते हैं हम,
पत्थरों पर भी असर करते हैं हम।
पाँव रखते हैं जमीं पर ही मगर,
आसमानों तक सफर करते हैं हम ।
– कनक

गीत

– सुशील 'सरित'
36, अयोध्या कुंज, ए, आगरा
मो.– 9411085159

ताज दान कीजिए न तख्त दान कीजिए
हो सके तो अपने वक्त से निकालकर जरा सा
अपने बुजुर्गों को अपना वक्त दान कीजिए
याद कीजिए वे दिन कि आप जब अबोध थे तो
आपके लिए था कितना वक्त उन्होंने दिया
आपकी तमाम बेतुकी जिदों के लिए अपने
क्रोध को दबाके कैसे–कैसे सब्र था किया
जरा देर को ही सही उनकी सुने अपनी कहे
ऐसी बैठकी का एक दरख्त दान कीजिए।
हो सके तो अपने वक्त से निकालकर जरा सा
अपने बुजुर्गों को अपना वक्त दान कीजिए
उनकी जिन्दगी का आखिरी पड़ाव है जनाब
और इस पड़ाव में अकेलापन ही साथ है
मित्र भी पुराने बचे होंगे कोई एक आध
साथ निभाने को सिर्फ एक छड़ी हाथ है
जरा देर को ही सही संग चले उनके साथ
बढ़ा करके अपना हाथ सख्त दान कीजिए।
हो सके तो अपने वक्त से निकालकर जरा सा
अपने बुजुर्गों को अपना वक्त दान कीजिए।
इन्द्रियाँ तो थक चुकी है पर जिजीविषा ने उनकी
साथ अभी तक है दिया कितना आप देखिए
यह जिजीविषा अभी भी और साथ देगी आप
सौम्यता भरी हुई हँसी को जरा फेंकिये
ढूँढिए छुपा हुआ है आपके ह्रदय में कही
उनकी वेदना का एक भक्त दान कीजिए।
हो सके तो अपने वक्त से निकालकर जरा सा
अपने बुजुर्गों को अपना वक्त दान कीजिए।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गीत

– जगदीश रघुवंशी
260, ग्राउण्ड फ्लोर, अशोका एन्कलेव,
मैन सेक्टर–35, फरीदाबाद (हरियाणा)
मो.– 9691210603

यह सुरक्षित अंतस मेरे, नाम तुम्हारा ही प्रियतम।
प्रेम अटारी चढ़ना आसाँ, गिरने से घबराती हूँ।
इस मन के गुलशन में तुम बिन, ठहरा था ये पतझर जो।
रुको जरा गुजरे पल से, मधुमास चुराकर लाती हूँ।
नील गगन सा है विस्तारित, तेरा मेरा प्रेम प्रिये।
बदली चाहे जितनी छाए, तोड़ बन्ध दिखलाती हूँ।
तुम आओगे लौट एक दिन, आस अभी भी बाकी है।
इसीलिए मुद्दत से तेरे पथ में दीप जलाती हूँ।
कभी विरह के आँसू छुप छुप राधा जैसे पी लेती।
और कभी मीरा के जैसे दिल की पीर सुनाती हूँ।
तेरी मधुरिम सी यादों की 'अनहद' लहरें उठती हैं।
इनके आगे सागर की लहरों को बौना पाती हूँ।

किश्तों में मरते देखा है

– गोविन्द अनुज
गीत गोविन्द, सिद्धेश्वर कॉलौनी, शिवपुरी (म.प्र.)

सर पर ढोया जाने किस अभिशाप को, किश्तों में मरते देखा है बाप को
अम्मा थी बीमार– खाट पकड़े थी बरसों से
दवा खरीदी गई– काट कर घर के खर्चों से
सुनता था वह मृत्यु की पदचाप को
किश्तों में मरते देखा है बाप को
पढ़कर, लिखकर बहिन–कुँवारी बैठी थी घर में,
खटता रहता बाप, कभी घर और फिर दफ्तर में
कोई नहीं सुनता उसके आलाप को, किश्तों में मरते देखा है बाप को
घिसी चप्पलें मगर नौकरी– कहीं नहीं पाई,
शिक्षित बेटे की कुंठा ने बुद्धि भरमाई
नहीं मानता धरम, पुण्य या पाप को
किश्तों में मरते देखा है बाप को

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गीत

– दिनकर पाठक
महिन्द्रा फाइनेन्स ऑफिस, तल मंजिल,
आकांक्षा बिल्डिंग, प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर,
भोपाल, मो.– 7509567623

मुझे पता है मेरे हमदम, याद मुझे तुम करते हो
देख मेरी तस्वीरों को तुम निश–दिन आहें भरते हो
दूर हमेशा मुझे रहते, कुछ मजबूरी तो होगी
कहने को मेरे दिल से, इक बात जरूरी तो होगी
प्रेम सदा करते हो मुझसे, पर कहने से डरते हो
मेरे चेहरे की रौनक को, जब तुम पढ़ने लगते हो
बैठ सामने दर्पण के तुम, खुद को गढ़ने लगते हो
तुम रातों में याद मुझे कर हमदम रोज सँवरते हो
मौन अकेले रहते हो, कुछ अपनो से भी तो बोलो
राज छुपाया दिल में जो है, आज यहाँ भी तो खोलो

गीत

– सरोज बघेल
नगला पीपरिया, सॉती रोड, सैलई
फिरोजाबाद, मो.– 7533842908

अविरल चलता चल तू राही, महि पर बाग लगाना है।
सुन्दर–सुन्दर पुष्प खिलाकर, सारा जग महकाना है।
डरा नहीं जो तूफानों से, चूक जिसे ना भाई है।
शूलों में भी राहें चुनकर, मंजिल अपनी पायी है।
कालजयी पन्नों पर अपना, स्वर्णिम नाम लिखाना है। अविरल चलता......।।1।।
हार मानकर नहीं बैठना, जीवन है संघर्ष यहाँ
खुशियाँ छायेंगी घर आँगन, हर पल होगा हर्ष यहाँ।
मन मन्दिर के हर कोने में, रवि सा दीप जलाना है। अविरल चलता......।।2।।
अथक बढ़े नित अपने पथ पर, हिमगिरि सा उत्थान मिले।
महा रजत सा तपकर हमको, कंचन का उपमान मिले।
जीवन त्याग तपोमय अपना बढ़कर सफल बनाना है। अविरल चलता......।।3।।
नित्य उठे हम भानु किरण सम, घोटक जैसी चाल करें।
अंधकार को दूर भगाकर, पूरी धरा निहाल करें।
मोद भरा हो सारा आलम, अम्बर तक सरसाना है। अविरल चलता......।।4।।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गीत

– कु. अपराजिता सिंह
पुत्री– श्री प्रवेश कुमार, हुसैनपुर जगे, कटैना हर्षा,
फिरोजाबाद– 283 203, मो.– 9149191063

घोर अभावों के जीवन में, सौ हीरे जड़ जायेंगे
तुम चाहो तो विरध आश्रम में ताले पड़ जायेंगे,
इस घर की सासू माता को, अपनी माता जानो तुम,
और ससुर को आदर देकर, पिता तुल्य ही मानो तुम।
ये सुख के सागर है इनकी, सच्चाई पहचानों तुम,
तो ऑगन में खुशियों वाले, सौ झण्डे गढ़ जायेंगे ...।
याद रहे अपने पुरखो का, गर तुम मान घटाओगे,
और बुढ़ापे में तुम उनके, दिल को अगर सताओगे।
जो पुरखो को दिया आपने, बस उतना ही पाओगे,
बच्चे बिगड़ गये तो सुख के, सब पत्ते झड़ जायेगे।
पकड़ तुम्हारी उंगली, पुरखे राह दिखाने वाले हैं ,
और तुम्हारी खातिर चंदा, भू पर लाने वाले हैं।
अपना रक्त पिलाकर तुमको, जीवन देने वाले हैं,
मौत तुम्हारे सम्मुख हो तो, उससे भी लड़ जायेंगे ।

गज़ल

– अर्चित वशिष्ठ
सालरपुरिया टावर 1, 91, स्प्रिंग बोर्ड, द्वितीय तल
बिग बाजार के पास, होसर रोड, बैंगलोर, मो.– 9711479007

मेरा मैं मुझ पर थोड़ा सा भरी है, तुम जैसा होने की कोशिश जारी है।
इससे ज्यादा ऐब नहीं कोई मुझमें, लहजा है, उस लहजे में खुद्दारी है।
किस–किस को अब सच बोलूँगा जा–जाकर, तोहमत भी तो मुझपे कितनी सारी है।
जिन ऑखों में आब नहीं अब बहता है, मुझ पर उन पलकों की पहरेदारी है।
कुछ लम्हों की बात नहीं है केवल, हमने अपनी उम्र इसी पर वारी है।
बस मित्रों से अपनी बात नहीं होती, दुश्मन से तो मिलना जुलना जारी है।
खुशियाँ भी शामिल हैं थोड़ी हिस्से में, लेकिन गम से असली साझेदारी है।
अब तो बस ये नींद मुकम्मल हो जाए, ख्वाबों से ही मेरी सच्ची यारी है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

हिन्दी भाषा को समर्पित

'कनक काव्य कुसुम' (वार्षिक पत्रिका)

– डा. शिवशंकर यजुर्वेदी
गीतकार एवं सम्पादक 'गीतप्रिया'
बरेली, मो.– 9319467998

प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट फिरोजाबाद (उ.प्र.) द्वारा प्रकाशित, श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा, डा. अशोक चक्रधर, श्रीमती ममता 'कालिया', डा. अशोक बाजपेयी, डा. शिवओम 'अम्बर', डा. अजिर बिहारी चौबे, श्री यशपाल 'यश' तथा श्री गौरव चौहान जैसे नामचीन साहित्यकारों द्वारा संरक्षित, प्रख्यात साहित्यकार डा. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' द्वारा निर्देशित, साहित्यकार श्री अभिषेक मित्तल, श्री कृष्ण कुमार 'कनक', डा. अन्जू गोयल, श्री हर्षवर्धन 'सुधांशु', श्री पूरन चन्द्र गुप्त, श्री प्रियाचरण उपाध्याय, श्री सुनील सकुमार 'शास्त्री' तथा श्री प्रवीन कुमार पाण्डेय 'प्रज्ञार्थू' द्वारा सम्पादित, साहित्यानुरागी श्री अंकुर मित्तल (हैदराबाद गुड्स कैरियर), श्री अंकुर गर्ग (माँ लक्ष्मी बैंगल्स) एवं श्री सौरभ अग्रवाल (जिविक फर्नीचर आर्ट) के विशेष सहयोग से संचालित वार्षिक पत्रिका 'कनक काव्य कुसुम' एक ज्ञानवर्द्धक एवं संग्रहणीय पत्रिका है। हिन्दी भाषा के उन्नयन हेतु अग्रसर इस पत्रिका से जुड़े समस्त साहित्याकारों, समाज सेवियों एवं प्रकाशन तथा मुद्रण संस्थान के समस्त पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों व वितरकों के अमूल्य सहयोग हेतु मैं हृदय से शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

आकर्षक आवरण में, विविध सामग्री को समेटे इस 72 पृष्ठीय पत्रिका का प्रवेशांक सुन्दर है। इसमें समाहित शुभकामना संदेश, मुख्य सम्पादक की कलम से, सम्पादकीय, ट्रस्ट का परिचय, आमने–सामने (भेंट वार्ता), फिरोजाबाद का आदि साहित्य, अजय 'उतावला' (संस्मरण), काव्य खण्ड, गद्य खण्ड, सम्मान व अलंकरण विवरण, शिक्षा जगत और मैं (यात्रा वृतांत), सम्मान व अलंकरण विज्ञप्ति, फिरोजाबाद के दिवंगत साहित्यकार तथा मुक्तामणि (संकलित काव्यांश) आदि विविध विषयों की प्रस्तुति ने इस पत्रिका को स्तरीय बना दिया है।

सम्पादक कृष्णकुमार 'कनक' द्वारा फिरोजाबाद जनपद के श्री ज्ञानप्रसाद क्रान्तिकारी (जोकि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी न बन सके) से भेंटवार्ता अच्छी लगी। कनक जी का अच्छा प्रयास है कि अपने जनपद के उन क्रान्तिकारियों व स्वत्रंत्रता सेनानियों का परिचय पत्रिका के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाया जाये जिनके अदम्य त्याग और तप द्वारा ही हम सभी आज खुली हवा में श्वाँस ले रहे हैं। उन वीरों को हम जितना भी नमन करें वो कम है। फिरोजाबाद का आदि साहित्य शीर्षक के अन्तर्गत प्रख्यात साहित्यकार डा. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' द्वारा जैन मुनि एवं साहित्यकार 'ब्रह्म गुलाल' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बड़े ही प्रभावपूर्ण तरीके से प्रकाश डाला गया है। ब्रह्म गुलाल जी अद्भुत साहित्यकार थे उनकी काव्य–कुशलता प्रेरणास्पद है। इस अनूठे कार्य हेतु डा. यायावर जी को साधुवाद। सम्पादक एवं साहित्यकार 'कनक' जी द्वारा अजय 'उतावला' (संस्मरण) एक अच्छा प्रयास है। संस्मरण हृदयस्पर्शी है। कविता के संदर्भ में सह सम्पादक श्री सुनील सुकुमार जी का मुक्तक मन को छू गया वे कहते हैं कि–

'युग सरिता बेपीर हो गई, मन की धरा अधीर हो गई। तब कविता बनकर उतरी उर, साखी संत कबीर हो गई।।

काव्य खण्ड के प्रथम सोपान पर सुविख्यात साहित्यकार दादा सोम ठाकुर जी की प्रस्तुति 'पाँव मेरे मानते हैं' गीत में समय के बदलाव एवं गिरते मानव–मूल्यों से आहत मन की पीड़ा के दर्शन होते हैं वे कहते हैं कि–

'टूटती जंजीर ने मुझसे कहा था घूम जा, बाहरी वातावरण बोला संभलकर चल यहाँ, छोड़ आया था जहाँ मैं झूमती अमराइयाँ,

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

आज नफरत की दिशा में बढ़ रहा दलदल यहाँ, मिल गए मुझको दरो दीवार जीने खिड़कियाँ, प्यार के साँतिये सजी अंगनाइयाँ पाई नहीं।'

साहित्यकार एवं सह सम्पादक ' श्री पूरन चन्द्र गुप्त जी की गजल का भाव अच्छा लगा वे वर्तमान परिवेश जो कि संवदनशील होता जा रहा है उसको बदलने के लिए समस्त भारतवासियों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि– 'रुख हवाओं का बदलना है चलो चलते हैं

'हमको अंधड़ से निकलना है चलो चलते हैं'

समयानुकूल सृजन हेतु भाई गुप्त जी को साधुवाद। गीतकार ' श्री कनक' जी के गीत 'शायद वे सच ही कहते हैं' की ये पंक्तियाँ भौतिकवाद से आहत मन की सुन्दर प्रस्तुति कही जायेगी। वे कहते हैं कि–

'चिन्ता व्यर्थ समय का खोना, जग का शाश्वत सत्य प्रबल है, किसकी आशा विस्मय कैसा, क्षण–क्षण भौतिकवाद सबल है, इच्छाओं के गीत ध्वजा से, ये लहराते ही रहते हैं, शायद वे सच ही कहते हैं, शायद वे सच ही कहते हैं।'

इच्छाओं के गीत ध्वजा से.... वाह क्या सुन्दर शब्द सामंजस्य एवं अनूठे प्रतीक के साथ प्रस्तुतिकरण 'कनक' जैसा गीतकार ही कर सकता है। आपको ह्रदय से साधुवाद। गीतकार प्रिया चरण उपाध्याय के गीत 'मैं हूँ दरख्त छाँव का' की ये पंक्तियाँ स्मरणीय बन पड़ी हैं वे कहते हैं कि–

'परतंत्रता का दंश भी तो सह चुका हूँ मैं, जिन्दगी के हर सितम में रह चुका हूँ मैं, आ सिखा दूँ मैं तुझे पवित्र प्रेम गुन, मुझसे अतीत की कहानी बार–बार सुन।'

वृक्षों के विनाश से आहत उपाध्याय जी का एक दरख्त के माध्यम से पर्यावरण को बचाने का संदेश स्वागत योग्य है। सुन्दर गीत के लिए बधाई। कवयित्री सरोज बघेल अपने गीत में बच्चों को जग उपवन के पौधों की संज्ञा देकर और उनके प्रति समाज को कर्तव्य निर्वहन का संदेश दिया है। वास्तव में आज के ये बाल हमारे देश के कल के कर्णधार हैं। बहुत–बहुत साधुवाद 'सरोज बघेल' जी आपको। गीतकार 'सुबोध सुलभ' जी का गीत 'भारत माता का अभिनन्दन' कर्णप्रिय गीत है। गीत का अन्तिम पद संकल्प के रूप में सुन्दर सृजन का परिचायक है वे कहते हैं कि–

'जब तक हैं इस तन में सांसे, अपना फर्ज निभाना है, पंचतत्व से बना खिलौना, मिट्टी में मिल जाना है। जिसकी कृपा मात्र से मेरी, सांसों में स्पन्दन है, उस पावन भारत माता का वंदन है अभिनन्दन है।'

सुबोध जी आपका सम्पूर्ण गीत राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत है। बधाई। पत्रिका में 2019 में प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट फिरोजाबाद द्वारा सम्मान व अलंकरण प्राप्त साहित्यकारों द्वारा सृजित रचनाओं का भी प्रकाशन करना एक अच्छा प्रयास हैं मथुरा प्रसाद 'मानव' स्मृति 'सृजन श्री अलंकरण–2019' प्राप्त सुश्री अंकिता कुलश्रेष्ठ के 'प्रेम का संसार दोनों' गीत का मुखड़ा एक शाश्वत सत्य को अपने में समाहित किये हुए हैं। हर युग में प्रेमी और प्रेयसि के केवल नाम बदल जाते हैं। प्रेम की भावना वही पहले थी वही आज भी है और वही कल भी रहेगी। वे कहती है कि–

'एक लय के गीत दो हम, एक सरि की धार दोनों, युग–युगों से रच रहे हम, प्रेम का संसार दोनों।'

गीत समर्थ कवयित्री यशोधरा यादव 'यशो' का गीत भी सराहनीय है। वे अपने गीत में कहती है कि–

आज फिर उम्मीद मचली। पंख तितली से रंगीले, होठ पँखुरी से सजीले। भावना का हाथ थामे, बाँध अपनेपन की सुतली। आज फिर उम्मीद मचली, आज फिर उम्मीद मचली।

विद्वान साहित्यकार डा. यायावर जी का यह मुक्तक मन को छू गया, वे कहते हैं कि–

कल्प–कल्प से मैं सागर निश्चेतन सोया था, कभी न हुआ प्रफुल्लित, कभी न खुलकर रोया था। यमुना तट पर राधा रोई, सरयू तट पर सीता, मैं खारा हो गया उसी दिन मैं भी रोया था।

पत्रिका का काव्य–खण्ड वास्तव में बहुत सशक्त है लगभग सभी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

साहित्यकारों की रचनायें श्रेष्ठ हैं। भाषा सरल एवं बोधगम्य, अलंकार, समास एवं छन्दों के उचित निर्वहन को संजोये है। यहाँ सभी रचनाओं का संदर्भ देना संभव नहीं है। गद्य खण्ड में यात्रा वृतांत, कहानी, समीक्षायें आदि भी सटीक है। व्यंग्य खण्ड में लगभग सभी व्यंग्यकारों के व्यंग्य सरल भाषा एवं चुटीलेपन से भरपूर हैं। उनमें मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा समास का सायाश आना प्रभावपूर्ण है।

पत्रिका में जगह–जगह छोटे–छोटे आलेख, मुक्तक तथा वक्तव्य ज्ञानपरक है। सभी सम्मानित साहित्यकारों का संक्षिप्त जीवन परिचय छाया–चित्र सहित अच्छा लगा। पत्रिका ने फिरोजाबाद के दिवंगत साहित्यकारों का सृजन समय, जीवन–परिचय आदि देकर श्रद्धा–सुमन समर्पित किये हैं जो कि स्तुत्य है। पत्रिका के अन्तिम पृष्ठ पर दिव्य सृष्टि दिव्या द्वारा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं से संकलित 'मुक्तामणि' की विभिन्न सृजनकारों की मणि–स्वरूप पंक्तियाँ पत्रिका के सुखान्त पहलू को उजागर करती हैं। इसमें 'सरवर लखनवी' के मुक्तक की पंक्तियाँ सम्प्रेषणीय है ये कहते हैं कि–

दहशतों का गुमान बाकी है, हादसों का निशान बाकी है, माल तो लुट गया फसादों में, अब तो खाली दुकान बाकी है।।

'दिव्या जी आपको बधाई जो आपने इतनी सुन्दर–सुन्दर पंक्तियों का चयन किया है। साथ ही सरवर साहब को भी बधाई। निष्कर्षतः मैं यही कहूँगा कि पत्रिका अपने आप में सम्पूर्ण साहित्यिकता को समेटे हुए हैं। पत्रिका के सभी संचालकों ने अपने–अपने दायित्व का उचित निर्वहन किया है। मेरी माँ शारदे से यही कामना है कि वे इस पत्रिका को दीर्घजीवी बनाने हेतु पत्रिका के पदाधिकारियों को सम्बल प्रदान करें। यह पत्रिका साहित्यिक जगत में आदरेय होगी। मुझे सम्पूर्ण पत्रिका मनभावन लगी। साधुवाद एवं शुभकामनाओं सहित ...

भोजागंगू (ललित निबन्ध)

– **कृष्ण कुमार 'कनक'**
'कनक निकुंज', ग्राम व पोस्ट–
गुँदाऊ ठार, मुरली नगर, थाना
लाइनपार, फिरोजाबाद

शीर्षक पढ़कर चौंक गए क्या? नहीं भाई,ऐसी कोई बात नहीं..चौंकिएगा नहीं। एक कहावत तो आप सबने सुनी ही होगी, 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली' मैंने भी सुनी है परन्तु ये राजा भोज कौन है? ये मुझे भी नहीं पता। इसका अर्थ ये कदापि न समझिएगा कि मैंने पता करने की कोशिश न की होगी। कोशिश तो बहुत की किन्तु क्या करिएगा, हमारे इस प्रबुद्ध समाज का ... जिसे पूछो वही इस लोक प्रसिद्ध उक्ति, यानी कि लोकोक्ति का अर्थ बनाने लगता है। यदि कोई राजा भोज की कहानी बताता भी है, तो मुझे लगता है कि वह अपने आप गढ़ी गई कहानी सुना रहा है। मूल निष्कर्ष ये हुआ कि मैं पुनः लौट कर वहीं आ जाता हूँ, जहाँ से कि चलना प्रारम्भ यिका था।

अब यदि बात करूँ जहाँ से कि चलना प्रारम्भ किया था। अब यदि बात करूँ गंगू तेली की, तो आप ही बताइएगा, कि जब राजा भोज के परिचय के प्रश्न पर ही ठेंगा पाता हूँ, तो फिर गंगू के नाम पर ही क्या मिलेगा?... लेकिन एक बात तो है, कि इस कहावत का अर्थ सभी सही बताते है। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि हर उत्तर दाता का उत्तर लगभग समान ही होता है।

आप तो जानते ही हैं, कि जो बहुमत में होता है, यदि वो कच्छे को बनियान बताए, तो विरोधी चाहे जो चिल्लाते रहे, स्वीकार्य वही होता है, जो बहुमत दल के नेता ने कहा है।... दोस्तों मेरी इस बात को भारतीय राजनीति से और वो भी लोकसभा की कार्यवाही से जोड़ने की कोशिश कदापि न करिएगा। मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ, वो बात मेरी अपनी है, जिस पर सौ फीसदी मेरा ही मालिकाना हक है और उसका एकमेव स्वामी भी मैं ही हूँ, साथ में यदि कोई विवाद की स्थिति भी आए, तो उसके लिए

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

न्यायक्षेत्र मेरे जनपद फिरोजाबाद का न्यायालय, यानी कि जनपद न्यायालय दबरई है।... अरे ये क्या! आपको हँसी आ रही है... कोई बात नहीं बात हँसने जैसी हो तब तो हँसना ही चाहिए।

हाँ, तो मैं बात कर रहा था उस कहावत की, जो मैंने चर्चा के प्रारम्भ में सुनाई थी, परन्तु अब प्रश्न ये है, कि वह अर्थ क्या था? या है? जो इस कहावत के संदर्भ में लोग अक्सर बताया करते हैं। तो बड़ी साधारण सी बात है, कि लोग तो वही बतायेंगे, जो उन्हें दूसरों के द्वारा पता चला है। सीधी सी बात ये है कि इस कहावत में दो व्यक्तियों के मध्य अंतर बताया गया है। हाँ, ये बात अलग है कि कुछ लोग, इस अंतर को धन के आधार पर, कुछ ऐश्वर्य के आधार पर तो कुछ प्रज्ञा के आधार पर स्पष्ट करने का सफल प्रशस करते हैं और लगभग सभी अपने इस प्रयास में सफल भी होते हैं, किन्तु मेरी जिज्ञासा तो इससे इतर है, जिसे आप इतनी देर में समझ ही चुके होंगे। यही कारण है कि आपको मेरी बात पर हँसी तो आ ही रही होगी, साथ ही क्रोध भ्झी, कि कितना अजीब आदमी है। 'आम खा पेड़ काहे को गिनता है।' लो बातों ही बातों में एक लोकोक्ति और आ गई। अब आप सोच रहे होंगे कि ये आदमी अब तक एक लोकोक्ति के निष्कर्ष पर तो पहुँचा नहीं, तब तक दूसरी और ले आया। अगर आप ऐसा सोच रहे हैं तो आप गलत हैं...अरे...ये क्या? आप तो बुरा मान गए। नहीं, नहीं दोस्त, मैं तो मजाक कर रहा था। आप गलत कैसे हो सकते हैं और आप तो मेरे पाठक हैं, फिर तो कभी गलत हो ही नहीं सकते।...अब खुश् ... अच्छा तो जरा मुस्करा दो...हाँ, हाँ ज्यादा दाँत न दिखाओ... कोई देख लेगा तो नजर लगादेगा, फिर दाँत झड़ जाने का दोष, मुझे न देना।

अब बहुत देर गपिया लिए, चलो काम की बात करते हैं।...तो मैं कहाँ था...? हाँ, याद आया, बात ये थी कि कहावत का अर्थ पता चल गया तो फिर राजा भोज और गंगू तेली की कहानी से क्या लेना? लेकिन एक बात बताओ यार। बड़े अजीब हो आप भी, एक आदमी का नाम भी ले रहे हो और उसे जानते तक नहीं, ये भी कोई बात हुई! इसका मतलब तो ये हुआ कि आपका जो मन करेगा वो कर डालोगे। किसी के भी नाम पर, कोई भी कहावत चेंप दोगे, ये कहाँ का न्याय है?

इस पूरी चर्चा से मेरा आशय मात्र इतना है कि वो राजा भोज और गंगू तेली का किस्सा क्या है? मेरा मत है कि ये बात जब पता चलेगी तो हो सकता है कि कोई प्रेरणा मिल जाय, नहीं तो कम से कम वे दो आत्मायें तो सुकून पायेंगी ही, जिनके नाम का प्रयोग हम आप रोजमर्रा की जिन्दगी में यदाकदा करते ही रहते हैं।

अभी पिछले दिनों आगरा में एक पुस्तक मेला लगा था। मैं आर्मी पब्लिक स्कूल में हिन्दी विषय के परास्नातक शिक्षक पद हेतु परीक्षा देकर लौट रहा था .. अरे! अब क्या यही बात है न कि मै। वर्ष 2010 में जैव प्रौद्योगिकी से स्नातक कर 2013 में हिन्दी से परास्नातक करते ही लगातार हिन्दी की परीक्षाओं में बैठ रहा हूँ और किसी भी परीक्षा में पास भी नहीं हुआ। तो एक बात मेरी भी सुन लो... अरे यार! पास नहीं हुआ तो क्या हुआ? हिम्मत तो नहीं हारा। बारह बार हिन्दी से नैट दे चुका हूँ... नहीं पास हुआ तो नहीं हुआ। तो क्या प्राण दे दूँ? ना बाबा ना... क्या तुमने शुक्ल जी की जीवन परिचय नहीं पढ़ा... वे भी तो इण्टरमीडिएट फेल थे। उनके मुकाबले में किसी का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ठहर पाता है क्या?... कैसी बात करते हो!. .. और फिर यार इसी साल 4 अप्रैल को अट्ठाइस बसन्त पूरे किए हैं। भारतेन्दु के बराबर भी जिया तो भी सात साल तो हैं ही।

...अब क्या हुआ? अरे बाबू, दादू, नानू आप तो पीछे ही पड़ गए, हाँ आपका सोचना सही है। किसी का पता नहीं कि कब कौन अपनी यात्रा कहाँ पूरी कर ले और निकल ले। लेकिन, मेरे यारा!... मेरे भोले भाले दोस्त! कल की चिन्ता में अपने आप के आनंद को क्यों बिगाड़ना?...मान लो, मैं पहली बार में ही नौकरी पा जाता, बच्चों को पढ़ाता, पारिश्रमिक के रूप में सरकार के खाते से मोटी रकम हर माह चटकाता, तब ये बात

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कहाँ तक सत्य होती? कि मैं अपना दायित्व पूरी निष्ठा के साथ निभाता ही निभाता। क्या पता औरों की तरह मैं भी आलसी हो जाता?... अरे दोस्त! आप मुस्कराते बहुत हो... चलो कोई बात नहीं, मेरे पाठक हो तो आपको पूरा अधिकार है, मस्त रहने का। लेकिन ये बात मैं मेरे अनुभव की बता रहा हूँ। सरकारी नौकरी और वो भी अध्यापक की, बिल्कुल वैसी ही है जैसी कि पढ़ाई... मतलब नहीं समझे? कुछ बातें इशारे में भी समझ लिया करो। आप तो बिल्कुल मेरे जैसे हो, बिल्कुल भौंदू। भौंदू से याद आया कोई मुझे भौंदू बुलाता था... अब ये आशा न करो कि मैं ये भी बताऊँगा कि वो कौन था, जो भौंदू बुलाता था। पर एक बात तो है, आप हो तो मेरे जैसे ही... अब खिल-खिलाना बंद करो और सुनो सरकारी नौकरी और पढ़ाई में समानता। इधर पढ़ाई के लिए किताब का उठाना और उधर आलस का आना, बमुश्किल आधा एक घण्टा कटा कि हो लिए चारों खाने चित। ठीक वैसा ही है सरकारी अध्यापन... आलस तो मानो नियुक्ति-पत्र के कोने से ही बँधा मिला हो। ये दशा प्राथमिक से लेकर परास्नातक स्तर तक के अध्यापकों में कमोवेश समान ही देखी जा सकती है। मुझे आश्चर्य तो तब होता है जब मैं सड़क पर आन्दोलन करते शिक्षामित्रों, बी.पी.एड., बी.एड.डी. एल.एड. और यहाँ तक कि राज्य एवं केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को देखता हूँ कि इन सबको सरकारी अध्यापक तो बनना है, परन्तु एक प्रश्न करो कि क्यों बनोगे सरकारी अध्यापक? तो उत्तर होता ही नहीं, या जीवन यापन का साधन कह कर पिण्ड छुड़ाने की कोशिश करते है, या ऊल-जलूल तर्क देकर निपट लेते हैं। किन्तु बच्चों को पढ़ाना है और उन्हें अपनी मातृभूमि, मातृभाषा और समाज के प्रति एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है, ये विचार तो मानो उनके पाठ्यक्रम से बाहर की बातें होती हैं। इन बातों से तो उनका सरोकार होता ही नहीं और जिन सरकारी विद्यालयों में लोग अपने दायित्व पूरे करते भी हैं उनमें भी अध्यापकों का योगदान कम नियम कानूनों का भार या पारिश्रमिक कट जाने का भय ही है, जो दायित्व पूरे करा ही लेता है और यदि इस सबके न रहते हुए भी जो अध्यापक अपनी पूरी निष्ठा से अपने दायित्व को ईश्वर की आराधना मानकर पूरा करते हैं मैं उन्हें साष्टांग दण्डवत प्रणाम करता हूँ क्योंकि वही ऐसे लोग होते हैं, जिनके तबादले पर विद्यार्थी अपने अध्यापक को विदा करते समय, दरवाजे की चौखट पकड़कर रोते हैं, जिसके लिए गाँव की सबसे बूढ़ी दादी के आँचल में भी दूध उतर आता है। केवल वे बच्चे ही नहीं जो उनके विद्यार्थी रहे, बल्कि युवा, प्रौढ़ और वृद्ध सभी, किलोमीटर दूर तक चलकर भी अश्रुपूरित नयनों से अपने गाँव से विदाई लेकर जाते उस युगदीपक की लौ को मध्यम-मध्यम मन्द होकर अनंत शून्य में विलीन होते सितारे की भाँति देखते हुए उसकी सुस्मृतियों में ऐसे डूबते हैं कि हुफकते-हुफकते कब चीख निकली, उन्हें भान ही नहीं। मानो राष्ट्र रक्षा करते हुए किसी सैनिक ने अपने आप को बलिदान कर इस संसार से अंतिम विदाई ली हो। निःसंदेह ऐसे तपस्वी साधक अध्यापकों को मेरी इस छोटी सी कलम का सौ-सौ बार नमन।

हाँ भाई! अब ऐसे लोगों के बारे में मैं बिल्कुल भी चर्चा नहीं करूँगा जो 14 सितम्बर को मंच से भाषण देते समय गला फाड़-फाड़कर हिन्दी-हिंदी चिल्लाते हैं। यहाँ तक कि वाट्सएप और फेसबुक पर हिन्दी उछालने लगते हैं ये सबके सब वे होते हैं जिनका पालतू पिल्ला भी गाय को 'काउ' ही कहता है। चार पैसे आ गये और थोड़ी सी प्रसिद्धि क्या मिली, किसी की क्या मजाल कि कोई अपने बच्चों को इनके बच्चों से बेहतर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में पढ़ाए। अरे भाई! भाषण तो औरों के लिए होते हैं, अपने लिए थोड़े। मेरा विरोध अंग्रेजी से नहीं बल्कि इस मानसिकता से है। हमें ज्ञान वे बाँटते हैं जिनका रोंगटे सा छोर भी 'मोम गिव मी मिल्क' बोलता है, और पूरा खानदान खुश होता है कि हमारा बालक अंग्रेज हो लिया।

सरकारी विद्यालय में बच्चों का

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

दाखिला कराने में तो इनकी सात पीढ़ी की नाक कटलेगी। तो भैया! ये बताओ जो अध्यापक हजारों रुपये पर सरकारी खजाने में डाँका डालते हैं। वे क्या भाड़ झाँकेंगे ? हिन्दी के प्रति समर्पण देखना है तो मेरे घर आना, दो बेटियाँ और एक बेटा तीनों शहर में रहते हैं। प्राथमिक विद्यालय में पढ़ते हैं और मुहल्ले में सबसे होशियार हैं। सुबह–शाम प्रो. सोम ठाकुर की 'हिन्दी वंदना' गाते हैं, तब पढ़ने बैठते हैं।

अब ज्यादा भावुक न होइएगा। मैं सरकारी नहीं हुआ तो क्या? अध्यापक तो हूँ ही। अभी हिम्मत नहीं हारा हूँ। कोशिश जारी रहेगी।... तो इसयका अर्थ ये भी नहीं है कि कभी हारकर अनुचित साधन... हाँ... हाँ वही पैसों का लेनदेन या जुगाड़ आदि नौकरी पाने पर बाध्य हो जाऊँगा। जानते हो क्यों?... क्योंकि मेरी असफलता में मेरी मेहनत और किस्मत दोनों की भागेदारी है। ये दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। इनमें से एक सुधरा तो समझो दोनों सुधर गये। मुझे तो इन्हीं की आस है। तो फिर प्रश्न ये है कि सब लेन–देन को राजी हैं तो मैं ही क्यों साधू बन रहा हूँ? शहर का एक प्लाट हटा दूँ, बाद मैं तो चाहे जितने खरीदो ये बात सत्य हो भी सकती है और ऐसी बात नहीं कि ये परिस्थितियाँ मेरे सामने नहीं आई... ऐसा बिल्कुल भी नहीं है, किन्तु हर बार मेरे प्राण का यही कथन रहा कि रे बावरे कनक! मान ले तू इस प्रकार नौकरी पा भी गया तो बता, जब तू अपने विद्यार्थियों के सामने जाएगा, तो किस मुँह से उन्हें स्वाभिमान का पाठ पढ़ाएगा। बस यही विचार मुझे आज भी स्वाभिमान से नौकरी पाने की प्रेरणा बना हुआ है... अब मत सोचना कि मैं इतनी बार फेल हुआ फिर भी परीक्षा देने जाता हूँ... ठीक है।

हाँ तो मैं पुस्तक मेले में प्रत्येक पुस्तक को बारीकी से निहार रहा था साथ ही ये मन में ये विचार भी चल रहा था कि स्थितियों में कितना परिवर्तन आया है? पुस्तकों की संख्या तेजी से बढ़ी है और पाठकों की संख्या उसके कई गुने अनुपात में घटती जा रही है। लेखक अपना धन खर्च कर पुस्तक छपवाता है और फिर जबरन किसी को थमाता है। वो भी पुस्तक की खूबियाँ गिना गिना कर। भले ही पुस्तक दो.. जाने दो, क्या करना। प्रकाशक भी उस पर लागत का 6 गुना मूल्य प्रिन्ट करता है वो भी बाकायदा कारण बताकर कि पाठक तो पुस्तक खरीदते नहीं, बस हमारा जुगाड़ कुछे क पुस्तकालयों में है, वहाँ पुस्तकालय का जो आधिकारिक स्वामी होता है, उसे 50 प्रतिशत धनराशि देकर बेच देंगे, लेकिन आप रॉयल्टी के बारे में न सोचना अन्यथा कहीं और छपवा लो। हर जगह का लगभग यही आलम है। राजकमल, ज्ञानपीठ या किसी सरकारी प्रकाशन से पुस्तक छपे उसके लिए या तो पुस्तक का मसाला नहीं है या फिर जुगाड़ नहीं। ऐसे में जिन लेखक, रचनाकार आदि की जेब गरम है वे तो प्रकाशक का प्रस्ताव मानकर पुस्तक छपवा लेते हैं और जिनकी जेब खुक्कस है साथ ही जिन्हें अपनी पुस्तक को छपवाने के लिए चन्दा इकट्ठा करने की तकनीक नहीं आती वे बेचारे मन मार कर रह जाते हैं।

टहलता–टहलता केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सकार के प्रकाशन पर पहुँचा। देखा तो पता चला कि इससे सस्ती पुस्तकें पूरे मेले में कहीनहीं हैं, भारती भाषा कोष खरीद लिया। पुस्तक काफी मोटी और आकर्षक थी। एक ही शब्द के संविधान की अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं में अर्थ दिए थे। विक्रेता की वाक् शैली इतनी मधुर कि मानो वाणी में अभी–अभी मिश्री घोली हो। चाहकर भी वहाँ से हटने को जी न कर रहा था। 28 वर्ष की आयु में पहली बार किसी पुरुष ने इतना प्रभावित किया।

सहसा नजर एक पत्रिका पर पड़ी। शीर्ष था 'भाषा'। विश्व हिन्दी सम्मेलन 2019 मॉरिशस का लोगो छपा था। अनायास एक घटना याद आ गई। पिछले वर्ष तकरीबन जुलाई माह की बात रही होगी। नगर के प्रतिष्ठित महाविद्यालय के प्रोफेसर, प्रतिष्ठित छात्र संगठन के प्रदेश अध्यक्ष जी ने मेरा परिचय माँगा और बताया कि मेरे संज्ञान में आप से अधिक हिन्दी भाषा के प्रति समर्पित

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

व्यक्ति नजर नहीं आता। वर्ष 2012 में जब परास्नातक हिन्दी प्रथम वर्ष से ही आपका हिन्दी के प्रति जो समर्पण है। उसने मुझे बाध्य कर दिया है कि संगठन द्वारा विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरिशस के लिए माँगे गये नाम के रूप में आपका नाम प्रस्तावित करूँ। मैंने कहा निःसंदेह ये मेरा सौभाग्य होगा कि मैं अपनी भाषा हिन्दी की समृद्धि हेतु आयोजित सम्मेलन का अंग बनूँ। मात्र 6 दिन में पासपोर्ट तैयार हुआ। मन बड़ा प्रसन्न था। रोज बेबसाइट को निहारता और जानकारी एकत्र करता रहता।

एक दिन अपने एक मित्र के घर बैठा था तो विश्व हिन्दी सम्मेलन की बात चल गई तो भाभी जी ने कहा कि न जाने कैसे आपका नाम आ जाएगा? हमारे एक प्रोफेसर कहा करते थे कि ये जो विदेश आदि के कार्यक्रम होते हैं इनमें केवल दस प्रतिशत लोग भी उस विषय से जुड़े हुए जाते बाकी तो जुगाड़ वाले या नेताओं के सम्बन्धी, परिवारीजन ही सरकार की निःशुल्क सेवा का लाभ उठाते हैं। तो मैंने कहा भाभी जी ऐसा कैसे संभव है? सम्मेलन हिन्दी का है उसमें फालते लोग क्या करेंगे जाकर। तो भाभीजी का जबाब भी लाजबाब था। हाँ सही तो है वे जाते तो हैं पर करते कुछ नहीं। मुफ्त की हवाई यात्रा, रहना, खाना और चले आना, सरकारी पैसे से पिकनिक, और क्या?

मैं वहाँ से ना नुकर करके चला आया। मन सशंकित हो उठा था। दो दिन बाद एक शिष्य का फोन आया, गुरुजी। ये क्या हुआ? अपने नगर के उच्च नेता के पी.ए. ने फेसबुक पर विदेश मंत्रालय से प्राप्त एक पत्र डाला है जिसमें मॉरीशस विश्व हिन्दी सम्मेलन हेतु चयन की सूचना है। इस सूचना ने भाभी जी की बातों को पुष्ट कर दिया, क्योंकि मैं पहले से उस बालक से परिचित हूँ वह उसी सत्ताधारी दल के नेता जी का सुपुत्र है जिसकी क्षेत्रीय इकाई का सदस्य मैं भी हूँ। अब विरोध का तो प्रश्न ही नही था। हाँ ये बात तो थी कि वह कई बड़े नेताओं के साथ कम्प्यूटर कार्य कर चुका था और नव निर्वाचित... जी को पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए पिता पुत्र का फोटो भी फेसबुक पर साझा किया गया था, किन्तु हिन्दी जैसे मेरी मातृभाषा है ऐसे ही उसकी भी है बाकी अन्य कोई योगदान नहीं। संयुक्त सचिव हिन्दी संस्कृत से बात की तो उन्होंने कहा भाई साहब आपका नाम तो मेरी सूची में है ही नहीं। मैंने कहा, तो आप केवल हस्ताक्षर करते हैं? वे बोले, इसके अतिरिक्त और कुछ कर भी नहीं सकते। मैंने नमस्ते करके फोन रख दिया।

मैं स्मृति में इस प्रकार डूबा था कि विक्रेता महोदय ने कहा भाई साहब मात्र पच्चीस रुपये की है, खरीद लो पिछले वर्ष मॉरीशस में विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ था, उसी का विशेषांक है। और हाँ आप तो लेखक हैं, आप भी अपना कोई लेख भेजिएगा, अगर हमारी समिति ने आपके लेख को चुना तो पत्रिका में लेख भी छपेगा और पारिश्रमिक भी मिलेगा। वह मेरी एक प्रश्नवाचक मुद्रा में देख रहा था। मैंने मन ही मन सोचा कि मैं जो लिखूँगा उसे 'भाषा' पत्रिका ही छाप सकेगी और यदि 'भाषा' पत्रिका की समिति ने यदि नही चुना तो किसी भी पत्रिका द्वारा नहीं छापा जाएगा। क्योंकि कलम छोटी सी सही किन्तु है बड़ी औघड़।

मैंने अपने मन से कहा, तू आम खा, पेड मत गिन। पत्रिका खरीद ली और अपने घर के लिए एक दो तीन.. फर्र। अब क्या है? ... अब तो समझ ही गए होंगे, कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली। नहीं समझे तो जाओ भाड़ में... नहीं...नहीं... यार! मैं तो मजाक कर रहा था। यदि कुछ करना ही है तो सुनो, अगर बच्चे हो तो मन लगाकर पढ़ाई करो, युवा हो तो रोजगार तलाशो और बूढ़े हो तो हरि भजन करो... ऐसे हरे राम! हरे राम ! राम–राम हरे– हरे! हरे कृष्ण ! ......।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

मेरा मुख्य विषय हिन्दी

–प्रबल प्रताप सिंह
एस.पी. सिटी, फिरोजाबाद
मो.– 9454401046

देश किन परिस्थितियों से गुजर रहा है यह बात किसी से छिपी नहीं है। सब जानते हैं कि हाल फिलाल में संसद द्वारा कोई कानून ऐसा नहीं बना जो इस भारत भूमि के पारम्परिक नागरिकों के लिए कष्ट कर हो किन्तु फिर भी देश तनाव में है। मैं यह नहीं कहता कि पिछले दो–ढ़ाई माह से एक घड़ी के लिए असली मुस्कान होठों पर नहीं ला पाया हूँ इसलिए तनाव की स्थिति उचित नहीं....। मैं सुरक्षा तंत्र का नायक हूँ किसी भी स्थिति को नियंत्रित करने का मेरा दायित्व है किन्तु कष्ट मात्र इतना है कि वर्तमान स्थिति का कोई कारण ही नहीं है फिर भी नींद हराम है। यदि कोई उचित कारण हो तो लड़ते–लड़ते जान गवा देना गर्व का द्योतक होगा।

चलो जाने दो जिसके मन में जो आता है वो करता ही है हम हमारा काम कर रहे हैं। करीब डेढ़ माह पूर्व कनक जी मुझसे मिले 'कनक काव्य कसुम' पत्रिका और अपने ट्रस्ट के विषय में बताया। उन दिनों सी.सी.ओ. को लेकर एक समुदाय विशेष के द्वारा किए गए उपद्रव के कारणो तथा परिणामों एवं अग्रिम कार्यवाहियों की परिचर्चाओं के कई–कई दौर चलते थे। इस बीच जब कनक जी ने बताया कि सुना है आपका चयनित मुख्य विषय हिन्दी साहित्य था तो मैंने स्वीकार तो किया किन्तु उनके द्वारा पत्रिका में लेख लिखने की बात को एक सप्ताह आगे धकेल दिया। कनक जी एक सप्ताह के बाद एक बार नहीं कई बार आये किन्तु हर बार वे निराश और मैं हताश। ऐसा मेरी नौकरी के इतने वर्षों में पहली बार था कि एक आम नागरिक मेरे सामने आता तो मैं दूर से ही क्षमा याचना की मुद्रा में आ जाता। ये क्रम भी महिनों चलता गया।

अब बात है कि मैंने हिन्दी को अपना मुख्य विषय क्यों चुना? तो सीधी सी बात है। ये हमारी मातृभाषा है। आसानी से समझ में आ जाती है न जाने क्या कारण है किन्तु हिन्दी में कम प्रतिस्पर्धा होती है और थोड़ी बहुत रुचि भी थी बस हिन्दी का उपकार है कि आज मैं आपकी सेवा में हूँ। हिन्दी ने तानव में भी मुस्कराने की शक्ति दी है। मुझे आम जनता पर क्रोध नहीं आता। मैं हर मिस कॉल करने वाले को वापस फोन करके उसकी बात जानता हूँ। अच्छे और बुरे विचारों को हटाने के बाद बचा मनुष्य मुझे सदैव निष्कलंक दिखाई देता है। यह सब मुझे हिन्दी ने दिया है। कनक जी हिन्दी की सेवा सदैव इसी ऊर्जा से करते रहें, यही मेरा शुभाशीष है .....

– प्रबल प्रताप सिंह (आई.पी.एस.)
पुलिस अधीक्षक नगर
जनपद फिरोजाबाद

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

जीवन में विजेता होने के लिए मेडल अधिक जरूरी नहीं :- लॉरेंस लेम्यूक्स

करुणा व सेवा भाव

– सीताराम गुप्ता
ए.डी.– 100सी, पीतमपुरा
दिल्ली–110 034
मो.– 9555622323

वर्ष 1988 में सिओल ओलंपिक में पदक हासिल करने के लिए लॉरेंस लेम्यूक्स एक दशक से भी अधिक समय से प्रशिक्षण ले रहे थे और निरंतर कठिन अभ्यास कर रहे थे। आखिर वो घड़ी आ पहुँची जब लोरेंस लेम्यूक्स का सपना साकार होने में थोड़ा सा ही समय शेष रह गया था। लॉरेंस लेम्यूक्स के गोल्ड मैडल जीतने की प्रबल सम्भावना थी लेकिन जैसे ही प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ हुई मौसम ने अचानक रंग बदलना शुरु कर दिया। तेज हवाएँ चलने लगीं और उनके कारण शांत समुद्र में ऊँची–ऊँची लहरें उठने लगीं। ऐसे में कोई भी हतोत्साहित हो सकता था लेकिन लॉरेंस लेम्यूक्स ने हार नहीं मानी और ऊँची–ऊँची लहरों के बीच निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगे। अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद लॉरेंस लेम्यूक्स ने शुरुआती बढ़त हासिल कर ली। उनका गोल्ड मेडल लगभग निश्चित हो गया था।

लेकिन ये क्या? विषम परिस्थितियों के कारण उनसे एक चूक हो गई। ऊँची–ऊँची लहरों के कारण दिशा बतलाने वाले संकेतों को देखना असंभव हो गया और लोरेंस लेम्यूक्स एक संकेत तक आने के बाद विवश होना पड़ा और वहाँ से पुनः रेस शुरु करनी पड़ी। इस सबमें समय की कितनी बर्बादी हुई होगी और इसके कारण पदक हासिल करने के नजदीक पहुँचना कितना मुश्किल हो गया होगा अनुमान लगाना सम्भव नहीं। इस चूक और अन्य कठिनाइयों के बावजूद लोरेंस लेम्यूक्स शानदार प्रदर्शन करते हुए दूसरे स्थान तक जा पहुँचे। उन्हें रजत पदक मिलने की पूरी संभावना नजर आ रही थी और वे तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। उनका उत्साह देखने लायक था।

जब लॉरेंस लेम्यूक्स तेजी से अपनी नाव चलाते हुए सही दिशा में आगे बढ़ रहे थे तो उन्होंने देखा कि बीच समुद्र मे सिंगापुर के नाविकों की एक नाव उलट पड़ी है। एक आदमी जो बुरी तरह से घायल हो गया था पलटी हुई नाव की पैंदी को किसी तरह से जकड़े हुए पड़ा था। नाव से कुछ ही दूरी पर एक अन्य व्यक्ति बहता हुआ जा रहा था। समुद्र की स्थिति अब और भी विकराल हो चुकी थी। लॉरेंस लेम्यूक्स एक अत्यंत अनुभवी नाविक थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि सुरक्षा नौका अथवा बचाव दल के आने तक ये बहता हुआ व्यक्ति बहते–बहते दूर चला जाएगा और उलटी हुई नाव के ऊपर पड़ा व्यक्ति भी जल्दी ही समुद्र की विशाल लहरों से टकराकर नीचे गिर पड़ेगा और बहने लगेगा। स्थिति ऐसी थी कि तत्क्षण सहायता न मिलने पर दोनों का ही बच पाना असम्भव प्रतीत हो रहा था।

लोरेंस लेम्यूक्स के सामने दो विकल्प थे। पहला विकल्प तो ये था कि लोरेंस लेम्यूक्स इस दुर्घटनाग्रस्त नाव के चालकों को नजरंदाज करके अपना पूरा ध्यान केवल अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपनी नौका और रेस पर केन्द्रित करते जिसके लिए उसने वर्षों तक कड़ा परिश्रम किया था। यह स्वाभाविक भी था और इसमें असंख्य संभावनाएं और आर्थिक हित भी निहित थे। लेम्यूक्स के समक्ष दूसरा विकल्प था दुर्घटनाग्रस्त नाव के चालकों की मदद करना। उसे याद आया कि समुद्र में उतरने वाले हर व्यक्ति का महत्वपूर्ण कर्तव्य है। सबसे पहले संकटग्रस्त व्यक्तियों का जीवन बचाना। यद्यपि उसका मुख्य लक्ष्य किसी भी कीमत पर प्रतिस्पर्धा जीतना था जिसके लिए उसने दिन–रात कठोर अभ्यास किया था और जिसके लिए उसके देशवासी उत्सुकतापूर्वक उसके विजयी होने की प्रतीक्षा कर रहे थे लेकिन लोरेंस लेम्यूक्स ने बिना किसी हिचकिचाहट

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

के फौरन अपनी नाव उस दिशा में मोड़ दी जिधर उलटी हुई दुर्घटनाग्रस्त नाव समुद्र की विकाल लहरों में हिचकोले खा रही थी।

लेम्यूक्स देशवासी उत्सुकतापूर्वक उसके विजयी होने की प्रतीक्षा कर रहे थे लेकिन लोरेंस लेम्यूक्स ने बिना किसी हिचकिचाहट के फौरन अपनी नाव उस दिशा में मोड़ दी जिधर उलटी हुई दुर्घटनाग्रस्त नाव समुद्र की विकराल लहरों में हिचकोले खा रही थी।

लेम्यूक्स ने बिना देर किए दोनों नाविकों को एक–एक करके अपनी नाव में खींच लिया और तब तक वहीं इंतजार किया जब तक कि कोरिआ की नौसेना आकर उन्हें सुरक्षित निकाल नहीं ले गई। इसके बाद लोरेंस लेम्यूक्स ने पुनः अपनी रेस शुरु की लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मेडल उनके हाथ से फिसल चुका था। लोरेंस लेम्यूक्स इस प्रतिस्पर्धा में बाईसवे स्थान पर आए। इसमें संदेह नहीं कि यदि वो अपने मूल लक्ष्य से विचलित नहीं होते तो निश्चित रूप से पदक हासिल करते। लोरंस लेम्यूक्स ने अपने जीवन की एक मात्र महान उपलब्धि को अपने हाथ से यूँ क्यों फिसल जाने दिया? इसका सीधा सा उत्तर है लोरेंस लेम्यूक्स की जीवन मूल्य। लोरेंस लेम्यूक्स का जीवन मूल्य इस तथ्य पर निर्भर नहीं थे कि विजेता होने के लिए ओलंपिक मेडल प्राप्त करना ही एक मात्र विकल्प है। लोरेंस लेम्यूक्स ने अपने जीवन में भौतिक उपलब्धियों की बजाय उदात्त जीवन मूल्यों को महत्व दिया। यह जीवन मूल्य था, हर हाल में दूसरों की मदद अथवा करुणा का भाव।

अपने करुणा के उदात्त भाव की वजह से लोरेंस लेम्यूक्स दो व्यक्तियों को मृत्यु के मुख में जाते देख व्यथित हो उठे। इस व्यथा ने लेम्यूक्स के जीवन में व्याप्त उदात्त जीवन मूल्यों के कारण उसकी प्राथमिकता बदल गई। लोरेंस लेम्यूक्स को मेडल जीतने की बजाय किसी की जान बचाना अधिक महत्वपूर्ण लगा। उसने यही किया भी। लोग ऐसी स्थिति में प्रायः द्वंद्व में फँस जाते हैं और सही निर्णय नहीं ले पाते। अनिर्णय की स्थिति में कई बार दोनों ही स्थितियाँ बेकाबू हो जाती है अथवा हाथ से निकल जाती है लेकिन लोरेंस लेम्यूक्स ने ऐसा नहीं होने दिया। लोरेंस लेम्यूक्स ने तत्क्षण निर्णय लेकर उसे क्रियान्वित कर डाला। ओलम्पिक के इतिहास में असंख्य लोगों में मेडल हासिल किए हैं। कई खिलाड़ियों ने तो कई सालों तक लगातार कई–कई मेडल भी हासिल किए हैं। कई मेडल विजेता अपने अच्छे प्रदर्शन और अपनी अन्य विशिष्टताओं के कारण चर्चित भी कम नहीं हुए लेकिन मेडल न मिलने पर भी जो सम्मान लोरेंस लेम्यूक्स को मिला वह अद्वितीय है। लोरेंस लेम्यूक्स को प्रतिस्पर्धा में तो कोई पदक नहीं मिल सका लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी द्वारा लोरेंस लेम्यूक्स को उनके साहस, आत्म–त्याग और खेल भावना के लिए पियरे द कूबर्तिन पदक प्रदान किया। बाद में पूछने पर कि क्या ओलंपिक मेडल खोने पर उन्हें कभी अफसोस भी हुआ तो लोरेंस लेम्यूक्स ने कहा कि यदि उनके जीवन में दोबारा ऐसी स्थिति आती है तो वे हर हाल में उसे दोहराना पसंद करेंगे। सच किसी का जीवन बचाने से अच्छी प्रतिस्पर्धा हो ही नहीं सकती। लोरेंस लेम्यूक्स की करुणा की भावना व वास्तविक मदद ने उसे अपने देश के लोगों के दिलों का ही नहीं दुनिया के लोगों के दिलों का सम्राट बना दिया।

श्योर सक्सेस कैरियर एकेडमी

एवं शहरी व ग्रामीण शिक्षण वैलफेयर सोसाईटी की ओर से 'कनक काव्य कुसुम' वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन हेतु बधाई

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

जाम अनंत जाम कथा अनंता

– डा. अजिर बिहारी चौबे
53/12, लेबर कॉलौनी
फिरोजाबाद

भारत देश में 'जाम' बेहद प्रचलित शब्द है। इस शब्द की भारतीय वांगमय में बड़ी महिमा बताई गई है। समुद्र मंथन से प्राप्त 'वारुणी' का नाम भी 'जाम' है। जाम का प्रयोग शायरों और कवियों ने अपनी शायरी में खूब किया। कुछ ने 'जाम' पर शेर ओ शायरी 'जाम' लगाकर की। 'जाम' कितने प्रकार के होते हैं। इस पर कोई सर्वमान्य विचार नहीं है।

जाम नम्बर एक– ट्रकों, बसों और कारों, ट्रैक्टर, मोटर साईकिलों, बैल, गाड़ियों का जाम, बड़ी सड़कों या संकरी गलियों में जबरदस्ती और पहले आगे निकलने की होड़ में प्राचीन काल के युद्ध में विरोधी सैनिकों की भाँति यह कसम खाकर अड़ जाना कि हम निकलेंगे और न तुम्हें निकलने देंगे, देशी भाषा में जाम है। शहर की भाँति जाम भारत के सभी नगरों की सबसे बड़ी समस्या या विशेषता है। जिस शहर में जितनी अधिक देर जाम में फंसे रहें, वह उतना ही बड़ा शहर है।

लोग प्रायः बिजली पानी न आने पर, छात्र चुनाव न होने पर, किसी के हाईवे पर ट्रक से दबकर चल बसने पर जाम का ही सहारा लेते हैं कि यदि आज बापू जीवित होते वे भारत माता को सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन की जगह जाम लगवाकर आजादी दिलवा देते। कुछ सड़क छाप मजनू गर्ल्स कॉलेजों के सामने कृत्रिम जाम लगाकर अपने प्रेम पत्रों का आदान–प्रदान कर लेते हैं।

जाम नम्बर दो– प्रायः अधिकांश गाँवों में सड़क पर जाम नहीं लगता क्योंकि वहाँ सड़कें नहीं, पगडंडियों है। किसी ने सही ही कहा है न होगा बांस न बजेगी बांसुरी, यानि न होगी सड़क और न लगेगा जाम। वैसे गाँव में दूसरा जाम (यानि दारु) का प्रयोग खूब होता है, क्योंकि गाँवों में चुनावों के समय उम्मीदवार अपने गुर्गों से जाम लगवाता है। प्रधान और पंचायतों के चुनावों के समय गाँव वालों को अक्सर 'जाम' लगाना पड़ता है। जाम लगाकर वे झूमते है, नाचते है, मस्त हो जाते हैं और वे भूल जाते हैं कि देश हित में उन्हें किसको वोट देना है। वे अक्सर जाम लगवाने (पिलवाने) वाले प्रत्याशी को वोट देकर धन्य हो जाते हैं, फिर अगले 5 सालों तक पुनः जाम लगने (चुनाव) की वोट जोहते हैं। शादी और विवाहों में जाम बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दूल्हे के दोस्त 'जाम' लगाकर तब तक नाचते हैं, जब तक कि शादी का मुहुर्त नहीं निकल जाता या बैंड बाजे वाले नहीं भाग जाते या फिर वे खुद बेहोश होकर सड़क किनारे की नाली में गिर नहीं जाते।

जाम नम्बर तीन– यह जाम हमारी पाचन क्रिया से वाबस्ता है, अक्सर शादी, विवाह और पार्टियों के बाद यह 'जाम' लगता है। पेट की गैस बंद हो जाने को बहुत से लोग 'जाम' ही कहते हैं। यह 'जाम' घबराहट, उल्टी, दस्त और चक्कर आने जैसे लक्षण उत्पन्न कर सकता है। कुल मिलाकर जाम हमारे देश की नियति हो गए हैं। प्रतिवर्ष जाम से लगभग 45000 करोड़ रुपये का पैट्रोलियम हम धुएं में उड़ा देते हैं। स्कूल से लौटते नौनिहाल बच्चे भूखे प्यासे बिल–बिलाते रहते हैं।

बहुत से मरीज अस्पताल पहुँचने के पहले ही हम तोड़ देते हैं। मिलावटी (जहरीला) 'जाम' पीकर कई लोग बेवक्त अल्लाह को प्यारे हो जाते हैं। बहुतों की ऑखें चली जाती है, एक 'जाम' हमें चुनाव जिता सकता है, एक 'जाम' हमें हरवा सकता है। शाहीन बाग का जाम निरन्तर जारी है सरकार जाम लगाने वालों की 'आभारी' है पर जो वहाँ रहते हैं उनकी नौकरी और व्यापार पर यह जाम बहुत भारी है, पर क्या करें लोकतंत्र में 'प्रदर्शन के अधिकार' के कारण जाम में फँसना और दो की जगह 20 किलोमीटर घूमकर ऑफिस/स्कूल पहुँचना हम सबकी लाचारी है। कुल मिलाकर आधुनिक युग में भी 'जाम अनंत जाम कथा अनंता' यथावत् है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अध्यतन युग में सच की सनातन परम्परा

– सचिन बघेल
प्रबन्धक–श्योर सक्सेस कैरियर अकाडमी, हनुमान मन्दिर के सामने, स्टेशन रोड, फिरोजाबाद

सदियों से चली आ रही सनातन सभ्यता में सच की परम्परा, शब्दों की मर्यादा व अंग्रेजों का सम्मान आदि की मौलिक प्रवृत्ति भारतियों की एक विशेषता मानी जाती थी, परन्तु समय का परिवर्तन कहिए या काल की सामर्थ्य, समाज के कुछ अद्‌भुत निकृष्ट मानसिकता के धनी लोगों ने इस परंपरा को इस कदर तार–तार किया है कि सच्चाई तक स्वयं को ठगा सा पा रही है। उसे इस प्रकार छला है कि कपट के कपाटों के भीतर फँसी सच्चाई तक स्वयं को ठगा सा पा रही है। आज के परिवेश में मानव ने शब्दों की मर्यादा का जो अवमूल्यन किया है, उससे सर्वाधिक हानि उन अच्छे व्यक्तित्व से दिए हुए हैं। चूंकि भौतिकवादी समाज में सनातन विचारधारा की व्युतक्रमी परम्पराएं हावी है। सभी एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में समस्त नैतिक विचारों व मान्यताओं का गला घोंट रहे हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। जिसके कारण आज न व्युत्क्रमी विचारधार के इतर अपने पीड़ित और विक्षिप्त अनुभव करते हैं। क्योंकि आज के इस भौतिकवादी युग में निश्छल छवि के लोगों की ह्रदय वेदना होती है कि उनके शब्दों की मर्यादा को झूठे व फरेबी आचरण के लोगों के समान समझा जाता है।

आज के समय में ऐसी कोई दवा उपलब्ध नहीं है जो समाज को अपनी सत्यता की प्रवृति को भी सहर्ष स्वीकार करा सके।

आज के इस भौतिकवादी युग में परस्पर द्वेष रखने की भावना का इतना प्रबल रूप विकसित हो चुका है कि सामान्य तौर पर यह पता लगाना असम्भव हो गया है कि व्यक्ति अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए आपसे आपके मुख पर मिठास भरी बात करते हुए आपकी बढ़ाई कर रहा है या उसके कथ्य में सच्चाई है। चूंकि सहस्त्रों बार यह अनुभूति हुई है कि वही जो आपके प्रत्यक्ष था तब मिश्री घोर रहा था वह पीठ पीछे आपकी निम्नवत् कोटि की बुराई का डिब्बों में पैक करके बॉट रहा है साथ में उदाहरणों के ऑफर भी मुफ्त प्रदान कर रहा है। ऐसे दोहरे चरित्र को लोगों ने आज के समय में अपने जीवन में इस प्रकार मिश्रित कर रहा है कि उनके लिए सच और झूठ में कोई अंतर नहीं होता, केवल कार्य सिद्धि उनका मुख्य प्रयोजन होता है।

आज के समय में अर्थ को लोग इतनी प्राथमिकता देने लगे हैं कि उनको अपने शब्दों की मर्यादा के अमर्यादित होने का भी दुख नहीं होता। हो सकता है समाज ने अपने आपको इस निम्नतम स्थिति के लिए समायोजित कर लिया हो या मानसिक रूप से तैयार कर लिया हो परन्तु आज भी ऐसे लोग हैं जो अपने शब्दों के मान सम्मान के लिए अपना सर्वस्व झोंक कर अपनी सनातनी परम्परा को उच्च स्थान देते हैं।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

संस्मरणात्मक रेखाचित्र– शीत रात का अनुराग

– डॉ. अंजीव अंजुम
राया, मथुरा
मो.– 8979352330

रात के 1 बजे ट्रेन ने पेण्ड्रा रोड स्टेशन पर उतारा। अनजाने शीत का आभास मुझे और सुनील को तब हुआ जब हम प्लेटफार्म पर उतरे। कोच की गर्मी में बाहर की ठण्डक का थोड़ा भी अंदाजा हमें नहीं था। अपने शहर में जहाँ हम एक गर्मी की गुनगुनाहट छोड़ कर आये थे, वहीं मध्य प्रदेश के सिरमौर अमरकण्टक के नजदीकी कस्बे में वह गर्मी गर्म लिहाफों में, ऊनी वस्त्रों और कम्बलों की आड़ में सिमटी दिखाई दी। वहाँ के शीत का प्रकोप हमारे शहर के दिसम्बर–जनवरी माह जैसा ही हमें महसूस हुआ। चारों ओर उड़ती धुंध और कोहरे ने जैसे ही तन को छुआ, तो एक अप्रत्याशित ठण्ड भरी सिहरन विद्युत की गति से बदन पर दौड़ पड़ी।

इस ठण्ड से बचन के प्रथम प्रयास में हम दोनों ने हाथों से अपनी छाती को कस लिया। ट्रेन ज्यों बिना किसी के कहे रुकी थी, वह बिना किसी से बोले खट–खट की आवाज के साथ चल निकली। ट्रेन के जाने के साथ ही प्लेटफार्म पर आवाजाही खत्म हो गई। स्टेशन पर शीत का प्रवाह और अधिक पसर गया। कोहरे की चादर में बल्बों एवं ट्यूब लाइटों का प्रकाश घुल–घुलकर प्रसारित हो रहा था। प्लेटफार्म पर बिछी कुर्सियों का खालीपन अब कोहरा ही भर रहा था। सुनसान प्लेटफार्म के दरवाजे में प्रवेश करते हुए मैंने यात्री प्रतीक्षालय के फर्श, कुर्सियों और कोनों में लोगों को कम्बलों, गर्म दुशालों और उधड़ी रजाईयों में लिपटे हुए देखा। स्टेशन की दुकान और घड़ियाँ धुंधलके में अपना होने का प्रमाण दे रही थी, लेकिन हाँ एक मूँगफली, गुटखे, बीड़ी बेचने वाले को मैंने उस सर्दी में बेखौफ बिक्री करते देखा था। उस वातावरण में कोहरे के अलावा कहीं भी किसी प्रकार की कोई भी गति दिखाई नहीं दे रही थी।

इस दृश्य को देखकर यूँ लगा जैसे शीत के जिंद ने हमारे तन को जकड़ लिया हो। प्याज के छिलकों की तरह हमने गर्म कपड़ों की अनुपस्थिति में सिर्फ सादा शर्टों से तन को ढक लिया। ओढ़ने और बिछाने की चद्दरों ने भी हमें इस भीषणता से बचाने में एक असफल मदद की।

रात को यूँ तो खाना खाया था, लेकिन सर्दी से बचने के बहाने चाय पीने की असंभव सी इच्छा को बल दिया लेकिन नर्मदा मैया ने हमारी इस इच्छा को जल्द ही पूर्ण भी कर दिया।

तभी प्लेटफार्म पर धुंध में से पतले दुबले बदन, हाथ में चाय की केतली और कप को लटकाये चाय–चाय की टेर के साथ एक आकृति को स्टेशन पर घूमते देखा। सुनील ने उसे आवाज दी। लम्बे–लम्बे डग भरती वह आकृति शीघ्र ही हमारे सामने आ खड़ी हुई।

'दादा भाई चाय?' मादक, मोहक और आकर्षण से भरी हुई आवाज से मन उस आकृति की ओर खिंच गया। गौर वर्ण, दुबला–पतला बदन। उम्र तकरीबन चौदह पंद्रह वर्ष। चौड़े माथे पर सरे छोटे–छोटे भूरे रंग के घुंघराले बालों पर एक पीली सफेद ऊनी टोपी। अपने में भोलेपन को समेटे पतली सनेह पूरित आँखें। आँखों के ठीक बीच में एक चौड़ी सपाट सुघड़ नासिका, जो उसकी सुंदता में चुम्बकत्व का व्यापार करने में सक्षम होती। साथ ही उस नासिका की सुंदरता को सवाया करते थे, गुलाबी पतले मुस्कान बखेरते होंठ। साथ ही गोरे सूखे गालों के नीचे छोटी ठोड़ी से उस चेहरे की छवि मन में उतरती जाती थी। उस किशोर ने बदन पर एक गर्म खुली पीले रंग की किसी बड़े व्यक्ति की जाकिट को पहना नहीं था बल्कि, सर्दी से बचने को ओढ़ा था। उसका गर्म मोटा सफेद पायजामा और रेग्जीन के पुराने उघड़े जूते भी किसी की कृपा दृष्टि की पुष्टि करते दिखाई दे रहे थे। हाथ में काली सफेद केतली से गर्मा गर्म चाय को कप में कर हमें थमाते हुए उसकी आवाज पुनः मन

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

पर थाप दे गयी 'ये लो दादा भाई।'
चाय की गर्म भाप ने एक क्षण कोहरे की ठण्डक को विस्थापित कर दिया। शरीर को गर्म करने के लिए हमने चाय को दोनों हाथों में बाँध लिया और तब मैं बोला– 'रात को कोई होटल मिल पाएगा?'
'अब एक बजे कौन सा होटल खुला मिलेगा दादा भाई?'
चाय का दाम देने को हमने उसके हाथ में सौ का नोट रख दिया।
'इतना बड़ा ठोक भाई?'
'नहीं इससे छोटा तो नहीं मिल पाएगा।'मैंने कहा।
'चलो छोटा ठोक देखता हूँ।'कहकर उसने अपनी आँखें, मस्तिष्क व हाथ तीनों से जाकेट, पायजामे और अंदर शर्ट को जेबों को खोजा और सफलता पाकर मेरा हिसाब कह कर वह अपनी दुकानदारी के लिए निकलने को हुआ। तो मैंने पुनः जबाब दिया।
'अमरकण्टक के लिए कोई साधन मिलेगा?'
'सुबह 6 बजे बस आएगी।' उसने जाते–जाते हमें जबाब दिया और वह उसी तरह 'चाय–चाय' की टेर लगाता हुआ आगे बढ़ गया।
अब करना था प्रतिक्षालय में उस शीत भरी रात से स्वयं को बचाने का कोई गर्म प्रयास। सभी कोने पहले से ही कब्जाए हुए थे। कोई स्थान न पाकर हम प्रतिक्षालय के दरवाजे के किनारे पर ही आ सटे। गहराई रात के खुले वातावरण में ठण्ड की मार कुछ ज्यादा ही लगती है वह उस समय हमें महसूस हुआ। सूनेपन, अंधेरे और कोहरे में आसरे का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। भगवान भरोसे छोड़ हम नाउम्मीदी के शिखर पर इस ठण्ड से दो दो हाथ तो क्या कर पाते लेकिन अपने को ओढ़कर वहीं किसी हल की राह में बैठ गये। हमारी आँखों में दिन भर की थकान से नींद घिर आई थी लेकिन ठण्ड ने शरीर के समस्त अंगों को जागरण करने पर मजबूर कर दिया था।
'चाय–चाय' की आवाज से पुनः चेतना जागी। वही किशोर अपनी टेर लगाता हमारे निकट आ गया।
हमने उससे पुनः चाय ली और उससे पुनः वही निवेदन किया।
उसके चेहरे पर एक मुस्कान बिखर आई। वह हमारी स्थिति को समझ गया और बोला 'दादा भाई! अब कोई ठोक नहीं मिलेगा। हाँ मेरी बाड़ी में चलना चाहो तो चलो।'
कितनी दूर है? कहाँ है? कैसी है? या किसी भी होनी अनहोनी को बिना सोचे समझे हम दोनों उसके साथ चलने को तैयार हो गये। अभी हमने सिर्फ हाँ ही की थी कि देखा वह किशोर हमारा सामान लेकर आगे–आगे चलता दिखाई पड़ा। कुछ ही दूरी पर चाय की एक पुरानी दुकान के बाहर चारों ओर से बंद टिन शेड में सामान रखकर वह किशोर मुस्कुराता हुआ बोला 'आ जाओ। यही है मेरी बाड़ी।' हमने अंदर आ गये। उस बाड़ी का वैभव सिर्फ एक पट्टी किनारे रखी लोहे की एक बड़ी सिगड़ी, कुछ चाय चीनी के डिब्बे, एक तरफ रखा पानी का काई लगा मटका और कुछ थैलियों में रखा सामान और दीवार टंगा किसी साधु का चित्र था। धुएँ से टिन की चादरों पर जमा कालापन उस छोटे से बल्ब में साफ दिखाई दे रहा था। हाँ इस शीत की रात में इसका चारों ओर से ढकाव और सिगड़ी से भरी गर्माहट मुझे उस भद्देपन से ज्यादा अच्छी लग रही थी।
'दादा भाई! इस ठोक बैठ लो। यहाँ गर्मी रहेगी।' हम दोनों एक कोने में पड़ी बोरी पर बैठ गये। बाहर की ठण्डक से जान बचाने का यही आखिरी रास्ता और उपाय था।
तब मैंने किशोर से पूछा, 'तुम यही रहते हो।?'
'हाँ'
'तुम्हारा क्या नाम है?'
'गौरे'
'अच्छा नाम है। माँ पिताजी?'
'वे गाँव में है।'
गौरे मेरे प्रश्नों का जबाब भर ही दे रहा था। लेकिन उसका ध्यान सिगड़ी को तेज करने में था। पत्थर के नीचे से उसने लकड़ी के कुछ टुकड़े डालकर आग को एक गत्ते से हवा देकर उसे बढ़ाने के प्रयास के साथ बोला 'कोहरे से ईंधन भी गीला हो गया है। दादाभाई! थोड़ा धुँआ जरूर छोड़ेगा, तकलीफ देगा।' लेकिन फिर हँसकर बोला 'हाँ बाड़ी को गर्म जरूर कर देगा।'

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उसके चहेरे पर कोमल होठों के बीच छोटी सफेद दंतावलियों की सुंदरता अभी देखने को मिली। 'अब तो शायद रात कट जाएगी?' कहकर हम उस बोरे पर व्यवस्थित होकर सोने को हुए तो गौरे ने कहाँ से, कब आये, क्यों आये, कब जाना है जैसे अनेक प्रश्नों के उत्तर मुझसे पा लिये। मेरे विषय में जानकर गौरे मुझसे काफी प्रभावित हुआ। उसने गत्ते से सिगड़ी को सुलगा दिया था। हमारी आँखों में अब नींद के झोंके उठने लगे। तब गौरे बोला 'दादा भाई! अब एक चाय मेरी ओर से?'

मेरी आँखे ही नहीं मन भी नींद से घिर रहा था। यात्रा में अधिक चाय से इस समय चाय का मन न के बराबर था। लेकिन गौरे के प्रेमासिक्त अनुरोध को मैं टाल न सका। उसके आग्रह में मैंने अनुराग के बादलों को तैरते देखा था। एक दैन्यता का भाव और आतिथ्य की अभिलाषा उसके चेहरे पर उभरी हुई थी।

अब भी धुँआ उसकी आँखों में लग रहा था लेकिन इस धुँए से युद्ध में उसकी जीत के बाद उसने चाय का प्याला मेरे हाथों में थमा दिया। सुनील तो कब का निद्रा की लहरों में गोते लगा रहा था।

'पीकर देखो दादा भाई! स्पेशल बनाई है।' गौरे की यह आत्मीयता मन में एक बीज सी आकर जम गई। वास्तव में गौरे के हाथ की चाय का आनन्द ही कुछ अलग था। मैंने बोरी पर लेटे हुए और गौरे ने सिगड़ी के सामने खड़े होकर चाय के घूँट लिये और तब मैंने गौरे के समस्त हालातों को उसकी मायूसी के साथ सुना। उसके पिता को लकवा था। माँ व दो छोटे भाईयों का खर्चा भगवान ने उसी के सिर पर ला रखा था। वह दिन में किसी चाय वाले के यहाँ काम करता था और रात में अपनी बिक्री से अच्छा कमा लेता था।

मैंने आज भाग्य की कठोरता पर कर्म की चोट को पड़ते हुए देखा था।

'ये टिन शेड किसकी है।'

'मालिक की है।'

गौरे से मैंने काफी देर तक बातें की। फिर गौरे ने अपना गाढ़ा चीकट कम्बल मुझ पर डाल दिया और बोला 'आप सो जाईये दादा भाई! मैं जब तक स्टेशन पर घूम आता हूँ।'

यह कहकर गौरे उसी उत्साह से स्टेशन की ओर बढ़ चला। मैं उसे उसी उत्साह से जाते देख रहा था । गौरे की 'चाय चाय' की टेर उस शांत वातावरण में साफ सुनाई दे रही थी। मैं उस कम्बल में लिपट गया। सफाई पसंद होकर भी आज मुझे उस गाढ़े चीकट कम्बल में प्रेम की अनुभूति हो रही थी। माँ की गोद की गर्मी भी शायद ऐसी ही रही होगी। क्योंकि उसे ओढ़कर कब नींद आ गई इसका मुझे पता ही नहीं चला।

ठीक 6 बजे चाय का गिला हाथों में थमाते हुए उस मुस्कराते हुए चेहरे ने हमें एक शानदार नींद से जगाया ' दादा भाई! कैसे नींद आई?' उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी। रात भर की वह थकान अब काफूर हो चुकी थी। चाय का गिलास थमा कर गौरे बोला 'दादा भाई बस आने को है।'

एक घूँट हलक में डाल कर मैं बोला 'तुम नहीं सोये?'

'सो लिया था?'

'कब?'

'आपको पता नहीं चला?'

सच गौरे के चेहरे पर कोई भी नींद की उन्मादी का भाव नहीं था। वह पूरी तरह तरो ताजा दिखाई दे रहा था। उसके चेहरे की मुस्कान से उसका स्वरूप और भी मनुहारी लग रहा था। तभी बस का हॉर्न बजा। गौरे ने बस आने की सूचना भी दी। मैंने चाय पीने में जल्दीबाजी की तो गौरे ने तसल्ली को कहा। तब उसकी धीरता को मैंने अनुभव किया। यह धीरता मैंने अनुभवी लोगों में ही पाई थी। मेरे चाय पीने तक स्वयं गौरे ने हमारा सारा सामान बस में र खकर अपनी चपलता का परिचय भी दे दिया था। उसकी बाड़ी में से जब मैं बाहर आया तो शीत का प्रकोप तो मानों हमारे लिए ही खड़ा था। उस भीषण शीत से बचने का प्रयास करते हुए मैंने अपनी जेब से सौ रुपये का नोट गौरे के हाथों में थमाया, लेकिन गौरे ने साफ मना कर दिया। यहाँ तक की चाय के रुपये भी नहीं लिये। मेरे बार–बार आग्रह को उसने अपनी हठ से दबा दिया। मैं उसके सामने हार गया था। बस रुकी थी लेकिन गौरे नहीं रुका। 'दादा भाई! ट्रेन का टाइम हो गया है चलता हूँ। 'कहकर वह केतली थामें

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

बढ़ निकला।

गौरे को मैंने जाते हुए देखा। उसके कदम स्टेशन की ओर बढ़ निकले थे। मैं उसे तब तक देखता रहा जब तक कि वह मेरी आँखों से ओझल नहीं हो गया।

बस चल दी। हम आगे के सफर पर बढ़ गये। गौरे वहीं रह गया। लेकिन यादों की ट्रेन पर एक सवारी को मैंने बिठा लिया था। वही खिलखिलाते, मुस्कुराते हुए, हाथ में चाय की केतली उठाये, वही गौरे, जो आज भी मेरी यादों में उस शीत भरी रात में अनुराग बिखेरता हुआ दिखाई देता है, अपने 'दादा भाई के कहन से', 'चाय चाय की आनंद भरी आवाज से' 'एक गाढ़े चीकट कम्बल से'। आज भी जब कभी सर्दी की रात कहीं स्टेशन या बस स्टॉप पर मैं कुछ देर का रुकता हूँ। 'दादा भाई! चाय लीजिए' और मैं उससे मिलने की अधूरी कल्पना में महज मुस्कुरा कर रह जाता हूँ कि न जाने कब पेण्ड्रा रोड जाना होगा और न जाने कब उस अनजाने साथी से मुलाकात हो पाएगी।

प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट द्वारा वर्ष 2020 हेतु दिए जाने वाले सम्मानों पर निर्णायकों के समीक्षात्मक आलेख एवं संस्तुति पत्र

हर नजर भींगी हुई है

– डॉ. शिव ओम अम्बर

भाषा–भाव–वैचारिक दृष्टि औश्र प्रभावात्मकता की दृष्टि से डॉ. प्रभा दीक्षित की अभिनव कृति 'हर नजर भींगी हुई है' एक रेखांकित करने योग्य संरचना है। इस युग में हिन्दी गजल के संकलन प्रभूत मात्रा में प्रकाशित हो रहे हैं। लोकप्रियता के कारण वह काव्य–विधाओं में शिखर पर है किन्तु परिणाम में अत्यधिक वृद्धि प्रभावात्मकता में ह्रास का कारण भी बनी है क्योंकि शिल्प–भाव का या विचार में से कोई–न–कोई पक्ष प्रायः अवलेलित दीखता है। अतः जब एक सम्पुष्ट कृति सामने आती है तो साहित्य के सहृदय भवकों को सहज ही सन्तुष्टि का अनुभव होता है। बोलचाल की सहज भाषा में कुछ अति भवप्रवण पंक्तियाँ अनायास चेतना को अभिभूत कर लेती है–

चलते–चलते पाँव थक गये बिना विचारे बैठ गये, जो प्यासे थे घुटनों के बल नदी किनारे बैठ गये।

तथा–

वक्त कैसा भी हो अहसास बचाकर रखिये, जिन्दगी के लिए कुछ खास बचाकर रखिये।

एवं

हर नजर भींगी हुई है बरगदों की छाँव में, एक ऐसा दर्द बरसा है हमारे गाँव में। जब नदी की प्यास का प्रस्ताव संसद में उठा, इक बहस बहती रही बस कागजों की नाव में।

एक वट वृक्ष के नीचे बैठे नम आँखें लिए गाँव के लोग, संसद की अर्थहीन बहसें, नदी के पास घुटनों के बल बैठी प्यास के बिम्ब और जिन्दगी में अनुभूति को, संवेदन–शीलता को जीवन्त बनाये रखे का कवयित्री का आग्रह कवयित्री की रचनात्मक सशक्तता के ज्योतिश्मन्त दृष्टान्त है। कभी–कभी मात्र दो पंक्तियाँ अपनी विलक्षण प्रभावात्मकता के कारण स्मृति की निधि बन जाती हैं और तमाम बड़े–बड़े आलेखों को लघु सिद्ध कर देती है। डॉ. प्रभा दीक्षित की ऐसी ही एक अभिव्यक्ति है–

मेरी बस्ती के पीछे कुछ झुग्गी वाले रहते हैं, जैसे साफ हवेली में मकड़ी के जाले रहते हैं।

भारतीय लोकतंत्र की विडम्बना, सामाजिक जीवन की विषमता और राजनीति के द्वारा दिखाये गये बड़े–बड़े स्वप्नों के उत्पीड़क यथार्थ का चित्रण करने वाली ये पंक्तियाँ कवयित्री की जनवादी चेतना, सहज मानवीय सरोकार और संवेदनासिक्त उद्‌गार को मूलाधार देती है। इसी तरह स्त्री–विमर्श के इस युग में एक कामकाजी महिला के मन में परिवार और कार्यालय के दायित्वों के संदर्भ में चलने वाली ऊहापोह का चित्रण करने वाली प्रस्तुत पंक्तियाँ अपनी प्रभावात्मकता में अप्रतिम हैं–

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

मैं किचन में हूँ अभी खाना बनाने के लिए, अभी इस्कूल भी जाना है पढ़ाने के लिए। देख पाई न कभी आइने में हुस्ने गजल, जिन्दगी जीती रही फर्ज निभाने के लिए।

झुग्गी में भूखे पेट सोने वाले बच्चों में बेकल लक्ष्मी–गणेश की परिकल्पना करने वाली कवयित्री डॉ. प्रभा दीक्षित की लोकसंवेदी दृष्टि कला का संस्पर्श पाकर लोकसंवादी काव्य–सृष्टि में परिवर्तित हो जाती है और उनकी अभिव्यक्तियों को एक समय–सचेत रचनाधर्मिता की भावप्रवण हस्तलिपि बना देती है और समकालीन हिन्दी गजल की सशक्तता का एक स्वर्णिम शीर्षक रच देती है।

मानवीय रागात्मकता को बचाने की एक जरूरी पहल– 'पतली सी हँसी'

– डॉ. महेश 'आलोक'

मैं जब भी कोई कविता पढ़ता हूँ, तो अपनी सारी वैचारिक प्रतिबद्धता को किनारे कर देता हूँ। एक सजग कवि कविता में जो कह रहा है, जिस तरह कह रहा है, लकीर का फकीर तो नहीं है, उसे 'फ्री वर्स' की कविता के शिल्प की समझ है भी कि नहीं। या वह किसी भी तरह आड़ी तिरछी रेखा में अपनी बात कह देने को ही कविता मानता है। उसे अपनी काव्य परंपरा का ज्ञान है भी कि नहीं। वह अपनी गतिशील काव्य परम्परा में कुछ नया जोड़ भी रहा है कि नहीं, या शिल्प और कथ्य में एक निहायत ही बदसूरत नकल या 'रिपीटीशन' के सहारे ही अपनी काव्य ऊर्जा को बेमतलब जाया कर रहा है। मैं जब किसी समकालीन कवि को पहली बार पढ़ रहा होता हूँ तो ऊपर लिखी तमाम बातें एक साथ काव्य पाठ की प्रक्रिया में घटित हो रही होती है। कई बार तो ऐसा लगता है कि इस कवि को डाक्टर ने तो नहीं कहा है कि कविता लिखने से सेहत ठीक रहती है। क्यों अपना और पाठक दोनों का समय जाया कर रहा है। इस तरह के कवियों को दूर से ही प्रणाम करने का मन करता है।

विजय राठौर के काव्य संग्रह– 'पतली सी हँसी' से गुजरते हुए लगा कि विजय के भीतर समकालीन की समझ है और न केवल समझ है, समकालीन कविता का जो काव्य मुहावरा है, उसकी भाषा और शिल्प की जो सर्जनात्मक परम्परा है, विजय उससे भी बखूबी पिरिचित हैं। उनके यहाँ लोक और शहर दोनों है। प्रकृति और लोक जीवन के प्रति एक गहरी ईमानदार संवेदना हे। शहरी मध्यवर्गीय जीवन का सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तनाव है, जिसे वे बखूबी पहचानते ही नहीं हैं, उसे बड़ी सहजता से अपनी कविता में चरितार्थ भी करते हैं। वे प्रगतिशीलता को नारेबाजी की तरह नहीं लेते, आम आदमी की पीड़ा और करुणा के भीतर से, उसके भोगे हुए यथार्थ की वास्तविकता को पूरी कलात्मक संवेदना से अभिव्यक्त कर देते हैं।

विजय का कवि अपने समय का परीक्षण करता है। इस परीक्षण में प्रगति और परिवर्तन के स्थूल आंकड़े नहीं हैं। कवि के देखने का ढंग ऐसा है कि वह अपने समय की दुर्घटनाओं और हादसों को भी देखता है। इस परीक्षण में जो नष्ट हो चुका है, जो क्षत–विक्षत है, वह भी शामिल है और इसे देखने के लिए, उसका परीक्षण करने के लिए वह वहाँ तक जाता है। जहाँ 'एक भिखारी की टेर में उसे अपनी आवाज सुनाई देती है'। जब एक बच्चा बड़ा होगा तो इस कठिन समय में 'वह भूल जाएगा खिल–खिलाकर हँसना, खुले कंठ से रोना भी नहीं होगा उसके वश में', लेकिन इन सबके बीच कवि आश्वस्त है कि सब कुछ नष्ट नहीं होगा। अगर कोई यह समझता है कि 'उसने बीज को मिट्टी में दफना दिया है और वह मर जाएगा, ऐसा सोचना गलत है। कुछ दिन बाद उसमें से दो हरी पत्तियाँ फिर निकल आएगी, यह बताने के लिए कि सृष्टि अनवरत है, वह कभी नष्ट नहीं होगी। झरने गिरते रहेंगे। नदियाँ बहती रहेंगी। हवाएं दुलराती रहेंगी पेड़ों

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

को। खत्म नहीं होंगे पक्षिओं के कलरव होठों पर खिलते रहेंगे हँसी के फूल'।

स्त्री जीवन की समस्याओं को लेकर, उसके शोषण को लेकर, उसकी विडम्बनाओं को लेकर, समाज में उसकी गैरबराबरी वाली हैसियत को लेकर हिन्दी में अनन्त कविताएं लिखी जा रही हैं। इस बीच यह भी कहा गया कि स्त्री के अनुभव को केवल स्त्री ही सही ढंग से व्यक्त कर सकती हैक, क्योंकि उस अनुभव का भोक्ता पुरुष तो कदापि नहीं हो सकता। उसकी कितनी भी बारीक संवेदना हो, वह उस पीड़ा का अनुभव नहीं कर सकता, जिसका अनुभव सिर्फ स्त्री कर सकती है। वह उसे पूरी रचनात्मक आकुलता से अभिव्यक्त नहीं कर सकता और इस तर्क को लेकर हिन्दी में स्त्री विमर्श की बाढ़ सी आ गई। सारी दुनिया में स्त्री विमर्श हमेशा से सुर्खियों में रहा है। हिन्दी में ही नहीं, भारतीय भाषाओं के साहित्य में भी है। इस आन्दोलन ने इना जरुर किया कि लेखिकाओं को साहित्य के परिदृश्य पर पूरी सजगता से उपस्थित कर दिया। पूरे छायावाद में सिर्फ महादेवी वर्मा हैं। प्रगतिशील कविता में तो कोई प्रतिष्ठित कवयित्री है ही नहीं। नई कविता और समकालीन कविता ने लेखिकाओं की एक बड़ी जमात खड़ी कर दी। इससे निश्चय ही कविता की जमीन और उर्वर हुई और समृद्ध हुई। इसी के साथ यह भी सही है कि इस तरह की अधिकांश कविताओं में अब एक खास तरह का रीतिवाद दिखाई देने लगा है। इस तरह के कवितात्मक खतरों के बीच विजय राठौर एक कविता लिखते हैं– 'यहाँ कोई स्त्री नहीं रहती'। वे स्त्री पीड़ा को अनुभव करने के कोई झूठे दावे नहीं करते। बड़ी सहजता से सटीक पारिवारिक बिम्बों और प्रतीकों के माध्यम से बता जाते हैं कि 'घर का बजूद पुरुष से नहीं स्त्री से है–

प्रवन्धा श्री सम्मान 2000

– डा. अमित गहलौत

प्रिय महोदय,

आप द्वारा प्रेषित कृतियों का मूल्यांकन विधा के मानकों के आधार पर किया गया। प्रबन्ध–काव्य में कथा–सूत्र की प्रस्तुति सर्गबद्धता के साथ कविता में निरंतरता के साथ की जाती है। उसमें बीच–बीच में कोई गद्यात्मक निर्देश, व्याख्या अथवा परिचयात्मक लेख–आलेख नहीं होता है। स्फुट छंदों में, कवित्त आदि की शैली में लिखे गए प्रबंध काव्य चाहे वह खण्ड काव्य हो अथवा महाकाव्य हो, उसमें भी केवल विविध विषयों के वर्णन के छंद ही नहीं होते हैं। उसमें भी एक सुसंबद्ध कथा–सूत्र चलता है जैसे ब्रज भाषा का उद्धवशतक है। केवल संख्या वृद्धि के प्रयोजन से विविध स्फुट विषयों के स्वतंत्र छंदों का संग्रह खण्ड–काव्य या प्रबन्ध काव्य की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

उक्त मानक के आधार पर प्रदत्त पुस्तकों का सघन अनुशीलन करने पर डॉ. प्रमोद कुमार श्रोत्रिय कृत 'गन्धर्व कन्या' काव्यकृति ही, खण्ड काव्य की श्रेणी में आता है। अन्य काव्य स्फुट कविता–संग्रह मात्र है, जिनमें कोई एक कथा–सूत्र न होकर विविध स्वतंत्र विषयों पर सृजित, स्वतंत्र मुक्त बंदों का संग्रह है जिनमें विविध स्थलों, प्रसंगों और मुक्त रूप से असंबद्ध स्वतंत्र कालक्रमों के व्यक्तियों और घटनाओं का समावेश है। अतः 'गन्धर्व–कन्या' खण्ड काव्य को ही इन कृतियों में सर्वश्रेष्ठ होने का गौरव प्राप्त है। यही हमारा निर्णय है। मूल्यांकन प्रपत्र संलग्न है।

सादर .....

कुछ कहते हैं, करते नहीं। कुछ करते हैं, कहते नहीं।
हम कहते भी हैं और करते भी हैं
– कृष्ण कुमार 'कनक'

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

शोध श्री सम्मान 2020

–डॉ. सुन्दरवीर सिंह यादव

डा. मुकेश कुमार का 'बिहार के विभिन्न संस्थागत क्षेत्रों में हिन्दी का अत्याधुनिक प्रयोजन मूलक स्वरूप' आद्योपान्त पढ़ा। शोधकर्ता ने तथ्यपरक चिन्तन, विषय का तलस्पर्शीय प्रस्तुतीकरण, भाषा के अर्थगर्भित प्रस्तुतीकरण और सहजता के साथ इस शोध प्रबन्ध को उत्कृट स्वरूप प्रदान किया है। तथ्यों की खोज में शोधार्थी ने सर्वेक्षण, स्वाध्याय एवं चिन्तन तीनों का आश्रय लिया है। राष्ट्र भाषा एवं राजभाषा के स्वरूप पर चिंतन करते हुए शोधार्थी ने संविधान की धाराओं, राष्ट्रपति के आदेश और केन्द्र सरकार द्वारा पारित अधिनियमों का सामिग्री के रूप में प्रयोग किया है। उसने स्वीकार किया है कि 1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य समर काल से ही हिन्दी राष्ट्र की भावात्मक एकता और जन जागरण का माध्यम बन गई थी। शोध ग्रन्थ सात प्रकरणों में विभक्त है। इसकी विषय वस्तु तथ्यपरक और प्रामाणिक है। भाषा सुगठित है परन्तु यत्र–तत्र टंकण भी त्रुटियाँ खटकती है। अतः मैं इस ग्रंथ को शोध श्री सम्मान हेतु संस्तुत करता हूँ।

नाट्य श्री सम्मान 2020

– डॉ. राकेश सक्सेना

सेवानिवृत अध्यक्ष हिन्दी विभाग जवाहरलाल नेहरु (पी.जी.) कॉलेज एटा

प्रज्ञा सम्मान समारोह 2020 के लिए प्राप्त प्रविष्टियों में राज नरायण साहू 'राज' कृत 'दुख का अंत', डा. नाथूराम राठौर कृत 'वृक्ष सेवी शकुंतला' एवं आचार्य भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' कृत 'हनुमन्महानाटक' तीन नाटक विधा की पुस्तकें मूल्यांकन हेतु प्राप्त हुई। गहन अध्ययन के उपरान्त उपर्युक्त तीन नाट्य कृतियों में से आचार्य भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' द्वारा रचित 'हनुमन्महानाटक' को प्रथम कोटि में रखता हूँ।

नाटकधार ने पौराणिक प्रख्यात कथावस्तु के माध्यम से हनुमत्चरित का चयन करके नाट्य ग्रंथ का सृजन किया है। ये कथा हिन्दू समाज को जन–जन के ह्रदय में रची बसी है, उनका ज्ञान एवं पराक्रम चर्चित है। अतः वेद–पुराण, महाभारत, बाल्मीकि रामायण, रामचरित मानस, कृत्तिवास, कम्ब, भावार्थ रामायण, सर्वांग रामायण आदि के अध्ययन से नाटककार ने संघटित कथा को रम्य, रोचक व महत्वपूर्ण बना दिया है। पाँच अंकों व तिहत्तर दृश्यों में हनुमत–चरि को अत्यधिक सरल और बोधगम्य ढंग से उभारा गया है।

संवादों की सहज स्वाभाविकता, सरलता, संक्षिप्तता से नाट्य शिल्प सजीव हो उठा है। गद्यात्मक व पद्यात्मक संवाद कथानक, सूक्ष्मता और सरलता है। वहाँ सरसता और प्रवाहशीलता भी है। अभिनय तथा रंगमंच के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है। उन सभी तत्वों का समावेश नाटककार ने बड़ी कुशलता के साथ किया है। रंग संकेत, पद्यात्मक मधुर योजना ने नाटक की अभिनेयता में चार चाँद लगा दिये हैं। नाटकीय तत्वों की दृष्टि से यह एक सफल कृति है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

गीत श्री सम्मान 2020

– डॉ. राम सनेही लाल शर्मा
'यायावर'

श्री संतोष कुमार सिंह का गीत नवगीत संग्रह 'आग लगी है' नवगीत के मानकों पर खरे उतरने वाले गीतों का संकलन है। उनके पास सरस संवेदना लोक संस्कृति की प्रत्यक्ष अनुभूति लोकभाषा की सरसता से सम्पन्न बिम्बधर्मी भाषा, छन्द और लय की सही समझ और मूल्यपरक चिन्तन दृष्टि है। उनके गीतों में 'चीर हरण के लिए दु:शासन सीना तान खड़े' जैसे मिथकीय प्रतीकों के माध्यम से समय के विद्रूपित यथार्थ को प्रकट करने का सामर्थ्य है। दूसरी ओर चौपाल के सूनेपन, अबकी बार चुनाव में हुई धाँधली और दहेज की दुर्दान्त विभीषिका को भी इन गीतों में प्रकट किया गया है। उनकी भाषा में सहज प्रवाह है वे ग्रामीण जीवन के अतीत को याद करते हुए लहडू, पालकी, रथ, रब्बा, घोंटा, पट्टी, कारौंची, हाल, रहट, रहटापुर, बत्त आदि का प्रयोग करते हुए उसके बिम्ब को साकार कर देते हैं। राजनीति की विद्रूपता हो, गरीब की दीपावली हो या किसी ऋतु का गीतात्मक चित्रण सभी में संतोष कुमार सिंह के गीत अपना प्रभाव छोड़ते हैं। अत: अनुभूति की गहनता और शिल्प के परिपक्व कौशल के समन्वय के कारण 'आग लगी है' प्राप्त प्रविष्टियों में सर्वोत्तम हैं। अत: मैं इसे 'गीत श्री सम्मान 2020' देने की संस्तुति करता हूँ।

कथा श्री सम्मान 2020

– डॉ. श्रीप्रकाश यादव

मान्यवर,

आपके द्वारा कथा श्री अलंकरण हेतु भेजी गई प्रविष्टियों के गहन अवलोकन के पश्चात् हिन्दी साहित्य में कथा नामक गद्य की विधा के सभी पहलुओं पर विचार करते हुए निर्णय प्रदान करने का प्रयास मेरे द्वारा किया गया। उपरोक्त विमर्श को आधार बनाकर ही समस्त प्रविष्टियों को अंक प्रदान किए। इस प्रकार मूल्यांकन पत्र में सर्वाधिक अंक डॉ. महेन्द्र अग्रवाल कृत कहानी संग्रह 'चल खुसरो घर आपने' को प्राप्त हुए हैं। अत: मैं आपके ट्रस्ट द्वारा वर्ष 2020 के लिए दिए जाने वाले 'कथा श्री सम्मान' हेतु डॉ. महेन्द्र अग्रवाल जी के नाम की संस्तुति करता हूँ।

गद्य श्री सम्मान 2020

– डॉ. शिव कुशवाहा

प्रज्ञा सम्मान समारोह 2020 के समीक्षा/आलोचना विधा में प्राप्त 6 प्रविष्टियों में डॉ. राजकुमारी शर्मा का ग्रन्थ 'नारी संवेदना और उषा प्रियंवदा की कहानियाँ' समीतिक्षत बिंदुओं में मुझे सर्वाधिक महत्वपूर्ण लगा। यह ग्रंथ बहुत ही श्रमपूर्वक तैयार किया गया है। उषा प्रियंवदा की कहानियों में संवेदना के भावबोध का सटीक आकलन यह ग्रंथ प्रस्तुत करता है। लेखिका डॉ. राजकुमारी शर्मा ने नारी संवेदना का विश्लेषण करते हुए उषा प्रियंवदा की कहानियों के उदाहरण देकर सारगर्भित टिप्पणियाँ भी प्रस्तुत की हैं जो उनके ग्रन्थ की मौलिक होना सिद्ध करता है। इस ग्रन्थ की भाषा शैली बेजोड़ है और शोध के विभिन्न पहलुओं पर यह खरा उतरता है। मेरा विश्वास है कि यह शोध ग्रन्थ उषा प्रियंवदा की कहानियों पर बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा और हिन्दी कथा आलोचना में एक नई पहचान बनाएगा। लेखिका को शुभकामनाओं सहित ....

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

छन्द श्री सम्मान 2020

– डॉ. चन्द्रवीर जैन

साहित्य के इतिहास की दृष्टि से गद्य की अपेक्षा छन्दबद्ध कविता का समय पर्याप्त अधिक रहा है। 'कविताई कैसे करूँ' में कवि में छन्द वैविध्य की अपार शक्ति है। पारम्परिक छन्दों में प्राय: सभी प्रकार की मात्रिक तथा वर्णिक छन्दों की कविताएं प्रस्तुत संग्रह में उल्लखित है। समकालीन कविता के युग में कवि ने पारम्परिक छन्दों को महत्ता दी है। मेरी प्रबल संस्तुति है कि श्री कन्हैयालाल साहू को 'प्रज्ञा सम्मान' प्रदान किया जाय।

कभी खाली हार तो कभी फूलों के हार

'सृजन श्री सम्मान हेतु इस वर्ष जो भी प्रविष्टियाँ मिलीं उनमें कुछ कवियों ने अपनी प्रकाशित रचनायें भी भेज दी... जबकि यह सम्मन उन नवांकुरों के लिए है जिनकी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। कुछ रचनाकारों ने सिर्फ तुकबंदी ही की है। कुछ अपनी रचनाओं में कोई नई बात नहीं रख पाये। कुछ ने प्रारम्भ तो अच्छा किया पर बाद में भटकते से प्रतीत हुए। आइये काव्य पर थोड़ी चर्चा कर ली जाय ...

काव्य क्या है? क्या मात्र तुकबंदी ही काव्य है? क्या किसी घटना या कहानी को गाने लायक बना देना ही काव्य है? मैं कुछ बड़े विद्वानों के विचार यहाँ रख रहा हूँ–

साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार 'वाक्यरसात्मकंकाव्यम्' अर्थात् 'रसात्मक वाक्य ही काव्य है।' 'शब्दार्थौ सहितों काव्यम्।' भामह (काव्यालंकार) (शब्द और अर्थ के 'सहित भाव' को काव्य कहते हैं) आचार्य मामह शब्द और अर्थ के सामंजस्य पर बल देते हैं जबकि पण्डितराज जगन्नाथ के अनुसार, 'रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है।'

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार 'हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्त साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।'

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं 'किसी प्रभावोत्पादक और मनोरंजक लेख, बात या वक्तृता का नाम कविता है।' अर्थात् कविता अत्यंत व्यापक है वह गद्य और पद्य दोनों ही रूपों में हो सकती है, बस इसमें दो गुण होने चाहिए। प्रभाव डालने की क्षमता और आनन्द प्रदान करने की शक्ति।'

मैंने सभी प्रविष्टियों को ध्यान से पढ़ा। कई बार पढ़ा... मनन किया। कुछ निराशा भी हुई... किन्तु श्री अमल श्रीवास्तव (विलासपुर) और श्री शिवराम सिंह 'शान्ति' की रचनाओं को पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ।

अमल श्रीवास्तव की रचनायें बहुत श्रेष्ठ है उनमें रचनाधर्मिता की आग है, उन्हें राष्ट्र की चिन्ता है... वे मानवता पर भरोसा करते है.. वे आगे चलकर बड़े कवि बनेंगे... मेरा विश्वास है। वे कुछ ही अंकों से पीछे रह गए अन्यथा तो वे 'सृजन श्री' होने के बहुत निकट थे। अमल– बहुत–बहुत शुभकामनायें।

शिवराम सिंह 'शान्ति' की रचनायें अधिक परिपक्व कसी हुई और काव्य की दृष्टि से मुझे सभी प्रविष्टियों में श्रेष्ठतम लगी। उन्होंने सामाजिक परिवेश, वर्तमान राजनैतिक माहौल और आध्यात्मिकता को न सिर्फ महसूस किया है बल्कि उसे जिया भी है।

सृजन श्री सम्मान हेतु मुझे 'शान्ति' सर्वाधिक उपयुक्त लगे। उन्हें 'सृजन श्री सम्मान' हेतु बहुत बधाई।

मेरे विचार में काव्य में रस, प्रभाव डालने की क्षमता और आनन्द प्रदान करने की शक्ति होना अनिवार्य तत्व है, हमारे नए रचनाकार इस बात का ध्यान देंगे तो निश्चित ही उनका 'काव्य'– 'काव्य' होगा। मुझे आशा है कि आगामी वर्षों में हमें और श्रेष्ठ कवि और उनकी सृजनात्मकता के दर्शन होंगे। सभी प्रतिभागियों को मेरी शुभकामनायें, वे इसे हार जीत के रूप में न लें। लगातार रचनाओं में परिमार्जन करते रहे।

जीवन में 'कभी खाली हार तो कभी फूलों के हार' मिलते रहते हैं। बस काव्य सृजन करते हुए आगे बढ़ते रहिये।

आपका अपना ...

डा. अजिर बिहारी चौबे
एसोसिएट प्रोफेसर– मनोविज्ञान
एस.आर.के. महाविद्यालय, फिरो.

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट फिरोजाबाद द्वारा 29 मार्च 2020 को आयोजित

राष्ट्र स्तरीय प्रज्ञा सम्मान समारोह 2020

में सम्मानित विभूतियों का विवरण

स्व. श्री गंगाशरण मित्तल स्मृति साहित्य सुधा सम्मान 2020 जोकि

फिरोजाबाद नगर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री आनन्द मित्तल तथा श्री गोविंद जी मित्तल द्वारा आपने पिताश्री की पुण्य स्मृति में प्रदान किया जाता है। यह सम्मान इस वर्ष अखिल भारतीय साहित्य परिषद के माध्यम से सम्पूर्ण भारत के हिन्दी साहित्य को जोड़ने में सम्पूर्ण ऊर्जा झोंकने वाले मुम्बई महाराष्ट्र निवासी श्रेष्ठ हिन्दी सेवी साहित्यकार श्री ऋषि कुमार मिश्रा जी को हिन्दी भाषा के संवर्धन में अहम भूमिका अदा करने हेतु प्रदान किया जा रहा है।

स्व. उ.प्र. रत्न श्री चक्रेश जैन स्मृति साहित्येन्दु सम्मान 2020 जोकि श्री

दीपक जैन जी द्वारा अपने पिता श्री की स्मृति में प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान कालीकट विश्वविद्यालय, केरल में हिन्दी विभागाध्यक्ष, अहिन्दी भाषी श्रेष्ठ हिन्दी साहित्यकार प्रोफेसर डा. अच्युतन को प्रदान किया जा रहा है।

श्री भरत लाल अग्रवाल स्मृति सत्यशोध श्री सम्मान 2020 जोकि युवा उद्योगपति राजू मित्तल द्वारा

अपने पिताश्री की स्मृति में पत्रकारिता के क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान देने वाले श्रेष्ठ पत्रकार को दिया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र से सम्बन्धित पत्रकार श्री अरुण कुमार त्रिपाठी को प्रदान किया जा रहा है।

श्रीमती सुखरानी भटनागर स्मृति कलानिधि सम्मान 2020 जोकि

सुप्रसिद्ध शिक्षा-विद् डा. मयंक भटनागर द्वारा शिक्षा जगत का सूर्य मानी जाने वाली अपनी माताश्री की स्मृति में दिया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान दिल्ली निवासी अन्तर्राष्ट्रीय कत्थक नृत्यांगना कु. दीप्ती गुप्ता को प्रदान किया जा रहा है।

स्वतंत्रता सेनानी श्री गया प्रसाद शर्मा स्मृति लोकनिधि सम्मान 2020 जोकि हमारे ट्रस्ट के निदेशक

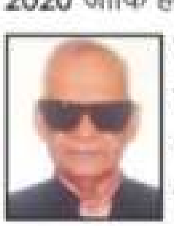

साहित्य-भूषण डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' द्वारा प्रदान किया जाता है। यह सम्मान रैपुरा जाट, मथुरा निवासी सुप्रसिद्ध ब्रज भाषा कवि, प्रज्ञा-चक्षु रामखिलाड़ी स्वदेशी को प्रदान किया जा रहा है।

सेवार्थ व निःशुल्क संचालित कोचिंग सेण्टर इंस्पायर फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त नारी गौरव सम्मान 2020 इस वर्ष पोर्टब्लेयर,

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह निवासी अहिन्दी भाषी हिन्दी सेविका डॉ. टाड़ी-मल्ला विजया भारती को प्रदान किया जा रहा है जोकि अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी का प्रचार प्रसार करने में संलग्न है।

स्वतंत्रता सेनानी दादा भूदान श्री श्याम बिहारी चौबे स्मृति शोध श्री सम्मान 2020 जोकि 'कनक काव्य

कुसुम' के प्रमुख सम्पादक डॉ. अजिर बिहारी चौबे जी द्वारा अपने पिता श्री की स्मृति में दिया जाता है। यह सम्मान इस वर्ष समस्तीपुर बिहार निवासी डॉ. मुकेश कुमार को उनके शोध ग्रन्थ 'बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोजन मूलक स्वरूप' पर दिया जा रहा है।

नेताजी नेत्रपाल सिंह यादव स्मृति प्रबन्ध श्री सम्मान 2020 जोकि फिरोजाबाद के वरिष्ठ हास्य कवि श्री मनोज राजताली द्वारा प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान पिथौरागढ़ उत्तराखण्ड निवासी

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

डॉ. प्रमोदकुमार श्रोत्रिय को उनके खण्ड काव्य 'गंदर्भ कन्या' पर प्रदान किया जा रहा है।

स्व. श्री नंदराम राठौर स्मृति नाट्य श्री सम्मान 2020 जोकि मास्टर

श्रीपति लाल राठौर द्वारा अपने पिता श्री की स्मृति में प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान अम्बेडकर नगर, उ. प्र. निवासी आचार्य भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' को उनकी नाट्य कृति 'हनुमन्महानाटक' पर दिया जा रहा है।

डॉ. मक्खनलाल पाराशर स्मृति काव्य श्री सम्मान 2020 जोकि श्री

मुकुल पाराशर द्वारा अपने पिता श्री की पुण्य स्मृति में प्रदान किया जाता है जिन्हें पूरा नगर बड़े गुरु जी के नाम से पहचानता था। इस वर्ष यह सम्मान जाँजगीर–चाँपा, छत्तीसगढ़ निवासी विजय राठौर को उनकी कृति 'पतली सी हँसी' पर प्रदान किया जा रहा है।

श्री अरविन्द कुमार गुप्ता स्मृति छंद श्री सम्मान 2020 जोकि सहज तथा

सरल हृदय वाले पुस्तक विक्रेता श्री रतन गुप्ता द्वारा प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान बलादा बाजार, छत्तीसगढ़ निवासी कन्हैया साहू 'अमित' को उनकी कृति 'कविताई कैसे करूँ' पर प्रदान किया जा रहा है।

डॉ. अशोक तिवारी स्मृति गजल श्री सम्मान 2020 जोकि श्री पीयूष

तिवारी जी द्वारा अपने हिन्दी के परम विद्वान पिताश्री की स्मृति में दिया जा रहा है। इस वर्ष यह सम्मान कानपुर निवासी डॉ. प्रभा दीक्षित को उनमके गजल संग्रह 'हर नजर भींगी हुई है' पर प्रदान किया जा रहा है।

आचार्य राकेश बाबू ताबिस स्मृति गीत श्री सम्मान 2020 जोकि

'कनक काव्य कुसुम' के सह सम्पादक पूरन चन्द्र गुप्ता जी द्वारा अपने परम मित्र की स्मृति में प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान मथुरा निवासी श्री संतोष कुमार सिंह को उनकी गीत कृति 'आग लगी है' पर प्रदान किया जा रहा है।

श्री मथुरा प्रसाद मानव स्मृति सृजन श्री सम्मान 2020 जोकि श्री हर्ष

वर्द्धन 'सुधान्शु' द्वारा अपने सुप्रसिद्ध कवि पिताश्री की स्मृति में प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान बाह, आगरा निवासी नवोदित कवि शिवराम 'शान्ति' को उनके पाँच गीतों पर प्रदान किया जा रहा है।

धावक रवीन्द्र सक्सेना स्मृति गद्य श्री सम्मान 2020 जोकि नरेन्द्र

सक्सेना जी द्वारा अपने भारतीय सेना के श्रेष्ठ धावक भाई की स्मृति में प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान दिल्ली निवासी डॉ. राजकुमारी शर्मा को उनकी कृति 'नारी संवेदना और ऊषा प्रियंवदा की कहानियाँ' पर प्रदान किया जा रहा है।

श्री दिलीप जिन्दल स्मृति कथा श्री सम्मान 2020 जोकि नगर के प्रसिद्ध

सर्राफा व्यवसायी लकी जिन्दल तथा यश जिन्दल द्वारा अपने पिताश्री की स्मृति में प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान शिवपुरी, मध्य प्रदेश निवासी डॉ. महेन्द्र अग्रवाल को उनके कहानी संग्रह 'चल खुसरो घर आपने' पर प्रदान किया जा रहा है।

सभी सम्मान हेतु
चयनित विभूतियों
को ट्रस्ट हृदय
से शुभकामना
प्रेषित
करता है।

– कृष्ण कुमार
'कनक'

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

राष्ट्र-स्तरीय प्रज्ञा सम्मान समारोह 2021

1. 11000/- स्व. श्री गंगाशरण मित्तल स्मृति 'साहित्यसुधा सम्मान' (हिन्दी भाषी साहित्यकार)
2. 11000/- श्री भरतलाल अग्रवाल स्मृति 'साहित्येन्दु सम्मान' (अहिन्दी भाषी साहित्यकार हेतु)
3. 11000/- श्रीमती सुखरानी भटनागर स्मृति 'कलानिधि सम्मान' (युवा महिला कलाकार हेतु)
4. 7500/- स्वतंत्रता सेनानी श्री श्याम बिहारी चौबे 'पत्रकारिता सम्मान' (पत्रकारिता हेतु)
5. 5100/- स्वतंत्रता सेनानी पं. गया प्रसाद शर्मा स्मृति 'लोकनिधि सम्मान' (लोक साहित्य हेतु)
6. 5100/- इंस्पायर फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त 'नारीगौरव सम्मान' (महिला साहित्यकार हेतु)
7. 5100/- उ.प्र. रत्न श्री चक्रेश जैन स्मृति 'शोध श्री सम्मान' (शोध हेतु)
8. 5100/- नेताजी नेत्रपाल सिंह याद स्मृति 'प्रबन्धश्री सम्मान' (महाकाव्य/खण्डकाव्य हेतु)
9. 2100/- श्री नन्दराम राठौर स्मृति 'नाट्यश्री सम्मान' (नाटक/एकांकी संग्रह हेतु)
10. 2100/- डॉ. मक्खनलाल पाराशर स्मृति 'काव्यश्री सम्मान' (अतुकान्त/नई कविता हेतु)
11. 2100/- अरविन्द कुमार गुप्ता स्मृति 'छन्दश्री सम्मन' (पारम्परिक छन्द संग्रह हेतु)
12. 2100/- श्रीमती सुमित्रा देवी गुप्ता स्मृति 'गजलश्री/सजलश्री सम्मान' (गजल/सजल संग्रह हेतु)
13. 2100/- आचार्य राकेश बाबू ताबिस स्मृति 'गीतश्री सम्मान' (गीत/नवगीत संग्रह हेतु)
14. 2100/- श्री मथुरा प्रसाद मानव स्मृति 'सृजनश्री सम्मान' (नवोदित कवियों के पाँच गीतों पर)
15. 2100/- धावक रवीन्द्र कुमार सक्सेना स्मृति 'गद्यश्री सम्मान' (निबन्ध/डायरी/समीक्षा/यात्रावृत हेतु)
16. 2100/- श्री दिलीप जिन्दल स्मृति 'कथाश्री सम्मान' (कहानी/उपन्यास हेतु)

सामान्य निर्देश-

क्रमांक 1 से 6 तक के सम्मानों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित नहीं हैं। क्रमांक 7 से 16 तक के लिए प्रविष्टियाँ निःशुल्क आमंत्रित हैं। प्रविष्ट स्वरूप तीन-तीन प्रतियाँ, एक सादा ए-4 साइज का लिफाफा, 30 रुपये के डाक टिकिट भेजें। शोध यदि प्रकाशित है तो उसकी तीन प्रतियाँ अथवा एक प्रति फोटो स्टेट कराकर भेजें। प्रकाशित कृतियों का प्रकाशन वर्ष 2011 से 2020 के मध्य हो। जिनकी कोई कृति प्रकाशित नहीं है वे 'सृजनश्री सम्मान' हेतु अपने पाँच गीत तीन प्रतियों में भेजें। प्रविष्ट भेजने की अन्तिम तिथि 31 अक्टूबर 2020 है।

प्रविष्टि भेजने का पता-

कृष्णकुमार 'कनक', 'कनक निकुंज'
गाँव व पोस्ट- गुँदाऊ ठार, मुरली नगर,
थाना लाइनपार, फिरोजाबाद-283 203 (उ.प्र.)
मो.- 7017646795

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

– दिव्य सृष्टि
'दिव्या'
संकलनकर्ता
मो.– 8535038640

(1)
बन गये जोगी मगर,
अन्तकरण है लापता,
खूँटियों पर टाँग दी है,
आचरण की सभ्यता।
संतजन कतिपय स्वयंभू,
बन गये भगवान जब,
मंदिरों को छोड़कर
जाने लगे हैं देवता
शिवानन्द सिंह सहयोगी
'हरिगन्धा सितम्बर 2016'

(2)
न बँटे जात में,
ना धर्म की कुछ घात हो उसमें,
सुहानी धूप हो या
प्रेम की बरसात हो उसमें।
लिखे जैसा बने वैसा,
दिखा दें हम जमाने को,
अगर कविता रचे तो बस,
अमन की बात हो उसमें
किशोर श्रीवास्तव
'हरिगन्धा सितम्बर 2016'

(3)
एक नल का है,
जिसपे भीड़ बहुत भारी है।
प्यास बस्ती में है इतनी,
कि एक नदी कम है।
किशन तिवारी
'माध्यम अक्टू.–दिस.17'

(4)
सुमन तोड़कर केश सजाऊँ,
ऐसा मेरा प्यार नहीं है।
किसी और की दौलत पाऊँ,
सीखा ये व्यापार नहीं है।।
डा. मिथलेश दीक्षित
'संयुक्तांक अक्टू. 15 से मार्च 16'

(5)
आधुनिकता की ये चाहत होगी,
सुख से जीने की सहूलियत होगी,
आधुनिक होगा मनुज जितना भी
उसको कविता की जरूरत होगी
चन्द्रसेन विराट
'साहित्यायन अप्रैल–जून 2016'

(6)
दिल में गुलशन
आँख में, सपना सुहाना रख
आसमाँ की डालियों पर,
आशियाना रख।
हर कदम पर एक
मुश्किल जिंदगी का नाम,
फिर से मिलने का
मगर, कोई बहाना रख।
डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'
'बुलन्दप्रभा अक्टू. 15 से मार्च 16'

(7)
बेशक सच कड़वा होता है
लेकिन सच सच्चा होता है
हवा उड़ा देती है उसको
जो पत्ता सूखा होता है।
सविता चड्ढा
'बुलन्द प्रभा–जुलाई–दिस. 2018'

(8)
राह–राह ही चलना है,
तो गिरना और सँभलना क्या
मुझको फर्क नहीं पड़ता है
इसमें रंग बदलना क्या?
सबकी रातें अलग–अलग हैं
और सभी के ख्वाब अलग,
तुम क्या जानो रात–रात भर
जगना और टहलना क्या?
विनय अक्षत
'बुलन्द प्रभा जुलाई–दिस. 2018'

(9)
अपना घर संसार छोड़कर
कलह–क्लेश से मुक्ति पा लिया
ऐसी भूख लगी पगले को
सहसा उसने जहर खा लिया
हरीलाल 'मिलन'
'राष्ट्रगूँज 2015'

(10)
नये ह्युग की यही सच्चाईयाँ है।
लहू सस्ता है महंगी रोटियाँ है।
खयाल खन्ना
'नई लेखनी जुलाई–दिस. 2015'

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

शुभकामना संदेश

नगर फिरोजाबाद को सेठ कन्हैया लाल गोयंका जी द्वारा प्रदत्त शिक्षा के वृक्ष ने विकसित होते हुए एक विशाल वृक्ष का स्वरूप धारण कर लिया है। वर्ष 1919 में जब जलियाँ वाला बाग हत्याकाण्ड की विभीषिका ने सम्पूर्ण भारत वर्ष को झकझोर कर रख दिया था। तब सेठ जी ने स्वजनों के भविष्य को शिक्षित व स्वावलम्बी बनाने हेतु प्राथमिक स्तर तक के विद्यालय की स्थापना की जो कालांतर में सुसमृद्ध होता हुआ। आज जनपद भर में महाविद्यालय के रूप प्रतिष्ठित है। वर्ष 2019 में इस संस्थान की स्थापना को 100 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। अतः सेठ जी के पुत्र स्व. श्री माधवप्रसाद गोयंका जी के पुत्र एवं वर्तमान में संस्थान के सचिव शशि प्रसाद गोयंका जी की उपस्थिति में 22–23 फरवरी 2020 को शताब्दी समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें मुख्यातिथि के रूप में केन्द्रीय कैबिनेट मंत्री मा. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री मा. दिनेश शर्मा जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन 'कनक काव्य कुसुम' के मुख्य सम्पादक डा. अजिर बिहारी चौबे जी ने किया।

नगर के निवासियों की कई पीढ़ियों को शिक्षित करते हुए अपने सौ सफल वर्ष पूर्ण करने वाले श्री रामचन्द्र कन्हैयालाल गोयन्का (एस. आर.के. महाविद्यालय) को प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ ट्रस्ट की ओर से अनंत कोटि शुभकामनायें ......

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

जमा–खर्च ब्यौरा

प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट, फिरो. ®

21 फरवरी 2018 से 31 दिसम्बर तक की आय-व्यय का विवरण

आय

1- ट्रस्ट की संचित निधि

5000₹ अभिषेक मित्तल 'शान्ति'

2- आजीवन सदस्य शुल्क

2100₹ प्रवीन कुमार पाण्डेय 'प्रज्ञांशु'
2100₹ गौरांगी मिश्रा
2100₹ शिव शंकर बालाजी
2100₹ सचिन राठौर 'प्रमोर'
2100₹ डॉ अंजू गोयल
2100₹ शैलेन्द्र शर्मा (O.B.C.)

3- संरक्षक शुल्क

6000₹ अभिषेक मित्तल 'शान्ति'
11000₹ कृष्ण कुमार 'कनक'
11000₹ डॉ. राम सनेही लाल शर्मा
11000₹ मदन मोहन मित्तल 'रामपुर'

4- प्रथम प्रज्ञा सम्मान समारोह हेतु दान

1,50,000₹ गोविन्द प्लाजा
13,200₹ शशांक भटनागर
11,000₹ दीपक जैन 'अधेश'
5,100₹ भावना अग्रवाल
5,100₹ डॉ अपूर्व चतुर्वेदी
2500₹ श्रीपति लाल राठौर
2500₹ रतन कुमार गुप्ता
2500₹ पूरन चन्द्र गुप्ता
2500₹ हर्षवर्धन 'सुधांशु'
2200₹ राजू मित्तल
1100₹ डा मामावर
400₹ मुकुल पाराशर
400₹ नरेन्द्र सक्सेना
400₹ राम मित्तल
400₹ डॉ. उमा शंकर गुप्ता

5- पत्रिका हेतु प्राप्त सहयोग

25,000₹ सौरभ अग्रवाल, अंकुर गर्ग, अंकुर मित्तल
5100₹ हेमेन्द्र अग्रवाल 'अल्ल'
2000₹ सुरेश चन्द्र, गोविन्द मित्तल, देव प्र पाण्डेय, अडवानी

6- काव्य गोष्ठियों हेतु सहयोग

3,300₹ अभिषेक मित्तल 'शान्ति'
1,120₹ कृष्ण कुमार 'कनक'

7- बैंक से प्राप्त ब्याज = 277₹

2,92,697₹ कुल आय

व्यय

1- ट्रस्ट पंजीकरण व्यय = 3074₹
2- बैंक चार्ज = 17.70₹
3- ट्रस्ट व्यवस्थापन व्यय = 6763₹
4- प्रथम प्रज्ञा सम्मान समारोह व्यय = 255200₹
5- युवा काव्य गोष्ठी = 440₹
6- मासिक काव्य गोष्ठी = 17820₹
7- निराला जयन्ती = 80₹
8- महा मूर्ख सम्मेलन = 3637₹
9- परशुराम जयन्ती = 1000₹
10- अटल जी श्रद्धांजली = 100₹
11- श्रेष्ठ हिन्दी विद्यार्थी सम्मान समारोह = 1000₹

बैंक में उपस्थित राशि = 3439.30₹
नकदी के रूप में राशि = 120₹

कुल राशि = 2,92,697₹

कनक

कृष्ण कुमार 'कनक'
प्रबन्धक/सचिव
"कनक-निकुंज" गाँव/पोस्ट गुंडाऊ
द्वार मुरली नगर, थाना लाइन पार
फिरोजाबाद-283203 (उ.प्र.)
मो. 7017646795
Email- Kanakkavya@gmail.Com

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

जमा-खर्च ब्यौरा

Pragẏa Hindi Sevarth Sansthan Trust

Kanak Kunj, Villege Gudau Thar, Murli Nagar, PS Line Par, Firozabad

Receipts and Payment Account from 21.02.2018 to 31.12.2019

Particulars	Amount	Particulars	Amount
Opening Balance	0.00	Trust Registration Expenses	3074.00
Received as Corpous Fund	5000.00	Bank Charges	17.70
Received from Life-time Members	12600.00	Trust Administrative Exps	6769.00
Contribution for Pragya Award Function	199300.00	Pragya Samman Samaroh	255200.00
Contribution for Kavya Gosti	4420.00	Yuva Kauya Gosti Exps	440.00
Contribution received from Patrons	39000.00	Kauya Gosti Expenses	17820.00
Contribution for Publication of Magzine	32100.00	Programme Exps	
Bank Interest	277.00	Nirala Jayanti Exps	80.00
		Maha Murkh Sammelan	3637.00
		Parashuram Jayanti	1000.00
		Atal Ji Kauyanjali	100.00
		Sahityakar Samman Samnoroh	1000.00
		Closing Balance of Bank	3439.30
		Closing Balance of Cash	120.00
	292697.00		292697.00

for Pawan Kumar & Co.
Chartered Accountants

(CA Pawan Kumar Agrawal)
FCA 070922
Dated:
Place: Firozabad

for Pragya Hindi Sewarth Trust

Patron/President President Secretary/Manager Treasurer

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner